अंक-13, जुलाई-अक्टूबर, वर्ष-4

ISSN : 2436-5017

जापान से निकलने वाली हिंदी साहित्य की प्रथम त्रैमासिक पत्रिका

हिंदी की गूँज

स्वतंत्रता दिवस विशेषांक

जापान की पहली साहित्यिक पत्रिका

स्वतंत्रता दिवस विशेषांक

हिंदी की गूंज पत्रिका

टोक्यो जापान

संरक्षक एवं मुख्य संपादक
रमा शर्मा, जापान

संपादक मंडल

संस्थापक
डॉ. रमा शर्मा, टोक्यो (जापान)

संरक्षक
डॉ. रमा शर्मा, टोक्यो (जापान)
इंद्रजीत शर्मा, न्यूयार्क (अमेरिका)

संपादक
विनोद पांडेय, ग़ाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)

सह–संपादक
डॉ. रामनिवास 'मानव', नारनौल (हरियाणा)

वरिष्ठ परामर्श–दाता
डॉ. हरीश नवल
(विश्व प्रसिद्ध व्यंग्यकार) (दिल्ली)
डॉ स्नेह सुधा नवल
(वरिष्ठ कवियित्री एवं चित्रकार) (दिल्ली)

विदेशी प्रतिनिधि
शामलाल पुरी, लंदन (ब्रिटेन)
श्वेतासिंह 'उमा', मॉस्को (रूस)
मोनी बिजय, काठमांडू (नेपाल)
शशि महाजन (नाइजीरिया)
सुरेश पांडेय, (स्वीडन)
श्वेता सिन्हा, आयोवा (अमेरिका)
सुनीता चावला, विएना (ऑस्ट्रिया)

भारतीय प्रतिनिधि
डॉ. विदुषी शर्मा (डबल वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर) (दिल्ली)
पूनम माटिया, (दिल्ली)
विजयापंत तुली (उत्तराखंड)
मनीषा जोशी, नोएडा (उत्तर प्रदेश)
प्रिया वाच्छानी, उल्हासनगर (महाराष्ट्र)
प्रशांत अवस्थी 'प्रखर', कानपुर (उत्तर प्रदेश)

स्वास्थ्य–प्रतिनिधि
सुनीता चाँदला, (अमेरिका)

विशेष सहयोगी
राकेश छोकर, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
डॉ. सुनीता चौहान, (उत्तर प्रदेश)

सैन्य परिशिष्ट प्रतिनिधि
तृप्ति मिश्रा, महू (मध्य प्रदेश)

ज्योतिषाचार्य
डॉ. विनय भारद्वाज, बोधगया विश्वविद्यालय (बिहार)

रक्षा–कवच प्रतिनिधि
जयप्रकाश मिश्रा, IPS, पटना (बिहार)

प्रकाशक
वान्या पब्लिकेशंस, वर्ल्ड बुक पब्लिकेशंस
रुद्र ग्राफिक्स

मुख्य कार्यालय
टोक्यो जापान
व्हटसअप नंबर
जापान : 00818061658299
भारत : 9289641577

Twitter @hindikigoonj
Instagram @hindikeegoonj
YouTube @Hindi ki Goonj, Tokyo Japan

Facebook Page : @ हिंदी की गूंज, टोक्यो जापान

पत्रिका की सदस्यता लेने, रचना भेजने हेतु संपर्क करें 9289641577

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक, अव्यवसायिक !
पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तर दायित्व लेखक पर होगा। पत्रिका ISBN (जापान) नंबर के साथ जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होगी।

अनुक्रम

संपादकीय– रमा शर्मा, जापान –2
जापान की बात– रमा शर्मा जापान –3
दोहे / हाइकु
देश भक्ति के दोहे / सुबोध श्रीवास्तव – 12
कैसा जीवन राग/ डॉ रामनिवास 'मानव'–12
युद्ध / सुश्री मंजु श्रीवास्तव मन, यू के –15
जीवन के रंग / चक्रधर शुक्ल –15
कविता / गीत / ग़ज़ल
मन की बात, विनोद पांडे–4
ऐलान / अतीश बुन्नू –17
ज़िंदगी / आशीष मिश्रा –17
आज भी/ डॉ शिप्रा मिश्रा–21
बेबसी/ विनिता रानी विन्नी–23
तुमको नमन माँ भारती/ डॉ आरती लोकेश, दुबई–23
करोना वाला रक्षाबंधन/उषा गुप्ता–35
शब्दकोश / डॉ दिव्या माथुर , यू के –44
वंदेमातरम् / नीलम वर्मा –44
मेरा देश / सुनीता अग्रवाल –45
टीका नज़र का / पूनम माटिया –45
मेरा देश भारत / प्रशांत अवस्थी प्रखर –46
अहसास / डॉ विजय पंडित –46
मरने का ग़म नहीं / कर्नल डॉ गिरिजेश सक्सेना –47
स्वाधीनता का पावन पर्व / अरुण भगत – 47
कलयुग का छलयुग / माधुरी भट्ट –48
बनकर / अनुराधा चंदर, यू एस –48
पंद्रह अगस्त / रश्मि सिन्हा –49
पंद्रह अगस्त / सीमा वर्णिका –49
आज़ादी / ज्योति जुल्का –50
आज़ादी / डॉ रामचंद्र स्वामी –50
आज़ादी / कविता गुप्ता –51
चंदन सी लगती है / सरिता बाजपेयी, साक्षी –51
मेरा देश / मनीषा जोशी, मनी –52
हिंदी का हक़ / डॉ अ कीर्ति वर्धन –52
अप्रवासी / डॉ अंबे कुमारी –54
सर्वपल्ली राधाकृष्णन/डॉ पंकजवासिनी –54
भारत माँ /मनीष श्रीवास्तव, अमेरिका–54
भारत देश हमारा / डॉ रामवृक्ष सिंह, भारत –55
यादों के सावन / सुरेश पांडेय, स्वीडन –55
संस्मरण
कारगिल महाविजय दिवस की वीर गाथा / 16
कहानी / लघुकथा
प्रलोभन की मार /डॉ वीणा विज उदित –5
सफ़र / श्रीमती किश्वर अंजुम –7
आरक्षण / महेश शर्मा धार –10
साथ तुम्हारा / वंदना पुरोहित – 13
स्वतंत्रता दिवस / सुमन तनेजा –36
ऋषि / यति शर्मा –37
वे चार दिन / सरिता गुप्ता–38
पसलियाँ / इंदुकांत आंगरिस –38
सीता के बुंदे / शशि महाजन, नाइजीरिया –39
हिफ़ाज़त / जया आर्या –40
मैं और मेरी आत्मा / विभा राज वैभवी –40
समय रहते चेत जाइए/ कंचन सागर–53
उपन्यास
तलाश अस्तित्व की भाग –2 / अजय शर्मा –43
शोध आलेख/ लेख
हमारा स्वराज्य / डॉ हरीश नवल / 26
आदिवासी वर्ग / कृष्णपाल राणा / 18
स्वतंत्रता दिवस / अंशु जैन –25
स्वतंत्रता दिवस / सरोज आहूजा –25
हमारा स्वराज्य/ डॉ हरीश नवल –26
विचार संप्रेषण की आज़ादी / मानस बिनानी –27
ईश्वरीय योजनाएँ / पवन शर्मा – 28
मॉरिश्स के महापुरुष / डॉ अनिल कुमार – 31
उत्तिष्ठ भारत / डॉ अजय शुक्ल –41
नीदरलैंड और भारतीय संस्कृति / डॉ ऋतु शर्मा, नीदरलैंड – 58
भारतीय संस्कृति की पहचान है हिंदी/ आकांक्षा यादव– 59
यात्रा वृतांत
कुल्लू मनाली / दीप धनंजय – 56
समीक्षा / परिचय
डॉ सी एल सोनकर – 20
आलेख
वेदों की उपयोगिता / डॉ गायत्री पांडेय –22
तेरे आँसू कीमती हैं माते / अभिषेक चंदन –24
स्वास्थ्य लेख
जादू की छड़ी / सुनीता चाँदला, यू एस ऐ–57
बच्चों की कलम से
चिड़िया/ जाह्नवी श्रीवास्तव–14
बंदर/आदित्य राज सिंह–14
साहित्य संबंधी –59
चित्र प्रतियोगिता
पृष्ठ–60

रमा शर्मा

मुख्य संपादक एवं संरक्षक

टोक्यो, जापान

Email : hindikeegoonj@gmail.com

Ph. No. : 00818061658299

हिंदी की गूंज का ऑफिस अब ऑस्ट्रिया में भी। पता निम्नलिखित है

Laaerberg Straße 32/2/71
1100 vienna, Austria
फ़ोन नंबर + $43 650 6741006

हिंदी की गूंज का ऑफिस अब लंदन में भी। पता निम्नलिखित है

16 Upper Woburn Place,
London WC1H 0AF
Phone : +44 7432 220184

हिंदी की गूंज का ऑफिस अब मॉस्को, रशिया में भी। पता निम्नलिखित है

Address office:-
Proezd zavoda , Serp 1 Molot
10 BC. Integral, Moscow
Russia

हिंदी की गूंज का स्वीडन ऑफिस। पता निम्नलिखित है

Suresh Pandey
Bäckgenvägen 1 1tr
14341 Vårby Sweden
Mob 073 1013196

संपादकीय

जहां चाह होती है वहाँ राह अवश्य निकलती है, बस मन में चाहत कमजोर नहीं पड़नी चाहिए। यही मन में रख कर आगे बढ़ रही हूँ, आप सब का साथ और स्नेह मिल रहा है जो चाहत के धागे को और मज़बूत किये जा रहा है। हिंदी की गूंज पत्रिका सफलता के नये सोपान तक पहुँच रही है दिनों दिन। सदस्यों की संख्या और ईमेल से आप सब की चाहत और प्रेम का पता चलता है। मैं आप सब की दिल से आभारी हूँ।

बच्चों ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना शुरू कर दिया है जो कि सफलता का एक नया सोपान है। बहुत से बच्चों ने देश विदेश से अपनी ड्राइंग भेजीं हैं। कवर पृष्ठ पर धानी गुप्ता की पेंटिंग है जो सिंगापुर में ही जन्मी भारतीय बच्ची है। वार्षिक समारोह में उसे 500/– का ईनाम और सम्मान पत्र दिया जायेगा। बाकि बच्चों की ड्राइंग जो चयनित हुई हैं वो पत्रिका में उनके नाम, कक्षा और स्कूल के नाम के साथ उनकी अपनी तस्वीर भी पत्रिका में आ रही है इस बार। क्योंकि बच्चे बहुत उत्साहित है और बहुत सी ड्राइंग, पेंटिंगस आई हैं पत्रिका के लिये।

इस बार जापान की एक बच्ची ने अपनी स्वरचित कविता भेजी है, दो और बच्चों ने भी कवितायें भेजी हैं और मानस बिनानी ने एक लेख भेजा है। बच्चों को इस प्रयास के लिये सम्मानित किया जायेगा।

यूट्यूब पर भी सब बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं, उन सभी को जो यूट्यूब पर लगातार जुड़े हुए हैं स्वतंत्रता दिवस पर सम्मान पत्र दिया गया है हिंदी की गूंज चैनल की ओर से।

पत्रिका में अपनी पुस्तक के विज्ञापन भी आ रहें हैं। इस बार जिन्हें जगह मिल सकी उनमें श्री जयप्रकाश मिश्रा जी की पुस्तक जज़्बात (ग़ज़ल संग्रह) है (जो हिंदी की गूंज पत्रिका के रक्षक प्रतिनिधि भी हैं), अज़मत कैश की पुस्तक अधूरी (कहानी संग्रह), अज़मत हिंदी की गूंज पत्रिका के वार्षिक सदस्य भी हैं । रश्मि प्रभा जी पुस्तक अप्रत्याशित सोच (कविता संग्रह) और विदूषी शर्मा और मेरे द्वारा संपादित नरेंद्र मोदी, युग प्रवर्तक (जिसमें 21 भाषाओं का प्रयोग है जो कि एक नया कार्य, एक नई सोच है विदूषी जी की) पुस्तक को वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल किया गया है। सुरेश पांडेय जी जो वर्षों से स्वीडन में रहते हैं, उनकी दो पुस्तकों की भी तस्वीरें हैं। इन पुस्तकों में से जो पुस्तक भी आपको चाहिए, आप हिंदी की गूंज से संपर्क कर सकते हैं।

आप सब को हिंदी की गूंज पत्रिका कैसी लग रही है और इसके नये परिवर्तन कैसे लग रहे हैं, अपने विचारों से अवश्य अवगत करायें।

रमा शर्मा, जापान
संस्थापक और संरक्षक
हिंदी की गूंज अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, टोक्यो जापान
Email : hindikeegoonj@gmail.com
Phone : 00818061658299

सदस्यता के इच्छुक कृपया संपर्क निम्नलिखित नंबर पर संपर्क करें
Phone : 9289641577

जापान की बात

जापान में चाहे भारतीय ज़्यादा गिनती में नहीं है परन्तु फिर भी जितने हैं वो कुछ न कुछ प्रयास लगे रहते हैं। श्रीमती कनिका अग्रवाल जी जो VCC की प्रधान हैं, वो लगातार इसी प्रयास में व्यस्त रहती है। रक्षाबंधन पर्व पर भी उन्होंने एक बहुत ही सुंदर कार्यक्रम आयोजित किया भारतीय दूतावास में। जहां बच्चों ने और सब महिलाओं ने भारतीय दूत Sibi George को राखी बाँधी और उन्होंने बच्चों को तोहफ़े दिये। सब ने मिल कर गीत गाये और परदेस में देस का माहौल बना दिया

♦♦ मन की बात ♦♦

विनोद पाण्डेय
गाजियाबाद

कविता

नाग पंचमी के अवसर पर
सुबह सुबह मैंने अपने घर पर
एक कटोरा दूध रख दिया
मगर किसी नाग ने उसको नहीं पिया

शाम को मैंने दूध में चीनी मिलाई
फिर चाय की पत्ती डाल कर बेहतरीन चाय बनाई
और खुद पीने के लिए जैसे ही कप निकाला
दरवाजे पर आ गया एक नाग काला

मैं बहुत घबराया,थोड़ा सकपकाया
परंतु नाग के क़रीब जाकर फ़रमाया
भाईसाहब खूब इंतज़ार करवाए
क्या हुआ ? सुबह क्यों नहीं आए ?

अब तो दूध भी खतम है
आपके न पीने का बहुत ग़म है
लेकिन अब कुछ नहीं कर पाऊँगा
रात को दूध माँगने किसके घर जाऊँगा

नाग मुस्कुराया फ़न को हिलाया
सरक–सरक कर मेरे पास आया
बोला टेन्शन मत लो मेरे भाई
ट्रैफ़िक में फँस गया था सवेरे भाई

हम तो चाय ही पीने आए हैं,एक कप इधर लाओ
नमकीन –वमकीन हो तो वो भी मँगवाओ
अपनी पसंद को कहीं ओर मोड़ दिया है
आजकल हमने दूध पीना छोड़ दिया है

हज़ारों साल से हमें बस दूध पिला रहे हो
खुद आइटम पर आइटम भिड़ा रहे हो
जो जानते हैं वो हमें चाय –काफ़ी पिलाते हैं
कुछ लोग शाम को दारू भी बिल में पहुँचाते हैं

मैंने कहा वाह,नागों के भी ग़ज़ब जज़्बात है
क्या यह आदमी बनने की शुरुआत है ?
नाग ने कहा ,अरे नहीं ऐसा कोई नहीं सीन है
आजकल तो आदमी ही हमारी आदतों का शौक़ीन है

हम तो बस सदी के चकाचौंध में खो रहे हैं
हमारे थोड़े शौक़ बस आदमी जैसे हो रहे हैं
लेकिन अब भी अपना ज़हर किसी से नहीं बाँटते हैं
और आदमी की तरह आदमी को ही नहीं काटते हैं

♦♦ कहानी ♦♦

प्रलोभन की मार

डॉ. वीणा विज 'उदित'

"नौसेना के पनडुब्बी कार्यक्रम की सूचनाएं लीक, दो पूर्व अफसरों समेत पांच गिरफ्तार!"

दैनिक अखबार में यह खबर पढ़ते ही अनुपम के पापा जोर–जोर से देशद्रोहियों के विरुद्ध अपने उद्‌गारआक्रोश में व्यक्त करने लगे , जिन्हें सुनकर आभा और अनुपम दोनों पापा के करीब आकर खड़े होगए। वर्तमान परिपेक्ष्य में पड़ोसी देश की सक्रियता स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी। लेकिन जब सेना केकमांडर या सैनिक इस क्रिया कलाप का हिस्सा बनते हैं तो आम जनता का विश्वास डगमगा जाता है।अनुपम के पापा आम जनता के एक अंश ही तो हैं। वे अखबारों मैं देश भक्तों का कॉलम अवश्य पढ़तेहैं। बच्चों को ज्ञात है कि पापा तन मन से सच्चे देश सेवक और देशभक्त हैं। अनुपम इस वास्तविकताको भली–भांति जानता है क्योंकि स्कूल की पढ़ाई के दिनों में उसके पापा अनुशासन का पाठ सर्वदापढ़ाते रहे और उसके किसी भी अमान्य आचरण पर रोका टोकी करते रहते थे। पापा हमेशा कहते रहते हैं,

"जैसा बीज बोएंगे वैसी ही फसल होगी। वो बात और है कि कभी–कभार कीट–आगमन या मौसम कीमार से फसल नष्ट हो जाती है! कभी–कभी नैसर्गिक शक्तियां अपना रूप अनिष्ट करके भी जता देतीहैं। वैसे ही संस्कृति बचाने के लिए संस्कारों का रोपण किया जाना चाहिए। यदि पत्थर पर बीज गिरजाए तो बीज को पनपने से वह रोक देता है। उसी प्रकार मनुष्य का मन इतना चंचल होता है कि भलेआचरण की गतिविधियां उसे रुकावट लगती हैं।"

अनुपम यह सब जानते–विचारते हुए भी कई बार भटक जाता है। उसे घर कैदखाना लगता है औरपापा उसके जेलर। मैट्रिक पास करके उसने डिफेंस की परीक्षाओं का पता किया और तैयारी करके परीक्षाएं समय–समय पर देता रहा। आखिर उसका चुनाव हो गया। पापा बेहद प्रसन्न थे क्योंकि भारतीय फौज के लिए उनके मन में बहुत आदर था वह उसकी मां से बोले,

"तुम्हारा बेटा फ़ौज में भर्ती हो गया है। अरे भाई फ्रंट पर लड़ेगा नहीं लेकिन भीतर से देश की सेवा तोकरेगा फिर आगे चलकर ना जाने कौन सा पद बाद में मिल जाए। हम तो आज गंगा नहा गए हैं। लाओ हलवा बनाओ और हमारा मुंह मीठा कराओ।" मां भी गर्व से मुस्कुरा दीं।

इधर अनुपम भी अपने पर नाज़ कर रहा था। अपनी प्लेसमेंट पर वह प्रसन्न था और सुनहरे ख्वाब बुनने लग गया था। कैंट में उसकी पोस्टिंग हो गई थी। स्टाफ के साथ में रहने पर उसे अपना काम औरकमांडिंग ऑफिसर के बंगले पर अर्दली की ड्यूटी मिल गई थी। बंगले पर साहब और मेम साहब काघरेलू हाथ बंटाने से वह उनके काफी करीब हो गया था। मेम साहब तो सुबह हल्का–फुल्का रसोई काकाम निपटा कर सारा घर उसके भरोसे छोड़कर अपनी ताश पार्टी, क्लब मीटिंग, लेडीस वेलफेयरकमेटी आदि की मीटिंग पर चली जाती थीं। अनुपम की मौज लग गई थी वह अब ऐश करने लग गयाथा। हां मेम साहब और साहब के वापिस आने पर वह साहब की यूनिफार्म तैयार करता था। उनके बैचेस, बक्कल, बटन वगैरह ब्रासो से चमकाता और उनके बूट पॉलिश करता था। आर्मी कैंटीन से घरका सामान भी वही लाता और घर में सब संभालता था।

एक दिन दोपहर को लैंडलाइन फोन की घंटी दो बार बजी, पर कोई नहीं बोला। फिर थोड़ी देर बाददो बार घंटी बजी फिर भी कोई नहीं बोला। उसके बाद शांत हो गई। अनुपम हैरान और परेशान रहाऔर धीरे धीरे इस बात को भूल गया। फिर कुछ दिन बीत गए अचानक एक दिन आठ–दस घंटियांबजी तो उसने फोन उठाया। उधर से कोई मधुर सा नारी–स्वर बोला,

"तुम सेल फोन क्यों नहीं रखते हो ? मैं तुम्हारे लिए सेलफोन भेज रही हूं ।"और फोन कट गया।अनुपम को बुरा लगा। किसी को क्या मतलब है मैं फोन रखूं या ना रखूं। फालतू को फोन करके बोलतेहैं। लेकिन उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब थोड़ी ही देर में दरवाजे पर उसके नाम का एक पैकेटपड़ा हुआ था। उसने खोला तो उसमें एम आई का फोन था। पैकेट में एक स्लिप पर नंबर भी लिखाहुआ था तभी सेल फोन की घंटी बजी और एक नारी कंठ ने कहा,

"मैं तुम्हारी दोस्त हूं ! तुम पर दिल आ गया है। क्या करूं तुमसे बात करने को दिल चाहता है। तुम सेमिलूंगी लेकिन अभी नहीं, सब्र रखना।"

तेइस वर्ष की उम्र के जवान अनुपम का तो एक–एक अंग खुशी के मारे फड़कने लगा। इस उम्र मेंजवां विचारों और सपनों का संसार उमंगों के इन्द्रधनुषी रंगों में सज गया था। उसने फोन छुपा कर रख लिया। उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी कि अपनी खुशकिस्मती किसी से भी साझा करे। अगले दिन फिर उसी समय फोन आया जब मेमसाहब घर से बाहर निकलीं और यह सिलसिला आगे चालू होगया। उस औरत ने अनुपम का अकाउंट खुलवा कर उसमें कुछ हजार रुपए डलवा दिए। अब तोअनुपम अपने लिए ब्रांडेड कपड़े लेने लग गया। घर जाते हुए इस बार छुट्टियों में वह आभा के लिए भीब्रांडेड कपड़े ले गया था।

वापसी में उसे होटल में ठहराया गया और उसके लिए एक लड़की पेश करी गई। उसने पहली बारजवानी का आनंद लिया, जिससे वह मदहोश हो गया था। इसी मदहोशी में उस औरत ने उससे कहाकि वह उसे हवाले से लाखों रुपया भेजेगी किंतु बदले में वह उसे कैंट की अहम जानकारियां देता रहे।जो उसके सिवाय किसी को पता ना चलें। कैंट के प्रवेश द्वार से लेकर प्रस्थान द्वार तक की हरगतिविधि, सैनिक बल, हथियारों की किस्में और उनकी तस्वीरें भी, कौन से अफसर नए तैनात हुए, कौन से कहां गए और किस पोस्टिंग पर गए? इस तरह की विशेष जानकारी देता रहे।

अनुपम पैसे के प्रलोभन में ऐसा फंसा कि उसे अपना देशद्रोह का आचरण समझ नहीं आ रहा था। वह तो जवान लड़की और पैसे के नशे में सब जानकारियां उस औरत को बताए जा रहा था– जिसका नाम था परवीन खान। उसने उसे बता दिया कि वह एक विदेशी गुप्तचर संस्था की महिलाअधिकारी है, तभी वह उसे हवाला से लाखों की रकम भेज रही थी। अनुपम ने उससे मिलना चाहाक्योंकि वह अब समझ चुका था कि वह फंस गया है। इस पर परवीन खान ने कहा,

"इंशा अल्लाह वह उसे मिलेगी अवश्य लेकिन यहां नहीं, वह उसे किसी दूसरे देश में बुलाएगी। वहीं मेल होगा।" यह सुनकर वह रोमांचित हो उठा कि वह दूसरे देश की सैर भी करेगा। मैडम परवीनखान ने उससे कैंट का ब्लूप्रिंट मंगवाया। अनुपम के बैरेक से उसका एक साथी विपुल कभी–कभी उसे अजीब नजरों से देखता था शायद उसे उस पर शक हो गया था। आज भी उसे वह बेहद खुश देख करपूछ उठा कि क्या बात है वह बहुत खुश क्यों है? तो अनुपम ने कह दिया कि घर जा रहा है छुट्टी परइसलिए खुश हैं। ब्लू प्रिंट की तैयारी की बात वह छिपा गया और वह छुट्टी पर चला गया, जहां शहर मेंउसने होटल में रुकना था और वहां उसे जवान लड़की भी मिल रही थी। खुशी के मारे वह सातवेंआसमान पर उड़ रहा था। उस की चाल–ढाल में पैसा बोलता था। उसके पापा ने घर पहुंचने पर इसबावत पूछा भी लेकिन अनुपम ने बातें बना लीं। झूठ पर झूठ बोल कर वह बच निकलता था।

वापस आकर उसने कैंट का ब्लूप्रिंट जो तैयार किया था चुपके से वह निकाला, तो उसके साथीविपुल (जो पहले से चौकन्ना था), की उस पर नजर पड़ गई और उसने ड्यूटी ऑफिसर को चुपके सेबुला भेजा! वह उन्हें पहले भी इसके विषय में सचेत कर चुका था। अनुपम आर्मी की जासूसी करने केअपराध में आखीर रंगे हाथों पकड़ लिया गया। उसके पास से कैंट का ब्लूप्रिंट निकला। बुरे कर्मों कानतीजा यह तो होना ही था। सीधा–साधा सैनिक पियक्कड़ भी बन गया था पैसे के प्रलोभन में फंसकर।

शराब और शबाब की बारिश हो रही थी उस पर विदेशी एजेंटों के माध्यम से! अब कोर्ट मार्शलतो सेना के जवान पर होना ही था। वह देश की सुरक्षा का सौदा करके उसे बेच रहा था। रोने औरसिर धुनने से अब कुछ हासिल नहीं था। हर बात से अंजान कमांडिंग ऑफिसर और मेम साब भी शकके घेरे में फंस गए थे। अनुपम के परिवार ने शर्म के मारे अपने को घर में बंद कर लिया था और पापा नेसमाज की जलालत से बचने के लिए गले में फंदा लगाकर अपनी जान दे दी थी। उसने अपनी बहनका भविष्य भी मिट्टी में रौंद दिया था। काश ! वह अंधकारमय भविष्य की ऐवज में उसके लिए ब्रांडेड कपड़े ना खरीदता और देशभक्त का बेटा अपने देश से गद्दारी कर के देशद्रोही न कहलाता।

जेल के सीखचों में उसे एक खूनी के साथ रखा गया जिसने एक सेठ का खून किया था जो इतना जालिम था कि गरीबों को सताता था। जब इसने उसे पूछने पर बताया कि वह केंट की जानकारी दुश्मन देश की गुप्त एजेंसियों को दे रहा था। तो यह सुनकर उस खूनी का खून खौल उठा और उसने कहा,

"भई, तुम तो बहुत ऊंची कोटि के खूनी हो। मैंने तो मजबूरों को सताने वाले एक जालिम का खूनकिया था लेकिन जिस देश के सैनिक बनकर तुम्हें उसका मान बढ़ाना चाहिए था तुमने तो उस देश काही खून कर दिया।"

अपने को "खूनी "संज्ञा से बुलाए जाने और धिक्कारे जाने पर वह आत्मग्लानि से विफर करअपनी छाती में मुक्के मारने और सिर के बाल नोचने लगा। उसके समक्ष अपने देश भक्त पापा केव्याख्यान घूमने लगे। आंखों से अब पश्चाताप की गंगा जमुना बह रही थीं, जब सब कुछ लुट चुका था।

♦♦ कहानी ♦♦

सफ़र

श्रीमती किश्वर अंजुम
दुर्ग छत्तीसगढ़, इंडिया

इंग्लैंड के ब्रेडफील्ड शहर में अपने बेटे के मकान के एक कमरे में 95 बरस के असीम आरामदायक बिस्तर पर अपनी ज़िंदगी के सफ़र के पूरे होने के इंतज़ार में दिन गुज़ार रहे हैं। जुलाई अगस्त में उनके शहर का मौसम ठंडा और बूंदों भरा होता ही था। यूं तो सर्दी के दिनों से कम ठंड रहती थी पर बूढ़ी हड्डियों को 19,20 डिग्री की ठंड भी सहन करना मुश्किल था। कमरे में अभी भी फायरप्लेस में लकड़ियों की आग ही उन्हें राहत पहुंचाती थी। इलेक्ट्रिक हीटर की गर्मी, उन्हें पसंद नहीं आती थी।

हिंदुस्तान में बिताए आख़िरी महीनों की यादें, असीम के दिल ओ दिमाग़ में हलचल मचा रही थीं।

सेंट्रल प्रोविएंस के मद्धम दर्जे के एक शहर में एक पुराना मोहल्ला और उसमें पनपती एक कहानी, पैकर और असीम की।

रायपुर शहर का एक पुराना सा इलाका जिसके रहवासी ज़्यादातर नौकरीपेशा या ठीक ठाक कमाई करने वाले व्यापारी थे। अंग्रेज़ों का राज था मुल्क पर। असीम के बाबा हकीम अली, बूढ़ापारा रायपुर की प्राथमिक पाठशाला में शिक्षक थे। तनख्वाह बस इतनी ही थी कि किसी तरह दाल भात चल जाता था। परिवार में मां बाप के अलावा दो बुआएं और चार बच्चे भी थे। कुल मिलाकर दस लोगों का परिवार और कमाने वाला सिर्फ़ एक।

हकीम अली की बीवी ने मिस्सी, चूने, कत्थे का धंधा शुरू किया। मिस्सी, एक तरह की लकड़ी होती थी जिसे चबाने पर दांत और होंठों का रंग लाल गुलाबी हो जाता था। पुराने ज़माने की महिलाएं इस लकड़ी को बतौर सौंदर्य प्रसाधन इस्तेमाल करती थीं।

हर घर में पानदान होता था। हकीम अली की बीवी मोहल्ले में चूना भिगो कर और कत्था दूध में उबालकर तैयार करतीं और मिस्सी, कत्था, चूना बेच कर घर खर्चे के लिए थोड़ी सी रकम जुटा लेती।

मोहल्ले में ज़्यादातर लोग सरकारी नौकरियों में थे। कोई तहसीलदार, कोई रेवेन्यू इंस्पेक्टर, कोई सिपाही, कोई चुंगी इंस्पेक्टर वगैरा वगैरा। ज्यादातर वाशिंदे अपनी आल औलाद को ऐसी ही नौकरियों में भेजना पसंद करते थे जिनमें चार पैसे ऊपर के मिल जाएं, तनख्वाह के अलावा।

मास्टरी में वही जाता था जो या तो शिद्दत से सबर पसंद हो या जिसे और कहीं नौकरी न मिले। क्योंकि मास्टरी का पेशा, एक तो रत्ती भर भी ऊपर की आमदनी नहीं, दूजे सोसाइटी में वो रुतबा और रुआब नहीं जो मलाईदार नौकरी वालों का होता था। सूखी साखी इज़्ज़त जो महीने के आख़िरी दिनों में पंसारी के यहां उधार की मोहताज रहे, सब्ज़ी के नाम पर घर के आंगन में लगे करौंदे की चटनी रहे, और आख़िरी कुछ दिनों में चावल का माड़ भी पेट भर न मिले, किसे अच्छी लगेगी।

ऐसे में मास्टर और उनकी बीवी, सारे मोहल्ले में बेचारों की नज़र से देखे जाते। हां, मिस्सी चूने के धंधे ने पूरे महीने खाने का इंतेज़ाम करने में तो मदद ज़रूर की पर वो रुतबा और रुआब जो दूसरे घरों को हासिल था, उनको नहीं मिला।

दावतों में अभी भी उनको ख़ास जगह नहीं बिठाया जाता जहां बाक़ी के ऊपरी कमाई वाले ओहदेदार बैठते थे। उनके बच्चे अभी भी दो जोड़ी कपड़ों में साल गुज़ारते और उनके अम्मा अब्बा अभी भी किस्मत को कोसते कि हाय! हमारा बेटा किसी लायक़ नहीं निकला।

ऐसे माहौल में बड़े होते असीम को असिस्टेंट कमिश्नर की इकलौती नूर ए नज़र बतूल पसंद तो आ गई थी, पर ये बेल मुंडेर चढ़ती नज़र नहीं आ रही थी।

जब असीम, बतूल के घर कभी मिस्सी, कभी कत्था वगैरा पहुंचाने जाते थे तो उम्र में उनके बराबर की बतूल, बहुत इज़्ज़त देती थी उनको, एक तो मोहल्लेदारी का लिहाज़ और दूजे, शायद बतूल को भी असीम का आना अच्छा लगता था।

बतूल और असीम की आंखों से होनेवाली बातें, खुतूत तक जा पहुंची। इज़हार दोनों ही तरफ़ से हो गया। महबूब की रजामंदी मिल जाए तो इश्क़ का जज़्बा, इस क़दर ताकतवर हो जाता है कि चाहे तो पहाड़ फोड़ दे।

असीम का वही हाल था, इज़हार दोनों तरफ़ से हो चुका था,अब, उसकी मंज़िल थी पैकर के लायक़ कहलाने के लिए बेहतरीन ओहदा हासिल करना। पैकर के बाबा असिस्टेंट कमिश्नर के ओहदे पर थे, सरकारी इम्तेहान निकल कर इतना बड़ा ओहदा हासिल कर पाना बहुत मेहनत मांगता था।

असीम, अपनी पढ़ाई के साथ साथ घर के छोटे से व्यापार में हिस्सा बंटाते, मेहनत करते और अपनी आनेवाली हसीन ज़िंदगी के ख़्वाब से अपनी मेहनत के लिए हौसला हासिल करते।

पुराना ज़माना था, लड़कियों की डोली, 15, 16 बरस में उठ ही जाती थी। बतूल के मामले में हुआ ये कि एक तो वो थी इकलौती, दूजे एक बड़े अधिकारी की बेटी, उनके मामले में कोई फैसला करने से पहले, उनसे राय ली गई। एक से एक रिश्ते आए थे, कोई ज़मीनदार के इकलौते नवाब, कोई खुद बड़े ओहदेदार, कोई मालदार तिजारती तो कोई बड़े वकील साहब।

बतूल ने हिम्मत करके साफ़ साफ़ अपनी मां से कह दिया कि वो असीम के घर जाना चाहती हैं। कमिश्नर साहब की आन को ये गवारा नहीं था पर बेटी के हठी स्वभाव से परिचित थे। उन्हें समझ आता था कि ऐसे मामलों में ज़ोर जबरदस्ती से काम नहीं होता।

असीम की जवानी और मुल्क की आज़ादी के दिन एक साथ परवान चढ़ रहे थे। देश में क्रांति की अलख जाग चुकी थी, फिरंगियों को समझ आ गया था कि ज़्यादा दिन आज़ादी के परिंदे को क़ैद नहीं रखा जा सकता। उसके डैने इतने मज़बूत हो चुके हैं कि अगर पिंजरा खोला नहीं गया तो वो पिंजरा तोड़ कर उड़ेगा और साथ ही उसे पिंजरे में क़ैद करने वाले हाथों को भी जड़ से उखाड़ देगा। हर हिंदुस्तानी का लहू खौल रहा था। अब, किसी भी कीमत पर गुलामी की फजा सहन नहीं होने की थी। देशभक्ति का जज़्बा, हर देसी दिल में ठाठें मार रहा था।

असीम भी अछूते नहीं थे इन जज्बों से, संवाद के रास्ते कम थे परंतु फिर भी, देश के दूसरे हिस्सों से आने वाले संदेसे, देर सवेर मिल ही जाते थे।

असीम को खुद को साबित करना था, बतूल के साथ ज़िंदगी बसानी थी। बात अब बतूल के घरवालों तक पहुंच गई थी। बीस साला नवजवान आम सा लड़का जिसकी ज़िंदगी का अब मक़सद था कि खुद को शाहज़ादी के लायक़ बनाया जाए, लेकिन, जवां खून मुल्क में होने वाली उथल पुथल से अंजान नहीं था।

शहर में वतन के लिए जां न्योछावर करने वालों की आमदरफ्त तेज़ हो गई थी। पुराने मोहल्लों की तंग गलियों में बसे मकानों में बैठकें होती थीं। संचार के साधनों के अभाव में, छात्रों और महिलाओं के भी माध्यम से संदेश का आदान प्रदान होता था।

रायपुर के बैरन बाज़ार इलाके में अंग्रेज़ अधिकारियों के बंगले बने थे। क्रांतिकारियों की नज़रों में वो इलाका कांटे की तरह खटकता था। उनके घरों से सूचना एकत्र करने से हो सकता था कि आज़ादी के परवानों के हाथ कुछ ऐसी बात लग जाए जो अंग्रेज़ों को सबक सिखाने में मददगार हो।

अत्याचार झेलने की सहनशक्ति चुकी जा रही थी। युवा, महिला, बुजुर्ग सभी के दिलों में अंग्रेज़ी राज से मुक्ति पाने की तमन्ना बेकाबू हुई जा रही थी। शीर्ष नेतागण चाहते थे कि अहिंसात्मक आंदोलन के माध्यम से अंग्रेज़ों को अपना देश छोड़ने को बाध्य किया जाए परंतु युवा जोश को अपने ही देश को छोड़ने के लिए अंग्रेज़ों द्वारा किए जाने वाला दमन स्वीकार्य नहीं हो पाता था।

भारत की अवाम को नस्लवादी नज़र से देखना, उन्हें अपना ज़रख़रीद गुलाम समझना, उन पर पाशविक अत्याचार करना, उनकी महिलाओं पर कुदृष्टि डालना, जब इच्छा हो, उनकी अस्मिता, उनके स्वाभिमान को बूटों तले रौंद देना, अंग्रेज़ों के अत्याचार समय के साथ बहुत बढ़ गए थे।

1857 की क्रांति को कुचलने के बाद, बहुत बेदर्दी से देश के क्रांतिकारियों का दमन किया गया था। शहीद वीरनारायण सिंह को रायपुर में विशाल बरगद के पेड़ के पास फांसी दी गई थी। युवा तो क्या, बुज़ुर्ग भी तिलमिला जाते थे। जुल्म और जबर की इंतहा तो थी ही पर सहन कर पाने की मजबूरी की ज़ंजीरें अब इस बंदिश को तोड़ने छटपटा रही थीं।

शहर और शहर के आस पास के इलाकों से अंग्रेज़ों की ज़्यादती की ख़बरें मिलती रहती थीं। साहब बहादुर के बंगलों में काम करने वालों पर, कभी भी मालिकों का गुस्सा फूट पड़ता था। छोटी सी गलती होने पर बड़ी सजाएँ दी जाती थीं, कोई सुनवाई नहीं थी गुलाम भारतीयों की, कभी उनके सर के बाल नोच लिए जाते, कभी हंटरों और बेल्ट की मार से बदन की चमड़ी उधेड़ दी जाती। किशोरी और जवान तो क्या अधेड़ महिलाएं भी फिरंगियों की हवस का शिकार बन रही थीं।

राज करने वालों ने शक्ति और धूर्तता से राज तो हासिल कर लिया था पर शासक की सह्रदयता, अनुशासन और शालीनता का सर्वथा अभाव ही था। अनुशासन के नाम पर अत्याचार और क्रूरता की सीमाएं पार कर दी जाती।

सहनशील भारतीयों की सहन करने की शक्ति खत्म हो रही थी।

शहर के पुराने मोहल्लों की बोसीदा गलियों में आज़ादी हासिल करने को बेसब्र हुए नौजवानों की गुप्त मंत्रणाएं तेज़ हो गई थीं। असीम का दिल पढ़ाई से उचटने लगा था। आंखों के सामने होते जुल्म ओ सितम, ख़ामोश रहने पर उनके ज़मीर की खिल्ली उड़ाते से लगते थे। उनका दिल करता था कि खुद के लिए जीने से अच्छा है, वतन के लिए मर जाना।

बतूल के अब्बा से किया वादा उन्हें याद था मगर, मुल्क का प्यार, उनके खुद के इश्क के सामने कहीं ज़्यादा मर्तबा रखता था।

शहर के अवधियापारा में कुछ मंत्रणाएं जारी थीं, असीम उनका हिस्सा बनने लगे, हालांकि वो वहां सिर्फ़ सुनने जाते थे पर देशभक्तों की संगत का असर बेहद संक्रामक होता है, अब असीम को अपने मुल्क और उसकी आज़ादी के सिवाय कोई भी तमन्ना न थी। उन्होंने खुद को वक्फ करने का इरादा कर लिया था, वो अब, प्रशासनिक अधिकारी बनकर, अपने ही भाई बहनों पर किए जाने वाले जुल्म के भागीदार नहीं बन सकते थे। हालांकि, बतूल अभी भी उनके दिल ओ दिमाग़ की मलिका थी और वो उसके साथ ज़िंदगी गुज़ारने के ख्वाहिश मंद ज़रूर थे, पर, इसके लिए वो अपने वतन को गुलाम बनाने वाली कौम के नौकर बनकर काम करने के सख़्त इंकारी हो गए थे।

मोहब्बत, बेहद असरदार चीज़ है। अगर मुल्क से हो तो इंसान जां न्योछावर करने में न हिचके और अगर किसी शख्स से हो तो उसके साथ की तमन्ना में, उसका साथी, कांटों भरी रहगुजर में चलने यूं राज़ी हो जाए मानो वो गुलों की नर्म पगडंडी हो। बतूल, अपने महबूब की हर बात से राज़ी थीं। गरीबी में गुज़र करने राज़ी थीं। देशभक्तों की टोली में शामिल होने राज़ी थीं।

असीम के साथ ने उनको आराम की गुलामी भरी ज़िंदगी से वकार की आज़ाद ज़िंदगी का शैदाई बना दिया था।

अब्बास साहब को सुन गुन थी कि असीम के दिल में क्या चल रहा है। उन्हें बिलकुल पसंद नहीं था कि असीम उस डगर पर आगे बढ़े जिसका नतीजा बेघरबारी और गिरफ्तारी है। इसके अलावा, अब्बास साहब अंग्रेज़ी प्रशासन के आला अफ़सर थे और एक ऐसे इंसान को अपना दामाद बनाना जो सरकार के ख़िलाफ़ सोच रखता हो, उनके हक़ में बेहतर नहीं था।

बेटी की ज़िद पर उन्होंने ये रिश्ता मंजूर तो कर लिया था पर असीम और उनका परिवार, उन्हें कभी भी अपने स्तर का नहीं लगा था।

अब्बास साहब ने असीम को मिलने बुलाया। वो समझना चाहते थे कि असीम के दिल में क्या चल रहा है।

लाहौर की सेंट्रल जेल में क़ैद असीम रिहा हो गए लेकिन इस रिहाई के लिए उन्हें कई बरस इंतज़ार करना पड़ा। लगभग आठ साल बाद उन्होंने खुली हवा में सांस ली।

एक कॉन्फिडेंशियल फाइल को बड़े ही एहतियात से लाहौर के एक पते पर पहुंचाने की ज़िम्मेदारी उन्हें दी गई थी। रायपुर से भेस बदल बदल कर वो किसी तरह लाहौर तो पहुंच गए, मगर वहां उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। बगैर मुक़दमे के सालों गुज़र गए। असीम कहां हैं, किसी को नहीं पता चला, थक हार कर उनके घर वालों ने सबर कर लिया।

जब अब्बास साहब ने देखा कि असीम के दिल में वतन की आज़ादी का ख़्वाब हक़ीक़त में बदलने का जज़्बा खत्म नहीं हो पाएगा तो उन्होंने बतूल से उनका रिश्ता खत्म करने की ठान ली।

लेकिन, जब मियां बीवी राज़ी तो क्या करेगा क़ाज़ी, बतूल, हर हाल में असीम के साथ थीं।

असीम को यक़ीन में लेकर कि दिल से वो भी क्रांतिकारियों के साथ हैं, अब्बास साहब ने एक ज़रूरी फाईल गुप्त रूप से क्रांतिकारियों तक पहुंचाने का ज़िम्मा दिया असीम को और फिर लाहौर में अधिकारियों को इत्तेला कर दी। असीम पर देशद्रोह, ज़रूरी दस्तावेज़ की चोरी का इल्ज़ाम लगाकर, सों क़ैद में रखा गया।

इस बीच, मुल्क की दुआएं क़ुबूल हुईं, आज़ादी मिली, हालांकि सीने को चाक किया गया, देश, दो हिस्सों में बंट गया।

बतूल को कहा गया कि वो किसी और से निकाह कर, पाकिस्तान में घर बसा चुके हैं सबूत के तौर पर असीम का झूठा निकाहनामा और फर्ज़ी पता उन्हें दिखाया गया।

असीम ने रिहाई के बाद जाना कि बतूल की गृहस्थी बस चुकी है। वो, पाकिस्तान से वापस अपने शहर नहीं गए।

वक्त किसी के लिए नहीं रुकता, असीम भी उसकी धारा के साथ बहते गए।

इस उम्र में आकर, उन्हें हक़ीक़त पता चली। जो जवानी में बिछड़े थे, उम्र के आख़िरी दौर में मिले और यूं सच से उनकी आगाही हुई।

इस रात असीम चैन की नींद सो पाए, सदा के लिए।

ख़तम हुआ सफ़र, शायद कहीं किसी और आयाम में असीम को वो ज़िंदगी मिल जाए जो उन्हें बतूल के साथ गुज़ारने की ख्वाहिश थी।

मोहब्बत ने उनको वतन से दर बदर कर दिया पर वक्त ने उनको मोहब्बत पर यक़ीन बहल करके ही आख़िरी सफ़र पर रवाना किया।

♦♦ कहानी ♦♦

आरक्षण

महेश शर्मा 'धार'

मनीष और बलबीर यानी एक दलित और एक ब्राह्मण समुदाय के होने के बावजूद गाँव में रहने, पढ़ाई करने और दोस्ती का रिश्ता निभाने में दोनों को कभी भी कोई समस्या या व्यवधान नहीं आया था लेकिन यहाँ मात्र 15 दिनों में जो वातावरण चल रहा था उसे देख कर दोनो बैचेन हो रहे थे .

रोजाना राजनेताओं के और छात्र नेताओं के परस्पर विरोधी बयान आरोप–प्रत्यारोप और आंदोलन की धमकीयोँ ने दोनों दोस्तों का सुकून से जीना हराम कर दिया था . दोनों को न जाने क्यों लगने लगा था कि उनके हित आपस में टकरा रहे हैं .और ऐसे में आज शहर में निकलने वाला जुलुस जो शाषन की आरक्षण नीती के विरोध में आयोजित था उस खबर ने दोनों दोस्तों को एक विचित्र स्थिति में ला खडा किया था .

मनीष की विचार यात्रा अचानक भंग हुई पास के कमरे से शिशिर की आवाज आई मनीष चलो रैली में मनीष बिच कमरे में खड़ा बलवीर की ओर असमंजस से देख रहा था . वह बलवीर से कैसे पूछता कि वह भी चलेगा क्या रैली में ? उसने सिर्फ इतना ही कहा कि मैं आता हूँ बलबीर, दोपहर तक.

हां ठीक है तुम जाओ बलवीर ने जवाब दिया . और मनीष जुलूस के साथ निकल पड़ा . सड़कों पर शहर के मुख्य मार्गों से होता हुआ जुलूस जिसमें लगातार छात्रों की व सामान्य वर्ग के व्यापारियों और नौकरीपेशा लोगों की संख्या बढ़ती जा रही थी अंत में जिला कार्यालय पर पहुंचा कुछ वक्तओँ के भाषण हुए .भाषणोँ में शासन की नीतियों की आलोचना हुई वर्ग विशेष के वोटोँ के लिये तुष्टीकरण के आरोप लगे. वोटों की खातिर मासूम निर्दोष प्रतिभाओं को कुचलने की साजिशेँ उजागर होती रही .

सभा समाप्त होते–होते आक्रोश अपने चरम पर पहुंच गया था और उसी आक्रोश में 2–3 छात्रों ने आरक्षण नीति ना बदलने की स्थिति में आत्मदाह की धमकी दे डाली थी बल्कि आत्मदाह की तारीख की भी घोषणा कर डाली . सारा वातावरण अत्यंत उग्र एवं एवं विषाक्त हो गया था . अनचाहे सारा समाज अलग अलग खेमों में बटता जा रहा था .

मनीष का दिमाग भी आक्रोश मेँ था. बड़ी मेहनत से दिन–रात पीएमटी की तैयारी में लगा था. पिता की बड़ी इच्छा थी कि गरीब ब्राह्मण शिक्षक का मेहनती बेटा डॉक्टर बने गरीबी के बावजूद पिता सीमित खर्चे में घर चला कर मनीष की पढ़ाई का ध्यान रख रहे थे ऐसे में यह आरक्षण का भूत ऐसे लग रहा था जैसे उसके सपनों पर कोई डाका डाला जाने वाला है .

इसी उहापोह की स्थिति में मनीष खोया खोया सा हॉस्टल पहुंचा बलवीर कहीं गया हुआ था. शाम तक मनीष विचारों में खोया रहा . अंधेरा होते होते बलवीर भी कमरे पर आ चुका था . वह भी उतना ही उद्वेलित और संशय में था . क्या उचित है क्या अनुचित यह प्रश्न दोनों के दिल दिमाग पर छाया हुआ था.

कहाँ चला गया था बलवीर ? मनीष ने पूछा. अरे क्या बताऊं यार चौक में आरक्षण समर्थकों की सभा थी. कुछ देर में भी चला गया था कुछ लोग बाहर से आए थे उनके भाषण भी हुए बहुत शानदार कार्यक्रम था जोश से भरा. तुम्हारी रैली कैसी रही रैली तो शानदार रही सरकार का जबर्दस्त विरोध करने की योजन बनी है. आईसीटीकॉलेज के तीन लड़कों ने आत्मदाह की घोषणा भी कर डाली है.

यानी अब इस तरह भी दबाव की रणनीति अपनाई जा रही है. बलवीर ने एक व्यंग्यपूर्ण लहजे में कहा मनीष को यह स्वर कुछ बदला बदला सा लगा.

क्या मतलब है तुम्हारे कहने का ? मनीष ने बड़े आश्चर्य से पूछा.

कुछ नहीं यार शासन हम पिछड़ों को आगे आने का अवसर दे रही है . तो उसके विरोध के लिए आप लोग आत्म दाह तक की धमकी की बातें करने लगे.

आज कैसी बात कर रहा है बलवीर तू ?

जो सत्य है वह तो कहना पड़ेगा मनीष .

क्या सत्य है ? मनीष का आश्चर्य बढ़ता गया .

मुझे आज पता चला कि तुम्हारी पिछली पीढ़ियों ने हमारा बहुत शोषण किया है . हमें कभी आगे बढ़ने का अवसर नहीं दिया मेरी पिछली पीढ़ियों ने ?

तुम्हारी से मेरा मतलब है उच्च वर्ण वालोँ ने . पिछ्ले कई सालोँ तक सवर्णो ने हम पिछड़ों और दलितों का हक चुराया है.

किसी कट्टरपंथी नेता का भाषण सुनकर आ रहे हो शायद ?

जिससे भी सुना हो पर हां मुझे बताया गया है , और यह जानकारी मिली है कि निम्न जाति का होने के कारण हमारे

पूर्वजों को विकास के कोई अवसर नहीं दिए गए थे और अब यह शासन हमें ये अवसर दे रहा है तो आप कुछ उच्च जाति वालों को तकलीफ हो रही है.

तुम भ्रमित हो रहे हो बलबीर तुम्हें कोई नफरत का जहरीला पाठ पढ़ा रहा है.

जो भी हो लेकिन सच यही है. बलवीर का स्वर दृढ़ था.

सत्य जरूर है बलबीर लेकिन अधूरा है वर्ण व्यवस्था आदि काल में प्रचलित थी जब तक यह उपयोगी और उचित रही मानी गई. धीरे–धीरे समाप्त हो रही है. और आज वर्ण भेद या वर्ग भेद समाज में नाम मात्र का रहा है. और ऐसा सिर्फ हमारे ही देश या समाज में नहीं वरन हर देश हर समाज और हर काल में ऐसा होता रहा है.

लेकिन हमें उन्नति के अवसर मिलने में उच्चवर्ग को तकलीफ क्यों ? बलवीर आक्रोश में था.

तकलीफ उच्च वर्ण वालों को नहीं है तकलीफ उन मासूम प्रतिभाओं को है जो महत्वाकांक्षी हो कर कम संसाधनों में उन्नति के सपने देख रहे हैं. तकलीफ उन मध्यमवर्गीय और गरीब सवर्णो को है जिनके पास न खेती की जमीन है ना व्यापार हेतु धन है और ना ही बैंक बैलेंस. केवल शिक्षा और डिग्री ही जिन की दौलत है और जो अपने बच्चों को भी कुछ अच्छा जीवन स्तर उपलब्ध कराना चाहते हैं.

"लेकिन पिछड़ों और कमजोरो को अतिरिक्त सहायता देना भी तो गलत नहीं है. यह भी तो उचित ही है "बलबीर के तर्क अभी भी आक्रोश्युक्त ही थे.

बिल्कुल उचित है लेकिन इसका आधार जाति क्यों ? क्या उच्च वर्ग में सभी रईस खानदान के हैं ? सभी साधन संपन्न हैं? और पिछड़ी जातियों में सभी कमजोर और गरीब हैं ?

हां ऐसा तो नहीं है. बलवीर कुछ सोचने को मजबूर हुआ.

"आरक्षण हर बेसहारा साधनहीन निर्धन कमजोर व्यक्तियों को देना चाहिए चाहे वह किसी भी जाति का हो किसी भी वर्ण का हो. आरक्षण का निर्धारण साधन संपन्न और साधन हीन के बीच होना चाहिए जातिभेद पूर्णतः अनावश्यक और स्वार्थ परक राजनीति का हिस्सा है मैं इसका विरोधी हूँ "मनीष ने बलबीर को समझाना चाहा.

खैर छोड़ो यह बहस मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है क्या सही है क्या गलत है. बलवीर बात खत्म करते हुए कमरे से बाहर निकल गया.

मनीष हतप्रभ था एक अच्छा सकारात्मक धारणा वाला स्वस्थ दिमाग का उसका दोस्त कुछ भाषण से इतना विचलित और असमंजस में भी हो सकता है ? उसे आश्चर्य था इससे ज्यादा आश्चर्य उसे दूसरे दिन हुआ जब बलवीर ने वह कमरा खाली कर दिया. और अपने किसी दूसरे दोस्त के पास जाकर रहने चला गया.

8–15 दिनों तक मनीष विचलित रहा. फिर सब कुछ भूल कर पढ़ाई में लग गया उसे अपने पिता और परिवार की निर्धन स्थिती का ध्यान आया उसे अपने पिता के सपनों को पूरा करना था. इसलीये वह दिन–रात जुनून के साथ पढ़ाई करता रहा.

उधर बलवीर मनीष का साथ छोड़कर अपने दोस्त के साथ रहने लगा था. पढ़ाई मे ज्यादा मन नही लगा पाने से बलबीर वापस अपने गाँव चला गया.

बलवीर के कमजोर इरादे देख कर उसके घर वालों ने उसे समझा दिया था कि पीएमटी की चिंता ना करें घर में बिजनेस है और जमीन भी पर्याप्त है जरूरी नहीं कि हम मेडिकल लाइन ही ज्वाइन करे.

बलबीर भी चिंता मुक्त होकर थोड़ा बहुत ध्यान ठेकेदारी पर देने लगा हालांकि पीएमटी का फॉर्म भरा था कुछ तैयारी भी थी इसलिये परीक्षा देने का मूड पूरा पूरा था.

निर्धारित समय पर परीक्षा देने के लिए बलवीर शहर गया कॉलेज में उसकी मुलाकात मनीष से भी हुई बहुत कमजोर और बीमार सा लगने लगा था मनीष . उसके दोस्तों से पता चला एग्जाम क्लियर करने के लिए तूफानी अंदाज से पढ़ाई कर रहा था.

परीक्षा देने के कुछ दिनों बाद रिजल्ट घोषित हो गए थे. बलवीर की ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी रिजल्ट जानने में उसे मालूम था कि उसके पर्चे ज्यादा अच्छे नहीं गए हैं इसलिए उसे कोई ज्यादा संभावना नहीं थी. लेकिन उसे मनीष के परिणाम की चिंता जरूर थी. आखिर दोस्त था

ठेकेदारी के सिलसिले में दूसरे शहर में ठहरा मनीष चौक गया, जब उसे जानकारी मिली कि उसका सिलेक्शन हो गया है. उसे दोस्तों ने सूचना दी कि शासन की आरक्षण नीति के कारण कम नंबर लाने के बावजूद उसका चयन हो गया है. बलवीर आश्चर्यमें था लेकिन खुश था. दूसरे ही क्षण उसकी खुशी दुगने आश्चर्य के साथ गम में बदल गई जब उसने दोस्तों से मनीष के बारे में पूछा.

मनीष का मत पूछो बलवीर, उसके साथ तो बहुत बुरा हुआ.

क्या हुआ उसको ? बलवीर ने घबराते हुए पूछा.

एक तो उसका सिलेक्शन नहीं हुआ. इतनी ज्यादा मेहनत करने के बावजूद वह बाउंड्री पर अटक गया दूसरा हादसा यह हुआ कि रिजल्ट देखने के बाद वह वपस अपने गाँव ही नहीं गया और हॉस्टल के कमरे में गले में रस्सी का फंदा डालकर लटक गया..

क्या बात करते हो ! बलवीर सकते में आ गया. फिर क्या हुआ ?

वह तो पास के कमरे के लड़के आ गए थे उसे तत्काल अस्पताल ले गए तो जान बच गई वरना वो तो मर चुका था

अब कैसा है वह ?

अभी बेहोश है. घरवाले आ चुके हैं. पूरे शहर में तनाव फैला हुआ है. हड़ताल आंदोलन चल रहे हैं आरक्षण के विरोध में.

और उसके आगे बलबीर कुछ ना सुन सका. तत्काल रवाना हो गया. उसे मनीष की उस दिन की एक एक बात याद आ रही थी. उसने तय कर लिया था कि अब वह भी आरक्षण के विरोध में आंदोलन मे भाग लेगा जो और भी तेज होगा और वह स्वयम उसका नेतृत्व करेगा. इस नीति को बदलकर रखेगा और अपने भाइयों को इसकी वास्तविकता समझाएगा.

तेज गति से चल रहे वाहन पर बैठे बलबीर की विचारधारा और भी तेजी से चल रही थी

बलवीर ने ठान लिया था कि अब वह किसी भी अन्य प्रतिभा का ऐसा हश्र नहीं होने देगा.

♦♦ दोहे ♦♦

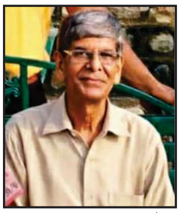

कैसा जीवन-राग

डॉ. रामनिवास 'मानव'

कुंठित है सब चेतना, लक्ष्यहीन संधान।
टेक बने हैं देश की, अब बौने प्रतिमान।।

नैतिकता नंगी हुई, बनी पाप की टेक।
लक्ष्मण–रेखा अब यहां, बाकी बची न एक।।

पूजित है अब नग्नता, धरा शीश पर ताज।
लेकिन भटके अस्मिता, कौड़ी की मुहताज।।

नंगा पूछे नंग से, असली नंगा कौन।
सच दोनों के सामने, फिर भी उत्तर मौन।।

भुतहा–भुतहा वक्त है, सहमी–सहमी आग।
सन्नाटा के दौर में, कैसा जीवन–राग।।

आहत–अपहृत रोशनी, अंधकार की कैद।
खड़ी घेरकर आंधियां, पहरे पर मुस्तैद।।

अभयारण्य आज बना, सारा भारत देश।
संरक्षित शैतान हैं, संकट में दरवेश।।

राजनीति करने लगी, अब तो स्यापा रोज।
यार रुदाली के सभी, क्या गंगू, क्या भोज।।

झूठ करें अठखेलियां, सत्य फिरे लाचार।
पड़ी धर्म के बेड़ियां, गले पाप के हार।।

कोकिल साधे मौन है, काक बहुत वाचाल।
गिद्ध–चील गिद्धा करें, बगुले देते ताल।।

वट–पीपल के देश में, पूजित आज कनेर।
बूढ़ा बरगद मौन है, देख समय का फेर।।

देशभक्ति के दोहे

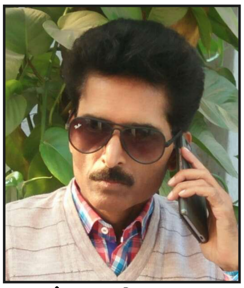

सुबोध श्रीवास्तव
कानपुर

विविध सुरीली बोलियाँ, विविध अनूठे धर्म।
दिव्य, पूज्य भारत धरा, छुए विश्व का मर्म।।

अमर शहीदों ने दिया, मिटकर यह संदेश।
प्राणों से भी है अधिक, प्यारा हमको देश।।

आजादी तो मिल गयी,मिला नहीं अधिकार।
पहले हम लाचार थे, अब भी हैं लाचार।।

महलों वाले चल पड़े, हैं सूरज की ओर।
बस्ती में छाया हुआ, अंधियारा घनघोर।।

आजादी के वास्ते, मिटे अनगिनत वीर।
भ्रष्ट तंत्र अब लिख रहा,भारत की तकदीर।।

लोकतंत्र में दोस्तों, जनता है लाचार।
चाहे ये सरकार हो, चाहे वो सरकार।।

आजादी के पर्व पर, गूँज रही जयकार।
सुनता कौन गरीब की, रोटी की दरकार।।

आजादी तो मिल गयी, खुशियाँ भी आबाद।
दिल ही लेकिन जानता, हम कितने आजाद।।

♦♦ कहानी ♦♦

साथ तुम्हारा

वन्दना पुरोहित
बीकानेर (राज.)

वैदेही अपने आलीशान बड़े से सुसज्जित बेडरूम में नितांत अकेली कभी कभार अखबार के पृष्ठ तो कभी किताबों के पन्नों को पलटती कभी पास रखें फोन से अपने रिश्तेदारों व सहेलियों से बात कर अपना समय जैसे तैसे काटने की कोशिश करती वैदेही अब पहले जैसी चंचल जवान तो थी नहीं उम्र के इस पड़ाव में उसने धीरे–धीरे अपने आप को घर तक ही सीमित कर लिया था। अब शरीर में पहले जैसी फुर्ती ना थी कि वह किट्टी पार्टी व क्लब जाकर अपना टाइम पास कर ले।

वैदेही नमित के प्रेम व साथ के कारण ही आज पहले से बेहतर जीने की कोशिश कर रही थी। वो उस बीते समय को कैसे भूल सकती थी।एक एक कर उसे अपना बीता समय याद आने लगा।

एक समय था जब वैदेही खुद पार्टी देती थी व सहेलियों का मजमा उसके घर लगा रहता था। पति नमीत अपने बिजनेस में शुरू से ही इतने व्यस्त थे कि उनके पास हमेशा वैदेही के लिए वक्त ही कमी रहती थी। वह बिजनेस के लिए विदेश जाते रहते थे। जब कभी वैदेही उनके साथ जाती तब भी वह अकेली या तो होटल के रूम में रहती या फिर शॉपिंग पर निकल जाती। जब नमित शहर में रहते तब भी एक फोन कॉल से ही वैदेही को पार्टी में चलने को तैयार रहने के लिए कहते और आते ही दोनों निकल पड़ते पार्टी के लिए और लौटते वक्त इतनी देर हो जाती की आँखो में सिर्फ नींद व थकान के सिवा कुछ ना होता। नमित को वैसे भी ज्यादा बात करना पसंद नहीं था। कभी–कभी वैदेही सोचती नमित इतना कम बोलते हैं तो बिजनेस मीटिंग कैसे करते हैं। कई बार वैदेही ही हँसी मजाक कर घर के माहौल को खुशनुमा करने की कोशिश करती लेकिन नमित मुस्कुराहट से ज्यादा कुछ ना बोलता। नौकर चाकर को आवाज लगाते वक्त उसकी रौबदार आवाज से घर गूंज उठता था। तब बेचारे उसकी एक आवाज पर दौड़े चले आते थे और नमित के ऑफिस जाने के बाद ही चैन से बैठते थे। वैदेही अपने अकेलेपन को दूर करने पार्टी व सहेलियों के यहां चली जाती।

ईश्वर ने भी वैदेही को एक बार खुशी की आहट दिखलायी तब वैदेही बहुत खुश थी। उसे लगा अब इस घर में रौनक होगी नन्ही तुतलाती भाषा में मम्मी.. मम्मी... की आवाज से घर गूंज उठेगा। इस खबर को सुनाने के लिए भी उसने नमित का इंतजार किया पूरे 15 दिन। विदेश मैं फोन पर नमित को वो ये खुशखबरी नहीं देना चाहती थी। वह नमित के चेहरे की खुशी पढ़ना चाहती थी इसलिए जब नमित विदेश से लौटे तभी उसने नमित को यह खबर सुनायी कि वह पापा बनने वाला है। उस दिन नमित का चेहरा खुशी से खिल उठा था ना बोलने वाले नमित ने उसे 10 बार अपना ख्याल रखने के लिए 10 हिदायतें दी थी। दोनों के जीवन में खुशी की आहट ने उन्हें और करीब ला दिया था। नमित इन दिनों ऑफिस से जल्दी आ जाता था। ज्यादा से ज्यादा समय वैदेही के साथ बिताता लेकिन ईश्वर के आगे किसका जोर चलता है। वैदेही के तीन माह के गर्भ में ऐसी कॉम्प्लिकेशन आई कि उसका मेजर ऑपरेशन करना पड़ा और उसके बाद एक ऐसा दर्द वैदेही के हिस्से में आया जिसे कोई स्त्री बर्दाश्त नहीं कर सकती। डॉक्टर ने बताया कि वह मां नहीं बन सकती। नमित और वैदेही दोनों ईश्वर के इस वज्रपात से घायल हो गए।वैदेही मन ही मन अपने आपको कोसती की वो अब कभी नमित को परिवार की खुशी नहीं दे पायेगी।जब कभी नमित से इस बारे में बात करती वो अपनी अपनी किस्मत के लिखे की बात कह उसे ढांढ़स बंधाता। समय के साथ–साथ नमित ने अपने आपको अपने काम में इतना व्यस्त कर दिया कि उसे वैदेही की भी सुध न रही। समय निकलता

गया अकेलेपन के कारण वैदेही अब धीरे–धीरे कमजोर होती जा रही थी उसने अपने आपको पार्टी व सहेलियों से दूर कर लिया। अमित भी वैदेही की यह हालत देख परेशान हो जाता था लेकिन अपने बढ़ते बिजनेस के कारण वैदेही को वक्त ना दे पाता। धीरे–धीरे वैदेही की भूख प्यास बंद हो चुकी थी दिन भर में वह एक शब्द भी ना बोलती। उसकी आँखों के नीचे काले गहरे गड्ढे हो गए थे उसकी आँखों की चमक भावविहिन थी। नमित ने उसे डॉक्टर को दिखाया काफी समय तक इलाज हुआ लेकिन उसका कोई असर न हुआ तो डॉक्टर ने मनोचिकित्सक से सलाह लेने को कहा। शहर के जाने–माने मनोचिकित्सक डॉक्टर त्रिपाठी ने वैदेही का चेकअप किया उससे कुछ बात करने की कोशिश की वह नमित से पारिवारिक जानकारी लेने के बाद दवाइयों व अच्छी देखभाल के साथ नमित को दो शब्द कहे "साथ तुम्हारा" जिन्हें सुनकर नमित स्वयं अपराध बोध से सुन्न रह गया।

वैदेही के साथ घर जाकर नमित उसका हाथों में हाथ लिए घंटों बातें करता रहा वह अपने इस अपराध बोध को दूर करना चाहता था उसे पता ही नहीं चला कब उसकी वैदेही इस अकेलेपन की शिकार हो गई ।नौकर भी यह सब देखकर हैरान थे आज नमित पल–पल वैदेही का ख्याल रख रहा था। इसी तरह काफी समय तक नमित ने वैदेही का ख्याल रखा। वह धीरे–धीरे सामान्य होने लगी लेकिन नमित को बिजनेस भी संभालना जरूरी था वह फिर अपने काम में व्यस्त हो गया। वैदेही के रखरखाव व समय पर दवा पानी देने के लिए एक महिला को रख दिया। अब कभी कभी वैदेही उस महिला से बात कर लिया करती थी। नमित ने भी अपने लंबे विदेश दौरे बंद कर दिए थे। वो जब भी घर पर रहता वैदेही से नई पुरानी बातें कर उसका दिल बहलाने की कोशिश करता व उसे बाहर ले जाता। नमित के साथ से वैदेही में जैसे जान आ गई शरीर कमजोर था लेकिन अब फिर से वैदेही की आँखो की चमक नजर आने लगी थी।अब वह कभी–कभी गुनगुना लेती

"तेरा साथ है तो, मुझे क्या कमी है..." और तैयार होकर जब मुस्कुराकर बाहर चलने का कहती तो नमित अपनी थकान भूलकर वैदेही के साथ निकल पड़ता। उसे भी अब वैदेही मैं अपने साथ का असर दिखने लगा था।

♦♦ बच्चों की कविताएँ ♦♦

बंदर

लाल मुंह का बंदर
आया घर के अंदर।
बंदर ने घर के अंदर आकर धूम मचाई,
थोड़ी देर में,
बंदरिया अपने बच्चों को
साथ ले अंदर चली आई।
बैठे–बैठे केले छील कर खाए।
आम खाते–खाते
बच्चे के मुंह में गुठली आई,
उसने बुरी–सी शकल बनाई,
अपनी माँ को आवाज लगाई।
माँ ने बच्चे को सीने से चिपकाया,
छलांग लगाकर बाहर की ओर दौड़ लगाई।

नाम – आदित्यराज सिंह
जन्म – 14 – 7– 2012
पिता – डॉ. खेमराज सिंह
शिक्षा – छठी कक्षा

चिड़िया

छोटी सी जो होती है चिड़िया
दूर कहीं उड़ जाती है
ढूंढ ढूंढ कर दाने चुगती
झील के पानी से प्यास बुझाती चिड़िया
नील गगन में उड़ती है
आज़ादी के पंख फैलाती चिड़िया
चहचहाती हुए खुशहाली का
पाठ पढ़ाती है
सूरज के साथ उठती
कभी न रुकती , कभी न थकती
समय का महत्व बताती चिड़िया
छोटी सी नन्ही सी
दूर कहीं उड़ जाती चिड़िया

जाह्नवी श्रीवास्तव
कक्षा–11,
Global Indian International School
Tokyo

हाइकु

सुश्री मंजु श्रीवास्तव 'मन'
वर्जीनिया, अमेरिका

युद्ध

मासूम चीखें
खण्डहर उक्रेन
कुछ तो सीखें।

मन डरता
युद्ध की विभीषिका
तन जलता।

सब टूटता
आर्त्तनाद गूँजता
क्या है मिलता ?

सैनिक मरे
शौक हुक्मरानों का
जनता डरे।

धुआं ही धुआं
तबाही का मंज़र
युद्ध में हुआ।

खाता मानव
युद्ध क्रूर दानव
कोई तो रोको।

नहीं झुकेगा
अहंकार सभी का
युद्ध चलेगा।

हाइकु

चक्रधर शुक्ल

आँखों में पीर
उमड़ी संवेदना
मन अधीर।

दो बूँद पानी
धरती की वेदना
ओस ने जानी।

तितली डरी
छेड़छाड़ भौंरों की
बागों में बढ़ी।

बुक में लिखा
फिर फेसबुक में
लिखना जारी।

कुछ न कहा
परित्यक्ता का दंश
उसने सहा।

नींद न आई
बसंत ने हिय में
आग लगाई।

संवेदनाएं
हिंसा की चपेट में
जाने क्यों जलीं।

अनाधिकार
वर्चस्व की लड़ाई
रोड पे आई

निरन्तरता
सफलता का मंत्र
प्रयास जारी।

मन की बातें
सहेलियों से कही
अँखियां बही

परिवर्तन
नए द्वार खोलती
मैना बोलती।

बावली हुई
धूप लेती लड़की
साँवली हुई।

सच बताऊँ
खिले हुए फूलों को
कैसे चढ़ाऊँ।

स्वार्थी लोग ही
धीरे–धीरे खिसके
सगे किसके।

मेघ निर्मोही
भेदभाव देख के
दुखी बटोही।

हवा बैरन
इस कदर डोले
चेहरे बोले।

प्रदूषण से
धरती को बचाओ
पेड़ लगाओ।

भौंरे उत्पाती
कलियाँ डरीं–डरीं
माली जज़्बाती।

मौसम क्रूर
हवा उड़ा ले गयी
मेघों को दूर।

अग्नि–परीक्षा
आज भी देती नारी
कैसी लाचारी ?

आपाधापी में
बहुत दूर आये
रिश्ते भुलाये।

घर–बिजूका
पुत्र का व्यामोह ही
उसे ले डूबा।

घुट्टी में माँ ने
संस्कार ही पिलाये
बच्चे मुस्काये।

जीभ–दुधारी
छोटी–छोटी बातों में
निकले आरी।

तुम्हारे लिए
उसने ख्वाब बुने
किसको चुने ?

♦♦ संस्मरण ♦♦

कारगिल महा विजय दिवस की वीर गाथा

कर्नल आदिशंकर मिश्र आदित्य

कारगिल विजय दिवस 26 जुलाई 1999 में सफल हुए "ऑपरेशन विजय" के उपलक्ष में मनायाजाता है। कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच मई और जुलाई 1999 के बीच कश्मीर केकारगिल जिले में और नियंत्रण रेखा (स्ब्) पर लड़ा गया था। युद्ध के दौरान भारतीय सेना नेपाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ दिया और ऑपरेशन विजय के एक हिस्से के रूप में टाइगर हिलऔर अन्य चौकियों पर कब्जा करने में सफल रही। भारतीय सैनिकों ने दो महीने के संघर्ष के बाद यहजीत हासिल की थी। इस युद्ध में भारतीय सेना के लगभग 527 सैनिक शहीद हुए और पाकिस्तान नेअपने 400 से अधिक सैनिकों को खो दिया था। युद्ध में भारत की जीत हुई थी।

भारतीय सेना द्वारा घोषित जीत

26 जुलाई 1999 को सेना ने मिशन को सफल घोषित किया। लेकिन जीत की कीमत ज्यादा थी।कैप्टन विक्रम बत्रा कारगिल युद्ध के दौरान शहीद हुए वीर जवानों में से एक थे। कैप्टन बत्रा कोमरणोपरांत भारत के सर्वोच्च वीरता सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

युद्ध में नुकसान के विभिन्न स्तर होते हैं, लेकिन कोई भी जीतता नहीं है। कारगिल युद्ध के परिणामविनाशकारी थे। बहुत सी माताओं और पिताओं ने अपने बेटों को खोया और भारत ने बहुत से बहादुरसैनिकों को खो दिया।

युद्ध में जीत किसी की नहीं होती हारता एक देश है।

जैसे इस्लामाबाद सरकार के खिलाफ पूर्वी पाकिस्तान में विद्रोह से युद्ध शुरू हो गया था। पाकिस्तानीसेना पूर्वी पाकिस्तान में बंगालियों और अल्पसंख्यक हिंदू आबादी पर अत्याचार कर रही थी। यहअनुमान लगाया गया है कि पाकिस्तानी सेना द्वारा 300,000–500,000 नागरिक मारे गए थे।भारतीय प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान को सहायता प्रदान करने का निर्णयलिया। उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान से भागे लोगों को शरण देने का फैसला किया। युद्ध तब शुरू हुआ जबपाकिस्तान ने 3 दिसंबर 1971 को 11 भारतीय एयरबेस पर हवाई हमले किए। पहली बार भारत कीतीनों सेनाओं ने एक साथ लड़ाई लड़ी। श्रीमती गांधी ने सेना प्रमुख जनरल मानेकशॉ को पड़ोसी केखिलाफ पूर्ण पैमाने पर युद्ध शुरू करने का आदेश दिया।

युद्ध के परिणामस्वरूप बांग्लादेश का जन्म हुआ जो उस समय पूर्वी पाकिस्तान था। बांग्लादेश में इसदिन को 'बिजॉय दिबोस' के रूप में भी मनाया जाता है।युद्ध में 3800 से अधिक भारतीय औरपाकिस्तानी सैनिक अपनी जान गंवा चुके थे। भारत ने 16 दिसंबर को युद्ध के अंत तक 93000 युद्धबंदियों को भी पकड़ लिया था। और शिमला समझौते के तहत भारत युद्ध के 93000 पाकिस्तानीकैदियों को रिहा करने पर सहमत हुआ।

'कारगिल युद्ध का इतिहास' भी ऐसा ही धोखेबाज़ी का है।

1998 में दोनों देशों द्वारा परमाणु परीक्षण किए गए। लाहौर घोषणा में कश्मीर समस्या के शांतिपूर्णसमाधान का वादा किया गया था, जिस पर दोनों देशों ने स्थिति को शांत करने के लिए फरवरी 1999 में हस्ताक्षर किए थे। नियंत्रण रेखा के पार भारतीय क्षेत्र में पाकिस्तानी घुसपैठ को 'ऑपरेशन बद्र' नाम दिया गया था। तब भारत सरकार ने 'ऑपरेशन विजय' के रूप में जवाब दिया और लगभग दोमहीने की लंबी लड़ाई के लिए दो लाख भारतीय सैनिकों को तैनात किया। यह युद्ध मई और जुलाई 1999 के बीच जम्मू–कश्मीर के कारगिल जिले में हुआ था। माना जाता है कि उस समय पाकिस्तानकी सेना के प्रमुख जनरल परवेज मुशर्रफ ने देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को सूचितकिए बिना युद्ध की योजना बनाई थी।

प्रारंभ में कश्मीर में, पाकिस्तान ने विभिन्न रणनीतिक ऊँचाइयों पर कब्जा कर लिया। उन्होंने खुद कोमहत्वपूर्ण स्थानों पर रखा। पर युद्ध के दूसरे चरण में, भारत ने पहले रणनीतिक परिवहन मार्गों परकब्जा करके जवाब दिया। भारतीय सेना स्थानीय चरवाहों द्वारा प्रदान की गई खुफिया जानकारी के आधार पर आक्रमण के बिंदुओं की पहचान करने में सक्षम थी।

अंतिम चरण में भारतीय सेना ने भारतीय वायु सेना की मदद से जुलाई के अंतिम सप्ताह में युद्ध कासमापन किया। नवाज शरीफ ने अमेरिका से सहायता के लिए वाशिंगटन तक की यात्रा भी की थी।संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने तब तक ऐसा करने से इनकार करदिया जब तक कि पाकिस्तानी सेना नियंत्रण रेखा नहीं छोड़ देती। मैं स्वयं उस युद्ध के समय श्रीनगर मेंसेक्शन बेस पोस्ट

ऑफिस का ओसी था और पोस्टल अफ़सर होते हुये भी स्टेशन की सभी आर्मीड्यूटी करता था, जिसमें एक सप्ताह की दुर्ग अफ़सर (गैरिसन अफ़सर) की ड्यूटी भी शामिल होतीथी। मुझे भी यह सौभाग्य प्राप्त होता था। उस समय हमारे सब एरिया कमांडर ब्रिगेडियर त्रिपत सिंह थेजिनके पास ड्यूटी के पहले दिन आदेश लेने जाते थे और आख़िरी दिन पूरी रिपोर्ट दी जाती थी। मुझेउन्होंने कहा था कि मिलिट्री अस्पताल में जाकर घायलों से मिलकर उनका हालचाल भी लेना उनकीहौसला अफजाई भी करना। मैं जब एम एच में गया तो घायलों की हालत देखकर बहुत ही भावुक होगया।

सैनिकों की घायल व रुला देने वाली दशा देखकर बड़ा दुख हुआ था। बुरी तरह से घायल अधिकारी, जेसीओज और जवान सभी दयनीय स्थिति में थे। किसी का हाथ नहीं, किसी का पैर नहीं और किसीको गोली लगी थी।

परंतु सबके हौसले बुलंद थे।अपनी घायल अवस्था की किसी को परवाह नहीं थी। उनका कहना थाकि एक बार ठीक होकर वे फिर युद्ध में शामिल होंगे और दुश्मन को पराश्त करके रहेंगे।

यह सारी रिपोर्ट जब मैंने सब एरिया कमांडर को दी थी तो उन्होंने यही कहा था कि हम भारत के सैनिकहैं, मरते दम तक दुश्मन को मारेंगे और देश की आन, बान, शान पर आँच नहीं आने देंगे।

हमारे कमांडर ब्रिगेडियर त्रिपत सिंह बहुत ही जिन्दादिल व्यक्तित्व वाले अफ़सर थे। मैं उस समयकैप्टन था। सन् 2007 में जब मैं दिल्ली में पोस्टेड था तो एक दिन अचानक आर आर अस्पताल मेंउनसे मुलाक़ात हो गई।उस समय वह लेफ़्टिनेंट जनरल बन चुके थे।मैं ले. कर्नल था।

एक बार फिर अचानक मिलकर हम दोनों ही बहुत खुश थे। एक दूसरे के हालचाल जानने के बादउन्होंने उनके साथ आये अफ़सर से मेरा परिचय कराया कि मिलिये पंडित मिश्रा से। वह पहले भी मुझेपंडित जी ही कहते थे। मैं उन्हें सैल्यूट करता था और वह हाथ जोड़ कर नमस्कार करते थे और हमेशामुझे असमंजस में डाल देते थे।

आगे उन्होंने उन अफ़सर को बताया कि हम दोनों श्रीनगर में कारगिल आपरेशन के समय वहीं पोस्टेडथे। आज भी सेवानिवृत्ति के उपरांत इतने दिनों बाद भी हम कई अफ़सर जनरल त्रिपत सिंह से फ़ेसबुक के माध्यम से जुड़े हुये हैं। उनकी वही ज़िंदादिली आज भी देखने को मिलती है। सभी एक दूसरे को याद करते हैं।

ग़ज़ल

ऐलान

अतीश बुन्नू

दुश्मन ने सरहद पर हमको आज पुनः ललकारा है,
शायद अपनी मौत की खातिर, उसने फिर हुंकारा है।

हम तो प्यार के सौदागर हैं, हमने हाथ बढ़ाया था,
पर उसने तो चुपके–चोरी, पीठ पे खंजर मारा है।

बाँध कफ़न सर, लिए तिरंगा , हम आगे बढ़ते जाएंगे,
बलिदानों से नहीं डरेंगें,यह भारत देश हमारा है।

धरती तो जननी है मेरी,इसपर शीश चढ़ाएंगे,
भारत के बच्चे–बच्चे का गूँज रहा यह नारा है।

गद्दारों अब नहीं उठाना नज़र हमारी धरती पर,
उठी नज़र तो पाक न होगा, यह ऐलान हमारा है।

ज़िंदगी

आशीष मिश्रा

चार दिन की ज़िंदगी दो पल की जवानी है,
–हसरतें तमाम हैं फिर जिम्मेदारियाँ भी निभानी हैं
–दर्द में डूबकर खुशियों की तलाश है
–यही तो है ज़िंदगी बाक़ी सब मिराज़ है
–ख़्वाहिशों के बोझ तले तूने जब भी कुछ पाया है
–उसे खोने ना डर भी तो साथ में ही आया है
–और बात सिर्फ़ सुकून की है,
–फिर क़ैद क्या रिहाई क्या
–मोहब्बत क्या रुसवाई क्या
–दर्द क्या जुदाई क्या
–इसलिए थोड़ा सा वक़्त निकाल कर जी लो इसे
–कहीं ऐसा ना हो कि मन ख़्वाहिशों में ही उलझा रह जाये
–और हम ज़िंदगी को नहीं ज़िंदगी हमे जी कर चली जाये।

♦♦ शोध आलेख ♦♦

शोध आलेख

कृष्णपाल राणा (ज्ञानदीप)
शिक्षक, समाजसेवक, साहित्यकार शोधकर्ता
ग्राम पोस्ट बारदा (पखांजूर)
विकासखण्ड कोयलीबेड़ा
जिला उत्तर बस्तर कांकेर छत्तीसगढ़
पिन–494776

' 'आदिवासी वर्ग में क्यों महत्वपूर्ण है आम का त्यौहार ? प्रकृति की संरक्षण का संदेश देता है अक्तीआमा जोगानी तिहार – कृष्णपाल राणा'

सीसीआरटी नई दिल्ली से प्रशिक्षित शिक्षक कृष्णपाल राणा शोधकर्ता साहित्यकार, समाज सेवक नेकहा कि बस्तर में जनजाति समुदाय के लोग कोई भी फसल को जब तक सर्वप्रथम अपने गांव केदेवी देवता पेन पुरखा प्रकृति को अर्पित नहीं करते हैं तब तक प्रकृति की कोई फसल का उपयोग नहीं करते हैं।

आइए जानते है क्यों और क्या होता है आम का त्यौहार '(आमा तियार)' अक्ती (अक्षय तृतीया) के दिन मनाया जाता है, आदिवासी अंचल में हर त्यौहार का एक अलग महत्व रहता है आदिवासी संस्कृति शोध कर्ता लेखक कृष्ण पाल राणा जी ने बताया कि गांव में कोई भी नई फसल को तब तकउपयोग नहीं करते हैं जबतक वह फल खाने योग्य परिपक्व न हो और उस फल को अपने ईष्ट देवी, कूलदेवी देवताओं को अर्पण नहीं करते हैं. इसी परंपरानुसार इसे जीवन में बड़ी सहजता के साथ अपनेढंग से त्यौहार के रूप में आत्मसात कर लिया है. गांव के सभी घरों से अपने साथ थाली, कसेला, दियातेल, चांवल नारियल, अगरबती, धूप, घीं, तीली, आम, चार के ताजा फल, महूआ, दोनी, फरसा (पलाश) के पत्ता, उड़द, मूंग आदि सामग्री को लेकर गांव में नदी, नाला, तालाब, में जाते हैं. जहांजाम डारा द्वारा अपने कूलदेवी देवताओं के नाम से पानी के किनारे स्थापना करते हैं. वहां दियाजलाकर कसेला में शुद्ध पानी रखा जाता है. जहां चांवल, लाली, चार, महूआ, उड़द, मूंग, आम

आदिफरसा पत्ता में चढ़ाकर सेवा विनती करते हैं. कसेला की पानी, सेवा कि गई कूछ चावल , कच्चे आमकी कट्टी हुई प्रसाद को लेकर कतारबद्ध नहाकर भीगे कपड़े में रहकर महूआ पेड़, पिपल के पेड़. कुसकर घासं एवं गोबर के कंडे में पितरों पूर्वजो का नाम लेकर पानी देते हैं. यहां 3–3 बार पानी देते हैं.

इसके पश्चात वापस आकर कतारबद्ध होकर सूर्य को जल व चांवल आदि सामग्री अर्पण करते हैं

बचा हुआ चावल से एक दूसरे के माथे में टिककर प्रणाम कर एक दूसरे से भेंट करते हैं और आम, गुड़, नमक, मिर्च आदि सामग्री से बनाई गई प्रसाद सभी को वितरण करते हैं. एवं बचत प्रसाद को घर में लेकर परिवार के सभी सदस्यों को बांटते है. घर में भी अपने पितरों पूर्वजों को भी अर्पण किया जाता है.

उसके पश्चात सभी के घरों में आम का सब्जी बनाकर सभी को आमंत्रीत कर भोज कराया जाता है. इस प्रकार आदिवासी समाज आम का त्यौहार मनाते हैं. उसी दिन से आम, चार खाना प्रारंभ करते हैं.

इसी दिन अपने खेतों में कूछ मात्रा में धान बीज की बोवाई प्रारंभ करते हैं.

'कुछ खास तथ्य'

बस्तर में जनजाति समुदाय के लोगों की आमा जोगानी परब मनाने के कुछ वैज्ञानिक पहलू भी है

1. ईको सिस्टम संतुलित रहता है खट्टे आम की लालच में अगर छोटे अपरिपक्व फल खाने लगे तो फल बड़े होने से पहले ही खत्म हो जाएगा।
2. अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करना आम को अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करना भी एक प्रमुख कारण है। आम खाकर फेंके गएगुठली से ही वापस आम के पेड़ उगते हैं।
3. एसिड की अधिक मात्रा करती है स्वास्थ्य खराब आम के फल जब छोटे होते हैं तो एसिड की मात्रा अधिक होती है। ऐसे में होंठों के आसपास घावहो जाते हैं।
4. हो सकता है स्वास्थ्य संबंधी समस्या अगर चेर बंधने के पहले आम का सेवन किया जाता है और गुठली कोई बच्चा निगल जाए तो उसेस्वास्थ्य संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

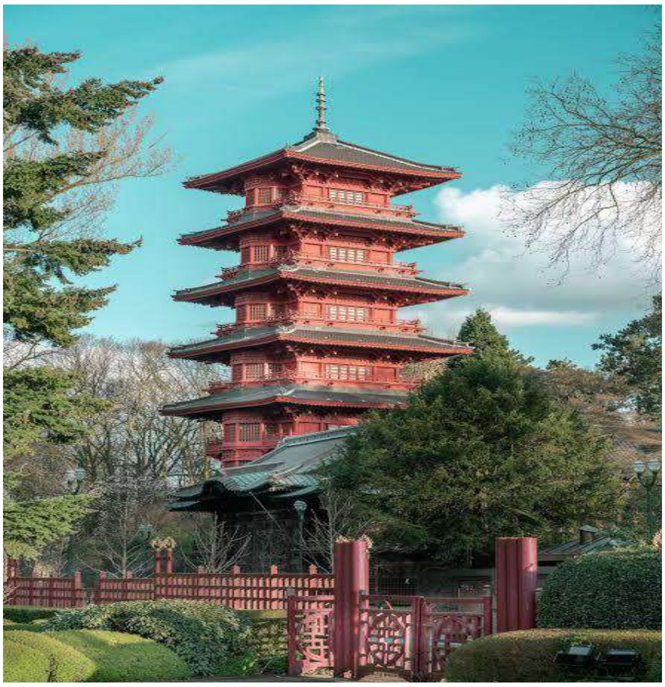

♦♦ आत्म परिचय ♦♦

डॉ0 सी0एल0 सोनकर

आत्म–परिचय के क्रम में आपका जन्म राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी की मातृभूमि तहसील–बिन्दकी के पास ग्राम–जैनपुर, पोस्ट जाफराबाद, जिला–फतेहपुर, उत्तर प्रदेश (भारत) में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री हीरालाल सोनकर व माता का नाम स्व0 सहरानी तथा दो छोटे भाई व दो छोटी बहनें हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती चन्द्रवती व पुत्र का नाम श्री सिद्धार्थ मित्र है। अन्य पारिवारिक सदस्यों में श्रीमती संघमित्रा, श्रीमती विनीत मित्रा व श्रीमती तुषार मित्रा आदि प्रमुख हैं। आपका पालन–पोषण व पारंपरिक शिक्षा–दीक्षा ग्रामीण सामाजिक जीवन में हुआ। प्राथमिक शिक्षा बेसिक प्राइमरी पाठशाला जाफराबाद; जूनियर हाईस्कूल–जाफराबाद; हाईस्कूल व इण्टरमीडियट–दयानन्द इण्टर कालेज बिन्दकी; स्नातक, विधिस्नातक व परास्नातक इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद; साहित्य रत्न–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज;. एम0बी0ए0–मानव संसाधन–राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद तथा पी–एच0डी0 व डी0लिट्– डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद से सम्पन्न हुयी।

जीवन में ऐसा व्यक्ति जिसने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया है वह माँ स्व0 श्रीमती सहरानी हैं, जिसने पिता व स्वयं के निरक्षर होने के बाद भी घरेलू, सामाजिक व आर्थिक विषम परिस्थियों को झेलते हुए दिन–रात खेती–किसानी व घरेलू कार्यों में कड़ी मेहनत करके पारिवारिक पालन–पोषण करके सबको अधिकाधिक शिक्षारत होने की प्रेरणा व संबल दिया तथा धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रवती ने भी बाल–विवाह होने के बाद भी उत्तरोत्तर आगे पढ़ने और बढ़ने में वे सब अधिकतम त्याग किए, जो उनके द्वारा किया जाना सम्भव था।

साहित्य की अभिरुचि होने का कारण यह है कि विद्यार्जन के काल में हिन्दी साहित्य, भाषा विज्ञान, गणित, अंग्रेजी, संस्कृत, अर्थशास्त्र, भूगोल, खगोलशास्त्र, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व, धर्मशास्त्र, विधिशास्त्र, मानवशास्त्र व जन्तु–मानव व्यवहार आदि को जानने व समझने का स्वर्णिम अवसर मिला प्राचीन इतिहास विषय पर शोध–शीर्षक 'भारतीय संस्कृति में जाति, अस्पृश्यता और सामाजिक गतिशीलता' पर डी0लिट्0 उपाधि हेतु शोध–कार्य के दौरान लगभग उत्तर भारत में दसवीं शताब्दी ईसवी के संत गोरखनाथ व उनकी परम्परा तथा दक्षिण भारत में आलवार व नायनार संतों सहित बसव तथा उनकी विचारधारा के संत साहित्य आदि का भी अध्ययन करने का अवसर मिला, तदोपरान्त मध्यकालीन सन्त साहित्य व उनके पंथों–मतों तथा विभिन्न पुस्तकालयों व ग्रन्थों के अध्ययनोपरान्त ऐतिहासिक ज्ञान के साथ संत–काव्य साहित्य में भी अभिरुचि बढ़ती गयी। इसके बाद उत्तर भारत के संत साहित्य का अध्ययन करने के उपरांत उत्तर प्रदेश के अलावा भारत के राज्यवार संतों व उनकी सामाजिक विचारधारा को समझने व लिखने की जिज्ञासा ने कई कृतियों की रचना करने का संबल दिया।

अपनी शासकीय सेवाओं को निष्ठा से करते हुए अपने आराम के समय को कम करते हुए वर्ष 2009 से लेकर अब तक लगातार साहित्य सृजन–कार्य में अब तक साहित्य एवं समाज विषयक प्रकाशित पुस्तकों में 1. 'भारत मे ं अस्पृश्यता एक ऐतिहासिक अध्ययन', 2012, 2. 'अनटचेबिलिटी इन इण्डिया' 2019, 3. 'उत्तर प्रदेश के लोकधर्मी कवि एवं समाज', 2020, 4. 'उत्तर प्रदेश की कवि साधना का चार सौ पच्चीसा', 2022 तथा 5.'दक्षिण भारत के संत कवि' प्रमुख हैं। इन पुस्तकों की लिखी गई सम्मतियों में मा0 उच्चतम न्यायालय के जज श्रीमान् मार्कण्डेय काटजू, न्यायमूर्ति श्रीमान् रविन्द्र सिंह, न्यायमूर्ति श्रीमान् संजय मिश्रा, लोक आयुक्त उ0प्र0; न्यायमूर्ति श्रीमान् अमरेश्वर प्रताप शाही, निदेशक राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी, भोपाल व भू0पू0 मुख्य न्यायाधीश पटना एवं मद्रास उच्च न्यायालय; न्यायमूर्ति श्रीमान् अंजनी कुमार मिश्र सहित कई देश–विदेश के विभिन्न मूर्धन्य विद्वानों ने अपने अभिमत दिए हैं तथा विभिन्न विषयों पर अन्य पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं, जिनमें भारत के संत कवि भाग 1 व 2, मानव की विभिन्नताएँ प्रमुख हैं। इनके अलावा लगभग चालीस लेख व शोध–पत्र विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। 'लो बॉर्न–हाइब्रिड कास्ट्स एण्ड देयर ओरिजिन एण्ड डेवलपमेंट' नामक शोध–पत्र–प्रोसीडिंग्स ऑफ दि 'इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस', 75वाँ सेसन, जे0एन0यू0 नई दिल्ली, 2014, तथा 'कास्ट ऑफ दि ब्लाइट, इन दि लाइट ऑफ सोनकरस वर्क' के रूप में अति सम्मानित न्युज पेपर 'द हिन्दू', में रिव्यु में छपा है।

उ.प्र. शासन की प्रशासनिक सेवा में रहकर यहाँ के ग्रामीण व जिलास्तरीय विभिन्न प्रकार की प्रशासनिक व विकास सम्बन्धी, सामाजिक, आर्थिक समुदायगत व अन्य जन–समस्याओं का समाधान कराने व आम–जनों की दशा–दिशा को भी जानने–समझने का अवसर मिला। प्राप्त सम्मान पत्रों में 1.'समन्वय श्री' सम्मान, अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल, वर्ष–2012, 2.रविकुमार बनर्जी सम्मान, महादेवी वर्मा चेतना श्री/कामना श्री सम्मान, इलाहाबाद,

वर्ष– 2012, 3. अमृतलाल नागर पुरस्कार, कृति–भारत में अस्पृश्यता एक ऐतिहासिक अध्ययन, 2012–13, 4.उत्कृष्ट हिन्दी सेवा सम्मान, विश्व हिन्दी ज्योति, कैलिफोर्निया, अमेरिका, वर्ष–2020 प्रमुख हैं। आवेदक की साहित्यिक सेवा को देखते हुए 'साहित्यकार डॉ0 सी0एल0 सोनकर : सृजन एवं आयाम' शोध–शीर्षक पर पी–एच0डी0 उपाधि हेतु हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 विनय कुमार, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार के निर्देशन में शोध–कार्य कराया जा रहा है। शोधार्थी आगे भी साहित्य–सेवा करने के लिए तत्पर है।

आप वर्तमान में वरिष्ठ पी0सी0एस0 अधिकारी व प्रशासनिक अधिकारी के रूप में जनपद कुशीनगर में सेवारत है। एक प्रशासनिक अधिकारी होने के नाते ऐसा लगता है कि समाज में हर प्रकार का भेद–भाव समाप्त होना चाहिए, व्यक्ति की गरिमा में वृद्धि होनी चाहिए, सभी को अवसर की समानता होनी चाहिए, आपसी एकता और समरसता तथा आर्थिक बराबरी के साथ भ्रष्टाचार की समाप्ति व आवश्यक आवश्यकताओं के अनुसार ही उपभोग करने की प्रवृत्ति, व्यावहारिक व उपयोगी शिक्षा प्रणाली तथा त्वरित न्याय प्रणाली को प्रभावी बनाने के लिए और अधिक कारगर उपाय होने चाहिये। भारतीय संविधान में भी समता का अधिकार एक मौलिक अधिकार के रूप में प्रवृत्त है। व्यक्ति को उसके किए गए वास्तविक कार्यों के आधार पर उसे पारिश्रमिक, सुख–सुविधाएँ आदि दिया जाना चाहिए, जिससे मानवीय एकता के साथ देश बन्धुत्त्व व विश्व बन्धुत्त्व की दिशा में बढ़ने मे ं सफलता हासिल हो सके।

आज भी

डॉ. शिप्रा मिश्रा

आज भी..
देखा मैंने उसे
पानी में खालिश
नमक डाल कर
उसने मिटाई
अपनी भूख

आज भी––
खाता है वह
सिर्फ रात में ही
कभी– कभी तो
वह भी उसे
होता नहीं नसीब

आज भी––
उसने जम के
पसीने बहाए
ढेर सारे और
दिन भर की है
ईमानदारी से मजूरी

आज भी––
मिलते हैं
उसके बच्चे को
पोषाहार और
पोशाक के पैसे
सरकारी स्कूल से

आज भी––
उन पैसों से
खरीदता है वह
कुछ बकरियाँ
देता है बटईए पर
मुनाफे के लिए

आज भी––
टूटे छप्पर के
चंद दिनों की
मरम्मती के लिए
लिए हैं कुछ
पैसे सूद पर

आज भी..
उसकी घरवाली
चौका– बरतन के लिए
गई है लोलुप भेड़ियों के
अंधेरे माँद में बेखौफ
सब कुछ जानते हुए

आज भी––
कहने को
आजाद देश में
वह सो नहीं पाता
सुकून– चैन की
मुकम्मल नींद

और..

आज फिर––
मेरी पोटली में
नहीं हैं चंद अल्फ़ाज़
उसकी दबी हुई
आवाज को
दूर– दूर तक
पहुँचाने के लिए..

♦♦ आलेख ♦♦

वेदों की उपादेयता

डॉ. गायत्री पाण्डेय
नोएडा

भारतीय परम्परा वेदों को ज्ञान का परम पवित्र कोश मानती है। सायण ने अपने ऋग्भाष्य के मंगलाचरण में वेदों को भगवान का श्वास कहा है– ''यस्य निश्वसितं वेदाः।[1] मनु ने वेदों को पितरों, वेदों एवं मनुष्यों का सनातन चक्षु बताया है– 'पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्।[2] यहाँ चक्षु से ज्ञान का अभिप्राय लिया जा सकता है क्योंकि ज्ञान ही जीवन का रास्ता दिखाता है। डॉ बलदेव उपाध्याय के अनुसार– ''वेद ज्ञान के वे मानसरोवर हैं जहाँ से ज्ञान की विमल धाराएँ विभिन्न मार्गों से बहकर भारत के ही नहीं, समस्त जगत के प्रदेशों को उर्वर बनाती है।''[3] वेदों को भारोपीय परिवार का सर्वप्रथम लिखित प्रमाण[4] माना गया है।[5]

वैदिक मंत्रों में जनसामान्य या लोकजीवन के सुख दुःख उनके ताप–संताप, इच्छाएँ, आकांक्षाएँ भी झलकती हैं। लोकजीवन का अपना संगीत है, अपने गीत हैं, अपने रीति–रिवाज हैं पर सर्वत्र एक सार्वभौमिकता है। 'स्वस्तिभाव' जिसे आज 'वैलबिइंग' कहा जाता है वह वेदों का मूलभाव है। 'स्वस्ति' – 'सु+अस्ति'–अर्थात् सुन्दर अस्तित्व–सुन्दर अस्तित्व के पीछे तन, आत्मा सबका सौन्दर्य निहित है। स्वास्थ्य केवल तन का नहीं होता मानसिक स्वास्थ्य भी होता है। बल्कि देखा जाए तो मानसिक स्वास्थ्य ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। मानसिक रोगों की भयंकरता से जूझती इस सदी के लिए वेद के स्वस्तिमंत्र संजीवनी है।

चिर –पुरातन होते हुए भी नवीनता के प्रति गहन ललक से परिपूर्ण है वेद। 'नव्यता' का सम्मान करते हैं प्रगतिशीलता के धर्म को प्रतिपादित करते हैं। यही कारण है कि यहाँ नवाचार' (Innovation) के विषय में भी पर्याप्त संकेत मिलते हैं। मनुष्य के जीवन में यदि 'नवाचार' न हो तो जड़ता घनीभूत हो जाएगी, जीवन पंगु हो जाएगा। आधुनिकयुग में भी हर मोड़ पर 'नवाचार' प्रतिष्ठित होना चाहिए, यथास्थिति में, यथाभाव में न रहकर जीवन में उत्साहित रहें, प्रेरित होते रहें, नवीन चिंतन करते रहें। चिंतन को कर्म में तथा शोध में परिणमित करते रहें–यही वैदिक आदर्श है जो आज भी प्रासंगिक है।

वैदिक विवाह संस्था का रूप भी आधुनिकता के बहुत करीब है। वहाँ पति–पत्नी दोनों समानता के स्तर पर हैं कोई किसी से छोटा या किसी से बड़ा नहीं। स्त्री को परिवार में 'सम्राज्ञी' का स्थान देने वाला स्वर्णिम समाज था वह। संस्कृति के विविध आयाम होते हैं। वैदिक संस्कृति की अपनी विशेषताएँ रही हैं। वह विश्व द्वारा वरणीय संस्कृति है। उसकी 'सार्वभौमिकता' व्यक्ति का, समाज का, तथा राष्ट्र का परिष्कार करती रही है तथा सबको सुसंस्कृत करती रही है। 'व्रत' शब्द ऋग्वेद से लेकर आज तक प्रचलित रहा है। अपनी सुदीर्घ यात्रा करते–करते यह शब्द 21 वीं सदी के भारत में 'अनाहार' के रूप में कर्मकाण्ड से जुड़ा है। वैदिक सन्दर्भों में 'व्रत' संकल्प, त्याग तथा नैतिकता के भावों को समेटे हुए है। 'व्रत' का एक रूप है 'सत्य'। 'सत्यमेव जयते' यह मुण्डकोपनिषद् का वाक्य हमारे देश का, हमारे राष्ट्र का ध्येय वाक्य है।

वृक्षों वनस्पतियों तथा औषधियों के वर्णन खूब प्रचुरता से वैदिक वाङ्मय का हिस्सा बने हैं जो पर्यावरण–संरक्षण के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। 'अश्व' और गरुड़ अर्थात् 'सुपर्ण' दो ऐसे प्रतीक हैं जो पशु जगत तथा पक्षी जगत से विशेष नाता जोड़ने वाले हैं। बल, शक्ति व गति का यह प्रतीक अश्व सभी देवों के रथों में तो जुता ही है बहुत बार सूर्यादि देवों से भी समीकृत हो गया है। आज तक 'अश्वबल' (Horsepower) शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार से गरुड़ अर्थात् 'सुपर्ण' सुन्दर पंख वाला भी एक सुन्दर प्रतीक है। 'एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति' वाले मंत्र में 'सुपर्णः गरुत्मान्' को परमतत्व से समीकृत कर दिया गया है। वास्तव में वैदिक ऋषि प्रतीकों के प्रयोग से, उनके माध्यम से अपने दार्शनिक अनुभवों को अभिव्यक्ति देते हैं।

'सर्वं वेदात् प्रसिध्यति' मनु के वचनानुसार वेद से ही सब ज्ञान, सब विज्ञान प्रमाणित होते हैं। वेद तो है ही ज्ञानमय, विज्ञानमय। विज्ञान–विशिष्ट ज्ञान होता है। यद्यपि आज भौतिक रसायनादि शास्त्रों के लिए 'विज्ञान' शब्द का प्रयोग होता है। वेद में अलौकिक तथा लौकिक दोनों तत्त्वों की मीमांसा हुई है। वैदिक ऋषि की अन्वीक्षण क्षक्ति से खोजे गए तथ्य तथा उनकी अनुभूतियाँ हैं तो दूसरी ओर लौकिक तत्व हैं उनका अन्वेक्षण है। 'भू' के गर्भ में क्या–क्या छिपा है–कैसे भूगर्भविज्ञान मानव–जीवन के इतिहास को बताता है– यह तथ्य वर्णित हुए हैं। 'जल जीवन है, अमृत है–यह तथ्य चिर–पुरातन काल में जितना ज्ञात था उतना ही आज

भी है। अत्यन्त समृद्ध वैदिक संस्कृति में जल के 101 पर्याय हैं। विश्व की अन्य किसी भी भाषा में इतने पर्याय नहीं मिलते। जल के विभिन्न रूप, उसकी रोग निवारक शक्ति, उसके संरक्षण के एक से बढ़कर एक सूत्र यहाँ विद्यमान हैं जो जल संकट और जल–प्रदूषण से जूझते विश्व के लिए आज भी कम प्रासंगिक नहीं। 'ऋतुविज्ञान' के अंतर्गत विभिन्न मौसम उनसे जुड़ा ऋतुचक्र, उनमे होने वाली वनस्पतियों की चर्चा है। मौसम विशेषज्ञों द्वारा मौसम की भविष्य वाणियाँ की जाती हैं। मौसम बदलते हैं– मौसम से मनुष्य का 'मूड' बदलता है। प्रतिकूल मौसम को इंसान कोसता भी है। पर वेद ऋतुओं की विशेषताएँ बताते हुए सबको ही रमणीय, सुन्दर बताता है।

'वास्तु' अर्थात् 'निवास'–अर्थात् घर–कार्यालय आदि सबके निर्माण में एक विशेष तकनीक जरूरी होती है। यही कारण है मनुष्य के सुखमय अस्तित्व के लिए जरूरी घर तथा उसके कार्यस्थलके लिए प्रयुक्त आने वाला भवन सर्वत्र 'वास्तुशास्त्र' के नियमों की अपेक्षा रहती है। यही नहीं आज की 21वीं सदी में गृह निर्माण –तकनीक के अत्यधिक विकसित होने के बावजूद घर–भवन के सौख्य औरउसमें निवास व काम करने वाले जनों के कल्याण के लिए कुछ ऐसे सूत्र हर देश की संस्कृति में ढूँढ़े गए हैं। चिर प्राचीन वेदों में वास्तुविद्या का मूल 'वास्तोष्पतिः' नामक देव सम्बोधित सूक्तों में विद्यमान है। इन सूक्तों में मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता (रोटी, कपड़ा, मकान) का मनोवैज्ञानिक आधार वर्णित हुआ है।

वैदिक विचारधारा आशावाद से ओतप्रोत है। ऋग्वेद की देव स्तुतियों में अधिकतर अच्छी प्रजाएँ, वीर पुत्र, धन के स्वामित्व तथा सैकड़ों वर्षों तक के शानदार जीवन की कामनाएँ की गई हैं।6 ऋग्वेद में निराशावाद की झलक भी दिखाई नहीं देती। इसके अतिरिक्त व्यावहारिक जीवन के लिए उपयोगी विश्वबन्धुत्व7, लोककल्याण8 एवं दान9 आदि की उदात्त भावनाएँ भी ऋग्वैदिक मंत्रों में उपलब्ध होती हैं।

संदर्भ

1 सायण के ऋग्भाष्य का मंगलाचरण।

2 मनुस्मति 12/94

3 डॉ0 बलदेव उपाध्यायः वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृ9 8

4 लक्ष्मण शास्त्री जोशी के 'वैदिक संस्कृतीचा विकास' विषय पर व्याख्यान नं0 1 का डॉ0 मोरेश्वर दिनकर पराडकर द्वारा किया गया अनुवाद, पृ0 36।

5 डॉ0 एस0एन0 दासगुप्ता : ए हिस्ट्री ऑफ ण्डियन फिलासफी, वाल्यूम 1, पृ0 10। मैक्डानल : वैदिक रीडर : इण्ट्रोडक्शन, पृ0 11।

6 ऋक्. 1/31/7

7 ऋक्. 1/75/4, 164/33

8 ऋक्. 1/114/1, 7/54/1

9 ऋक्. 10/107/5, 119/1

बेबसी

विनीता रानी विन्नी

बेबसी में किया अपनों से किनारा मैने.
टुकड़े–टुकड़े ही सही खुद को संवारा मैने.

संग–ए–दिल बन के लूटते रहे जो मेरा जहाँ,
उसी दर्द–ए–निहा को दुख में उतारा मैने.

सब खरीददार ही लाचार नजरस9 आये जब,
खुद को बाजार–ए–मोहब्बत में उतारा मैंने.

तुमको नमन माँ भारती

–डॉ. आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

तुमको नमन माँ भारती!/तुमको नमन माँ भारती,
उर–मंदिर तुम ही सँवारती,/पूजन, अर्चन दीप अर्पण,
हम तेरी उतारें आरती।
तुमको नमन माँ भारती, तुमको नमन माँ भारती!
रक्त का मस्तक तिलक लगा/शीशों के पुष्प तुम्हें चढ़ा
वीरों ने प्राण दिए गँवा
जब सुना तुम्हें सिसकारती
तुमको नमन माँ भारती, तुमको नमन माँ भारती!
लें प्रण कि तुम आजाद रहो,
हर धड़कन में आबाद रहो।
स्वर में घुलता आह्लाद रहो,
हर श्वास यही है पुकारती।
तुमको नमन माँ भारती, तुमको नमन माँ भारती
हम तेरी उतारें आरती।

♦♦ आलेख ♦♦

तेरे आंसू कीमती हैं, माते

अभिषेक चंदन

महर्षि चुन चुन पाण्डेय ने ब्रिटिश साम्राज्य के खात्मे की कसम खायी थी। ढाका अनुशीलन समिति की अतिगोपनीय तरह से स्थापना और फिर छद्म रूप से इस के संचालन में इस तरह सक्रियता रही कि अंग्रेजों की नींद उड़ी रहती थी। पूरा ब्रिटिश प्रशासन इनसे खौफ खाता था।

ऐन केन प्रकारेण ब्रिटिश हुकूमत ने इन्हें 12 वर्षों तक लाहौर में कैद कर रखा था। बहुत ही विकट समय था वह। निकट सम्बन्धियों द्वारा इस स्थिति का दोहन और घात ; इनके ज्येष्ठ पुत्र, वीर सच्चिदा के खिलाफ अंग्रेजी सरकार का देखते ही मार देने का आदेश था– 'shoot at site order'!

एक दिन डॉ परमानन्द पाण्डेय ने अपनी माता जी को अकेले में रोते देख लिया।

इन्होंने अपनी मां को कहा– **"मत रो माते, तेरे आंसू कीमती हैं।"**

बताते हैं, इसके बाद इनकी माता जी को फिर कभी किसी ने रोते नहीं देखा– चाहे परिस्थितियां कितनी भी विकट रही हो।

जब भी टी वी चैनलों पर, या समाचार पत्रों में किसी शहीद की माता या पत्नी के आंसू भरे चेहरे देखता हूं तो मन काफी विचलित हो उठता है; फिर डॉ पाण्डेय की बात स्मरण हो आती है–

"मत रो माते, तेरे आंसू कीमती हैं।"

(आलेख : अभिषेक चन्दन

एडिटर इन चीफ : मैग्पाय–फैशन मैगजीन)

डाक–तार विभाग द्वारा क्रांति नायक महर्षि चुन चुन पाण्डेय की स्मृति में जारी डाक कवर।

'हिन्दी की गूंज' के स्वाधीनता अंक के लिए यह सामग्री मैं ने अभिषेक चन्दन जी (Editor in Chief : 'MAG-PIE' an e- Fashion magazine) से विशेष अनुरोध कर मंगाया है।

महर्षि चुन–चुन पाण्डेय पर डाक तार विभाग (भारत सरकार) ने एक डाक कवर भी जारी किया था।

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर MAGPIE EXTRIM PVT LTD के तत्वावधान में 'MAGPIE' पत्रिका की और से एक लघु फिल्म 'अक्षत पुष्प' रिलीज की गयी थी जिसमें 75 स्वाधीनता संग्रामियों का चवतजतंल किया गया था।

महर्षि चुन–चुन को चवतजतंल किया है स्वयं अभिषेक चन्दन ने।

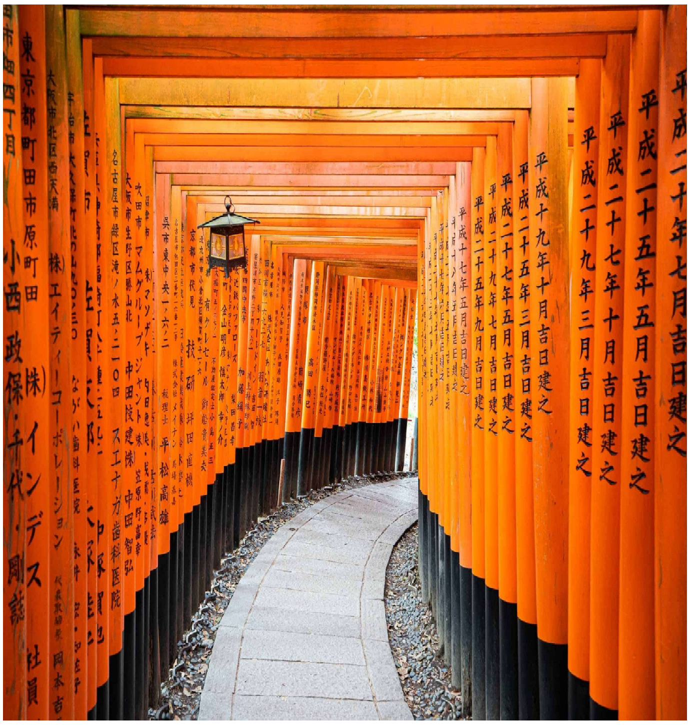

♦♦ लेख ♦♦

स्वतंत्रता दिवस

अंशु जैन, देहरादून

स्वतंत्रता दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है। इसे प्रतिवर्ष 15 अगस्त को समस्त भारतीय नागरिक हर्ष औरउल्लास के साथ मनाते हैं।

अंग्रेजों के राज में भारतीय नागरिकों के साथ गुलामो के जैसा क्रूर व्यवहार किया जाता थास उनकाआर्थिक शोषण किया जाता था उन्हें किसी भी कार्य को करने के लिए किसी भी तरह की कोईस्वतंत्रता नहीं थी। ब्रिटिश अधिकारियों के नियंत्रण में भारतीय रियासतों के शासक एक कठपुतलीकी तरह कार्य करते थे।

हमें 15 अगस्त सन् 1947 को अंग्रेजी कुशाशन से स्वतंत्रता तो मिल गई लेकिन हम इस अनमोलस्वतंत्रता का अब तक किस तरह से इस्तेमाल करते हुए आये हैं, यह भी विचारणीय है। स्वतंत्र भारतका नागरिक होने के नाते हमारा सबसे पहला कर्तव्य है, भारत की स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए सततउन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहें। आज हम सब स्वतंत्र हैं लेकिन इसका यह मतलब बिल्कुल भी नहीं हैकि हम स्वतंत्रता के नाम पर जो चाहे वो करें। सभी नागरिकों को स्वतंत्रता बनाये रखने के लिएसंविधान की सीमा में रहते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वाह भी पूरी जिम्मेदारी से करना है।

स्वतंत्रता दिवस का जश्न मनाने के साथ–साथ अगर हम स्वतंत्रता के सही अर्थ को भी समझ लें, तोहम एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं, जिससे हमारी आने वाली पीढ़ी हम पर और हमारीविरासत पर गर्व महसूस करेस

इस दिन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु ने लाल किले के लाहोरी गेट पर राष्ट्रीयध्वज फहराया था। इसी प्रथा के चलते प्रत्येक वर्ष हमारे देश के प्रधानमंत्री लाल किले पर झंडाफहराते हैं। इस प्रकार हम देश की आजादी के लिए बलिदान देने वाले वीर शहीदों व स्वतंत्रतासेनानियों को याद करते है।

स्वतंत्रता दिवस का यह उत्सव भारत के प्रत्येक कोने में आनंद और उमंग से मनाया जाता है, लेकिनभारत की राजधानी दिल्ली में इस उत्सव का विशेष रूप से आयोजन किया जाता है। लाल किला इसउत्सव का प्रमुख स्थल बन गया है। लाल किले के मैदान में एकत्रित होकर दिल्ली और दिल्ली केबाहर से आये लोग स्वतंत्रता दिवस के समारोह का आनंद लेते हैंस लाल किले के प्रांगण में कई सांस्कृतिक कार्यक्रमो का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर देश के सभी राज्य अपनी–अपनी लोकसंस्कृति और परंपरा को खूबसूरत झांकी के द्वारा कार्यक्रम में प्रदर्शित करते हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने पर 75 हफ़्ते लंबे "आजादी का अमृत महोत्सव" कार्यक्रम साबरमती आश्रम से शुरू किया था.

झंडा रोहण के पश्चात् जल, स्थल तथा वायु सेनाओं की टुकड़िया ध्वज को सलामी देती हैं तथाप्रधानमंत्री इस अवसर पर देशवासियों को सन्देश देते हैं लिए

दे सलामी इस तिरंगे को
जिससे तेरी शान है,
सिर हमेशा ऊँचा रखना इसका जब तक दिल में जान है...!!

जय हिन्द

स्वतंत्रता दिवस

सरोज आहुजा
पानीपत

सा कि सबको पता है 15 अगस्त भारत का राष्ट्रीय त्योहार है। जैसे जैसे यह दिन नज़दीक आता जाता है,हमारे दिलों में राष्ट्र के प्रति भावनाएँ जागृत होनें लगतीं हैं और हम सब खुशियों में डूब जाते हैं। इस दिन हम उन सभी को याद भी करते हैं जिनकी कुर्बानी से हमें यह आज़ादी मिली। पर इतने से ही काम नहीं बनता, हमें इससे आगे भी कुछ करना चाहिए। हमें अपने देश के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव रखनें चाहिएँ और हमारी यह आज़ादी बनीं रहे,इसके लिए प्रयास भी करने चाहिए। अपने देश के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की भावना और विचारों को सुनना व समझना चाहिए न कि विरोध करके देश में विद्रोह भड़काना चाहिए और न ही देश की संपत्ति को नुक़सान पहुँचाना चाहिए। आखिर यह संपत्ति हमारी ही तो है।हमारे पैसों से ही तो बनीं है। हम जो टैक्स देते हैं उन पैसों से ही देश की तरक्की होती है और हम खुद ही अनजाने में या किसीके बहकावे में इसे नष्ट कर देते हैं।

हमें अपने देश को बचाना है तो अपने धर्म और अपनी संस्कृति को बचाना होगा, इसकी रक्षा करनी होगी। वर्ना कोई गौरी ,कोई गज़नवी ,कोई ईसाई आ के इसे लूट के ले जाएगा और आपको पता भी नहीं चलेगा कि कैसे उसने आपके दिमाग का परिवर्तन कर दिया।

♦♦ लेख ♦♦

हमारा स्वराज्य

हरीश नवल
65 साक्षरा अपार्टमेंटस
ए–3 पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063
मो. 9818999225
Email : harishnaval@gmail.com

अपना राज सन् सैंतालीस की आधी रात से हुआ और हम गुलामों की पंक्ति से बाहर हो गए। गुलाम पृथक होकर कहाँ किस ओर जाए, यह समस्या देश के सामने भी की और कर्णधारों के सामने की। उन्हें यह निदान समझ आया कि वे मालिकों की पंक्ति में खड़े हो जाएं, सो उन्होंने महात्मा तथा असंख्य नामी, अनामी क्रांतिवीरों के सौजन्य से टूटी बेड़ियाँ को पैंफका और अपना लक्ष्य मिल्कियत कर लिए जिसके लिए वे जिये अथवा नहीं पर तब मरे जा रहे थे।

अब लगा सब हमारा है। नवसंस्कार प्रदान किए गये कि स्वराज्य में सब कुछ 'स्व' यानि अपना ही है। जब सब कुछ अपना सा लगता है तब वास्तव में कुछ भी अपना नहीं कहलाता। हमने कर्णधारों से एकलव्य की भाँति दीक्षा ली कि 'स्वराज्य' हम सब की कॉमन जायदाद है। कॉमन जो हो जाए वह किसी का नहीं होता – वह बाद में जान पाए। दस फ्लैटों के गलियारे की बत्ती अक्सर गुल रहती है क्योंकि उसकी जिम्मेदारी किसी एक ही नहीं होती।

स्वराज्य क्या मिला, हमें लगा कि हम इंग्लैंड के राजा बना दिए गए हैं। हमारी यह इकाई स्वयं को राजा ही मानती रही। जरा सोचिये उस इंग्लैंड की क्या दशा होगी, जिसके कई करोड़ राजा होंगे। राजाओं ने क्या किया? कहा गया था, फ्हम लाए हैं तूपफान से कश्ती निकाल के, इस देश को रखना मेरे बच्चे संभाल के।‘ परंतु बच्चे तो बन बैठे राजा, कहाँ कहाँ क्या क्या संभाला, उन्होंने तो छीना गेहूं बोने वाले से निवाला, व्यापार के नाम पर घोंटाला, मुद्रा आर्जित करने के नम पर हवाला और धीरे–धीरे दिवाला।

जिस स्वराज्य को पाने के लिए हज़ारों देशभक्तों ने बलिदान किए, हमने उसे क्या किया? अरे बाज़ार उसे मानो नीलाम कर दिया। जिस देश को आज़ाद करवाने के लिए सैकड़ों वर्षों से निरंतर बलिदानी गाथाएँ सुनने को मिल रही थी – क्या सच्ची आज़ादी पा सका? कर्णधारों ने लोकतांत्रिक प्रणाली की धज्जियाँ बरसों बरस लगातार उड़ाई।

रजवाड़े मिटा दिए, प्रिवी पर्स बंद कर दिए गए नवकर्णाधारों के रजवाड़े, पूफलने लगे, पफलों से लदने लगे और शीघ्र ही 'खादी', 'टोपी' और 'नेता' के अर्थ बदल गए– सामान्य से विशेष हो गए। राजनीति भी ऐसी बदली कि उसमें की काली नीति काले नोटों को सपेफद वोटों में तब्दील करने के लिए शहीद हो गई। वोटों और नोटों की चोटों के बीच निरीज खड़ा 'बह' जो स्वराज्य मिलने पर गर्व से पूफल उठा था, लाल प्राचीर के सामने खड़ा होकर 'जयहिंद' के नारे लगाता रहा, अपनी अंटी सौंपता रहा, उस 'आम आदमी' के पल्ले केवल 'नारे' ही पड़े।

कैसा था मिलने वाला स्वराज्य जहाँ खेने वाला ही नाव डुबोने में तुल गया, जहाँ घर को आग घर के चिरागों से ही लगी। शताब्दियों से अर्जित संस्कृति धू–धू करने लगी। नव कुबेर संस्कृति पनपने लगी और राजपुत्रा–पुत्रिायां अपने विकास ग्रंथों का निर्माण स्वयं करने में जुट गए।

यह तो शुक्र है कि उन कर्णधारों की कलाई खोलने वाले भी सक्रिय हो गए और टोपियों के रंग कहीं कहीं बदलने लगे, बदलते रंग अधिकतर तो बदरंग हुए किंतु कुछ रंग इंद्रधुनीषीय भी आए जिन्हें देख बसंत की संभावनाएँ भी बनने लगी।

बहरहाल–संभावनाएँ संभव हो यह आभास बन रहा है, हो सकता है स्वराज सच में हमारा हो सके। यह सच तभी सच होगा जब हम, आप और 'वे' स्वयं भी 'सच' का ही प्रयोग करेंगे और झूठ से परहेज करेंगे।

आइए उस 'स्वराज' की कामना करें।

♦♦ बाल आलेख ♦♦

विचार संप्रेषण की आजादी

मानस बिनानी

अनेक विविधताओं से भरा भारत, 'अनेकता में एकता' के लिए जाना जाता है। यही एकता उसको आज़ादी की ओर ले गयी और आज, भारत अपनी आज़ादी की हीरक जयंती मना रहा है। भारत एक लोकतंत्रात्मक गणराज्य है। संविधान सभा के सदस्य १६३५ में स्थापित प्रांतीय विधान सभाओं के सदस्यों द्वारा अप्रत्यक्ष विधि से चुने गए। फिर साल १६४६ के दिसंबर महीने में एक संविधान सभा का गठन किया गया। कुल ०२ साल ११ महीने और १८ दिनों में बनाये गए संविधान को भारत की संविधान सभा ने २६ नवम्बर १६४६ को अपना कर २६ जनवरी १६५० से लागू कर दिया। इस संविधान को संविधान सभा ने बहुत गहन विचार कर और भविष्य को परख कर बनाया था।

'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' इसी संविधान का एक अंश है जो अनुच्छेद १६ के तहत भारत के सभी नागरिकों को यह आजादी देता है कि वे बिना किसी के दबाव में रहकर अपने विचार रख सके, भाषण दे सके और अपने या किसी और के विचार की चर्चा परिचर्चा कर सके। पर क्या हम इस स्वतंत्रता का उचित लाभ उठा पा रहे हैं ? क्या यह स्वतंत्रता केवल कागजी है ? मेरे विचार से नहीं। देशवासियों को उनके मौलिक अधिकारों से बोध कराता हमारा संविधान उन्हें यह पूरा अधिकार देता है कि यदि उनको सरकार या किसी संस्थान के किए गए किसी भी प्रकार के कार्य से आपत्ति है, तो वे तर्क सहित उसका विरोध करें और उस कार्य में बदलाव या उसे वापस लेने की माँग करें।

यहाँ यह आवश्यक है कि विचारक मन से मज़बूत रहे अर्थात अपनी बात पर अडिग रहना जरूरी है क्योंकि यदि आप सही राह दिखाएँगे तो आप पर उँगली उठाने वाले दस खड़े हो उठेंगे अर्थात एक व्यक्ति की बात दूसरा व्यक्ति दबाने की कोशिश करेगा या उसकी बात की गलत व्याख्या निकाल, उसे डरायेगा, धमकायेगा। बहुत बार ऐसा भी होता है कि अगर किसी वक्ता की बात श्रोताओं को उचित नहीं लगती है तो वे उग्र हो जाते हैं और सरकार को दोष देने लगते हैं और कहने लगते हैं कि हमारे पास तो अभिव्यक्ति की कोई स्वतंत्रता ही नहीं।जबकि श्रोताओं को वक्ता की बात को केवल विचार के रूप में लेना चाहिए। यह भी जरूरी है कि विचारक केवल अपने तथ्यों को सामने रखे, न कि उससे श्रोताओं को उकसाये।

हम सिनेमा जगत को अभिव्यक्ति की आज़ादी का एक सशक्त उदाहरण मान सकते हैं। साथ ही साथ, इससे बड़ी क्या बात कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने मन की बात के माध्यम से देश के युवा वर्ग या अन्य वर्ग को एक मंच प्रदान कर उन्हें अभिव्यक्ति के अधिकार से वंचित नहीं रहने दिया।

ध्यान रखें अभिव्यक्ति की आजादी कुछ सीमा के साथ मिलती है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19 अभिव्यक्ति की आज़ादी देता है, हालांकी अनुच्छेद 19 के खण्ड 2 से 6 में यह उल्लेखित है कि अभिव्यक्ति की आज़ादी का अधिकार निरपेक्ष नहीं है यानि इसकी भी कुछ सीमाएँ हैं।

अब निष्कर्ष के तौर पर यही बताना चाहूँगा कि " अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता न होने पर हम आजाद रहकर भी गुलाम हैं" और इसी दृष्टांत के साथ अब मैं यह आग्रह करना चाहूँगा कि प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह अपनी अभिव्यक्ति के अधिकार को सुरक्षित एवं गरिमामय रखे ।

नाम : मानस बिन्नानी

उम्र : १६

कक्षा : ग्यारहवीं

पता : जय नारायण व्यास कॉलोनी , बीकानेर ३३४००३

♦♦ आलेख ♦♦

ईश्वरीय योजनाएं

पवन शर्मा

एक व्यक्ति को नवरात्रों में कलश–स्थापना एवं पूजा के लिए आम के पत्ते चाहिए थे। वह एक जानी–पहचानी दुकान पर जाने के लिए जैसे ही घर से निकला तभी उसके मन में दूसरी दिशा में स्थित एक अन्य दुकान पर जाने का विचार आया और वो उसी ओर चल दिया। परंतु वहां आम के पत्ते नहीं मिले। फिर वह दूसरे स्थानों पर तलाशता हुआ उसी पहली वाली दुकान पर पहुंचा जहां वह सबसे पहले जाना चाहता था, परंतु वहां भी सारे आम के पत्ते बिक चुके थे। यह तो हम जानते ही हैं कि शहरों में अब पूजा–सामग्री के अंतर्गत आम के पत्ते और छोटी–छोटी शीशियों में गंगाजल भी दुकानों में बेचा जाता है। अंत में, वो आदमी वहां पहुंचा जहां आम के पेड़ से पत्तों को स्वयं तोड़कर मुफ्त में प्राप्त किया जा सकता था लेकिन उस पेड़ के पास बनी सीढ़ियों का रास्ता, जिनपर चढ़कर पेड़ के पत्ते तोड़े जा सकते थे,उस संपत्ति के मालिक द्वारा बंद कर दिया गया था।

सौभाग्यवश ठीक उसी पल, उसी छोटे से बगीचे का मालिक स्वयं के लिए आम के पत्ते लेने आया, जिसने उस व्यक्ति के अनुरोध पर पेड़ की एक टहनी उसे भी सहज ही दे दी। यदि वह आदमी सीधा पहली वाली दुकान पर ही जाता या इस छोटे से बगीचे से स्वयं पत्ते तोड़ने के लिए शुरू में ही आ जाता तो निश्चित रूप से उसे पूजा के लिए आम के पत्ते नहीं मिल पाते, क्योंकि उस समय बगीचे का मालिक वहां नहीं मिलता।

ईश्वरीय योजनाओं के संबंध में चर्चा की शुरूआत करने के लिए यह एक बहुत छोटी सी बानगी है। कुछ लोग इसे संयोग कहकर भाग्य से भी जोड़ सकते हैं। अगर यह भाग्य से जुड़ा उदाहरण है तो आदमी का भाग्य लिखने वाला भी तो ईश्वर ही होता है। इसलिए इंसान का जो भाग्य लिखा जाता है उसे भी तो ईश्वर की ही योजना का हिस्सा माना जाना चाहिए। हम अपने जीवन में अपनी इच्छा अथवा आवश्यकतानुसार जब भी और जो भी काम करते हैं या करना चाहते हैं उसका फल या परिणाम हमारे हाथों में नहीं है और लगभग हम सभी की ज़िंदगी में घटित होने वाले सैकड़ों वाकयों या घटनाओं से समय–समय पर इस सच्चाई की पुष्टि एवं सत्यापन भी होता रहता है और इनका संबंध प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हमारे भाग्य से ही जुड़ा होता है। जिसे हम भाग्य कहते हैं वह ईश्वर द्वारा दी गई हमारी ज़िंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसलिए भाग्यानुसार भी हमें जो मिलता है, वह भी ईश्वर की योजनाओं के अंतर्गत ही मिलता है।

बच्चे का जन्म होने पर हम लोग अपनी आस्था एवं विश्वास के अनुसार उस बच्चे की राशि और भविष्यफल जानने के लिए उसकी जन्मपत्री बनवाते हैं ताकि उसके अनुसार उसका नामकरण कर सकें और यदि कुछ अशुभ पाया जाता है तो अपनी अपनी मान्यताओं के अनुसार उसके उपाय भी किए जाते हैं। निःसंदेह, इस दुनिया में हरेक बच्चे का भविष्यफल अलग–अलग होता है, जिसका निर्धारण उसके पूर्व कर्मों एवं अपनी योजनाओं के अनुसार ईश्वर ही तय करते हैं और उस बच्चे के जन्म के लिए ईश्वर द्वारा निर्धारित किए गए विशेष ग्रह एवं नक्षत्रों की दिशा एवं स्थिति वाला समय उसके भविष्यफल का आधार बनता है।

ऊपरवाला अपनी विधि एवं योजनाओं के अनुसार सब कुछ स्वयं ही निर्धारित करता है। भले ही हम इस गलतफहमी में रहें कि अब तो हम अपनी इच्छा एवं समय के अनुसार इस दुनिया में बच्चे का आगमन करा सकते हैं, लेकिन सच यह है कि हमारी सोच एवं कार्य भी ईश्वर की योजना के अनुसार एवं अधीन ही होते हैं। जिस तरह एक परिवार, समाज, राज्य एवं देश चलाने के लिए हम लोग अपनी अपनी समझ एवं योग्यताओं के अनुसार योजनाएं बनाते हैं, उसी तरह पूरी दुनिया को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए ईश्वर अपनी योजनाएं बनाते हैं।

दूसरी ओर परिश्रम, लगन, उत्साह एवं उमंग से किए जाने वाले कार्यों के भी हमारी ज़िंदगी में बहुत मायने हैं, क्योंकि अगर हम जीवन में पूरी ऊर्जा एवं लगन से मेहनत करेंगे, उत्साह एवं उमंग रखेंगे तो हमें बेशक मनचाहा फल नहीं मिले परंतु जिंदगी के अनुभव तो मिलते ही हैं और यही अनुभव हमारे भावी जीवन में बहुत सहायक एवं मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। इसलिए जो लोग यह कहते हैं कि जब भाग्य से ही मिलना है तो हमें भागदौड़ एवं परिश्रम करने की क्या ज़रूरत है, वह बेमानी एवं निरर्थक है। जीवन में हाथ पर हाथ रखकर बैठना तो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं माना जा सकता।

हम भले ही चालीस साल जिएं, साठ साल जिएं या सत्तर–अस्सी साल या उससे ज़्यादा, हमारी ज़िंदगी का दायरा बेहद असीमित होता है इसलिए हमें हमेशा कुछ न कुछ नया सीखते रहने की बहुत आवश्यकता होती है। हम अपनी लगन एवं मेहनत से जितना ज़्यादा कार्य करते हैं उतना ही ज़्यादा सीखते हैं। फिर चाहे हम अपने प्रयत्नों में सफल हों या असफल हों परंतु उन अनुभवों का हमें हर पल, हर दिन लाभ अवश्य मिलता है।

दुनियाभर में ऐसे सैकड़ो उदाहरण अक्सर हमने देखे, पढ़े और सुने होंगे जहां बेहद गरीबी, तंगहाली के दिनों से निकलकर बहुत सारे लोग धनवान या महान बने हैं या देश के उन उच्चतम पदों तक पहुंचे हैं, जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। भले ही उनकी जाति, धर्म या उपनाम कुछ भी रहे हों। ईश्वरीय शक्ति जिसने हमें जन्म दिया है, वह तो निष्पक्ष एवं तटस्थ होकर हमारे कर्मों के हिसाब से ही हमारा भविष्य निर्धारित करती है। ईश्वर इस सृष्टि में सभी को अपने–अपने कर्म करने के लिए खाली हाथ भेजते हैं और खाली हाथ ही वापस बुलाते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि फलां व्यक्ति इतने बुरे कर्म करता है, फिर भी मौज कर रहा है और फलां व्यक्ति इतने सत्कर्म करता है फिर भी दुखों एवं कष्टों से घिरा हुआ है। इसके जवाब में दूसरे लोग अक्सर यह भी कहते हैं कि शायद यह उन्हें पिछले जन्म के कर्मों का फल मिल रहा है। कुछ लोग कहते हैं कि इसका मतलब इस जन्म के कर्मों का फल अगले जन्म में मिलेगा। वहीं कुछ लोगों का दृढ़ विश्वास है कि इस जन्म के अच्छे–बुरे कर्मों का फल इसी जन्म में मिलता है और नर्क व स्वर्ग भी इसी धरती पर भोगने होते हैं। यानि, जितने लोग उतने विचार और उतनी बातें प्रायः देखने–सुनने में आती हैं।

धर्म एवं अध्यात्म संबंधी ज्ञान, आस्था एवं विश्वास से जुड़े ये प्रश्न बड़ी बहस के विषय हो सकते हैं लेकिन यह सच है कि किसी भी इंसान के अच्छे व बुरे कर्मों का फल कब और किस रूप में दिया जाना है इसका निर्णय अपनी योजना एवं विधान द्वारा केवल ईश्वर ही लेते हैं, जिसे हमें स्वीकार करना चाहिए। इसलिए इंसान चाहे कितनी भी अकूत धन–संपत्ति अर्जित कर ले, कितना ज्ञानी, तपस्वी एवं महान बन जाए परंतु उसे यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि वह उस विधाता एवं ईश्वर की सृष्टि का एक जीव मात्र है, जिसने उसे जन्म दिया है और उसी की योजना के अनुसार इस दुनिया में उसका आगमन हुआ है।

हमने ऐसे अनेक पिछड़े व गरीब गांवों एवं क्षेत्रों के बारे में सुना व पढ़ा होगा जहां अचानक किसी स्वरूप विशेष में भगवान प्रकट होते हैं, उनकी मूर्तियां व साक्ष्य पाए जाते हैं, जिसके फलस्वरूप ईश्वर में आस्था, विश्वास एवं भक्ति रखने वाले लोग वहां बहुत तेजी से भगवान के उस स्वरूप का स्थान या मंदिर बनवाते हैं। फिर जैसे जैसे वहां दर्शन के लिए आने वाले भक्तों की संख्या बढ़ती है, वैसे वैसे न केवल मंदिर भव्य बनाए जाते हैं बल्कि वहां का संपूर्ण विकास होने लगता है और वह स्थान देश और दुनिया में प्रचलित हो जाता है।

हज़ारों लोगों को वहां रोजगार मिलने लग जाता है। दुकानें, बाजार, धर्मशालाएं, होटल एवं अन्य उद्योग–धंधे विकसित हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप न केवल उस क्षेत्र विशेष के गरीब लोग समृद्ध होने लगते हैं बल्कि आसपास एवं दूरदराज के लोगों को भी अच्छे रोजगार मिल जाते हैं। निःसंदेह यह ईश्वरीय योजना का ही एक हिस्सा है, जिसके अंतर्गत निर्धारित एवं उचित समय पर इन लोगों को रोजगार देकर समृद्ध बनाया जाना था।

सामान्यतः, भगवान इंसानों के बुरे कर्मों के प्रतिफल में न्याय स्वरूप जो दुख व परेशानियां देते हैं वे उतनी ही मात्रा एवं गंभीरता की सीमा में देते हैं जितना उस इंसान के सहने की क्षमता होती है। अपवाद स्वरूप यदि किसी व्यक्ति के दुख उसके सहनशक्ति की सीमा को पार कर देते हैं तब यह माना जाना चाहिए कि उस व्यक्ति के अपराध एवं पाप भी असीमित रहे होंगे। ईश्वर एक सूक्ष्मतम जीव चींटी से लेकर विशालकाय हाथी अथवा सौ डेढ़ सौ फुट लंबी और लगभग डेढ़ सौ टन वजन वाली व्हेल मछली तक के लिए नियमित भरपेट खाना उपलब्ध कराते हैं। हालांकि दूसरी ओर यह भी सच है कि दुनिया में बहुत–से लोग भुखमरी एवं गरीबी के कारण मर भी जाते हैं, जिसका कारण संभवतः उसकी योजनाओं एवं विधान के अंतर्गत उचित प्रतिफल एवं दंड दिया जाना हो सकता है।

एक सज्जन से जब पूछा गया कि उन्हें रोज़ाना ईश्वर की पूजा एवं भक्ति करने से क्या लाभ होता है तो उसने कहा कि निश्चित रूप से मानसिक शांति प्राप्त होती है। उसने कहा कि ईश्वर को दुनिया चलाने के लिए तीनों लोकों में रहने वाले असंख्य चर–अचर प्राणियों, जीव–जंतुओं व प्रकृति सहित सभी का ख्याल रखना होता है। ईश्वर की योजनाओं में निश्चित रूप से हर प्राणी का स्थान होता है लेकिन जिसके जितने ज़्यादा अच्छे और सच्चे कर्म होंगे उसे एक निर्धारित समय पर उतना ही अच्छा प्रतिफल भी अवश्य मिलता है।

बहुत–से लोग धन–दौलत, संपदा एवं ऐश्वर्य को ही सही प्रतिफल मानते हैं और इन्हीं की कामना भी करते हैं। जबकि वे प्रतिफल मानसिक शांति एवं खुशी आदि के रूप में भी हो सकते हैं। वैसे भी जिस ईश्वर ने हमें इस सृष्टि की सर्वोत्तम रचना के रूप में मानव जन्म दिया है क्या उसका नित्य स्मरण करना हमारा कर्तव्य नहीं बनता, वह भी तब जबकि उसके बिना हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं है।

हमने बहुत–से लोगों के बारे में देखा, सुना व पढ़ा होगा कि उनके परिवारों में रोजी–रोटी का कोई साधन न होने के कारण वे संकटमय जीवन जी रहे होते हैं, परंतु अचानक से घर के किसी बेरोजगार सदस्य की अच्छी नौकरी लग जाती है या उनके आसपास कोई मंदिर या दर्शनीय स्थल का निर्माण हो जाता है या फिर हाईवे बन जाता है, जिससे उनके घर का आर्थिक संकट छूमंतर हो जाता है। हमारी ज़िंदगी को अचानक से बदलने वाली इन घटनाओं एवं उदाहरणों से, जिन्हें हम अक्सर संयोग अथवा भाग्य कह देते हैं निश्चित रूप से हमारे जीवन में इस तरह के परिवर्तन ईश्वरीय योजनाओं का ही हिस्सा होते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि ईश्वर ने अपनी योजना अनुसार अब उनके सत्कर्मों का फल देना आरंभ कर दिया है।

कई बार हम सुनते हैं कि फलां व्यक्ति के परिवार को जमीन की खुदाई में अपार धन तथा हीरे–जवाहरात आदि मिले और रातों रात वे करोड़पति बन गए। सभी को जमीन में गढ़ा हुआ धन क्यों नहीं मिलता। निश्चित तौर पर इस दुनिया में बिना दिए किसीको भी कुछ नहीं मिलता। उन लोगों ने भी कभी बड़े परोपकार के काम किए होंगे, जिसका फल उन्हें ईश्वर ने इस रूप में दिया होगा।

बहुत से गरीब परिवारों की लड़कियां धनवान परिवारों में ब्याही जाती हैं और इसके विपरीत बहुत से धनी परिवारों की बेटियों की शादी गरीब परिवारों में हो जाती है। प्रत्येक गरीब लड़की का पैसे वाले घर में और प्रत्येक अमीर लड़की का विवाह गरीब घर में तो नहीं होता है ना। इनमें से कुछ प्रेम–विवाह के मामले हो सकते हैं, लेकिन सभी नहीं होते हैं। इंसानी कर्मों का फल देने का यह तरीका भी उसी सर्वशक्तिमान की योजनाओं का भाग कहा जा सकता है।

श्रीमद्भभगवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि इस संपूर्ण जगत की उत्पत्ति के कारण भी वहीं हैं और इस संपूर्ण जगत के पालक एवं परिचालक भी वे स्वयं हैं। इसलिए ईश्वर में आस्था एवं विश्वास रखने वाले सभी लोग यह आसानी से समझ सकते हैं कि जब एक परिवार का मुखिया, राज्य का मुखिया अथवा देश का प्रमुख क्रमशः अपने परिवार, राज्य और देश के हित के लिए अपनी सर्वश्रेष्ठ योजनाओं का निर्माण करके उसीके अनुसार कार्य करता है तो फिर जगत के पालक ईश्वर भी तो निःसंदेह हर चर–अचर प्राणी के हित में अपनी दिव्य एवं न्यायसंगत योजनाओं के अनुसार ही कार्य करेंगे ना, भले ही हम इंसानों को कभी कभी वे ईश्वरीय योजनाएं एवं प्रतिफल तर्कसंगत अथवा सही न लगती हों।

समय–समय पर अनेक दुर्बुद्धि लोग स्वयं को ही भगवान के बराबर अथवा भगवान समझने की महाभूल एवं महापाप कर बैठते हैं, जिन्हें ईश्वरीय योजनाओं द्वारा पहले अप्रत्यक्ष रूप से सही मार्ग दिखाया जाता है परंतु उनके न मानने या समझने की स्थिति में उचित प्रतिफल के रूप में ईश्वर के पास विशेष योजनाएं भी होती हैं, जिनके फलस्वरूप उन महापापी एवं दुर्बुद्धि लोगों को उचित दंड मिलता है और उनके सताए हुए हज़ारों–लाखों निर्दोष प्राणियों को राहत मिलती है।

इस तरह, ईश्वर अपनी इस दुनिया को इस कदर चमत्कारिक एवं सुव्यवस्थित ढंग से चलाते हैं, जिसकी हम लोग कल्पना भी नहीं कर पाते। प्रायः मुसीबतों के वक्त लोग कह देते हैं कि, हे भगवान ये क्या कर दिया। ऐसी परिस्थितियों में हम अपने दुखों का हल ढूंढने के लिए निकलते हैं, जिसके लिए ईश्वर ने हमारे बीच में गुरूजनों, बड़े–बड़े ज्ञानियों–महापुरूषों तथा साधु–संतों एवं ज्योतिषियों को इस दुनिया में भेजा है। इनके ज्ञान एवं अनुभवों से न केवल हमारा मार्गदर्शन होता है बल्कि हमें अपने दुखों को कम करने में भी समय समय पर सहायता एवं मानसिक शांति मिलती है।

♦♦ शोध आलेख ♦♦

मॉरीशस के महापुरुष प्रो. वाशुदेव विष्णुदयाल : भारत एवं मॉरीशस की स्वतंत्रता

डॉ. अनिल कुमार
(उ.प्र.)

परिचय

औपनिवेशिक काल में अनुबंध श्रमिक प्रणाली की शुरुआत भारत से मॉरीशस के लिए सन् 1834 में हुई थी। दास प्रथा की समाप्ति के बाद गन्ने के खेतों एवं बागानों में काम करने के लिए मजदूरों की कमी को पूरा करने के लिए इस प्रथा की शुरुआत किया गया था। इस प्रथा के द्वारा लाखों की संख्या में भारतीय मजदूरों को एग्रीमेंट पर अंगूठे का नीसान लेकर उनके साथ पाँच वर्ष के लिए अनुबंध किया गया। इस अनुबंध में आने–जाने का किराया, रहने के लिए घर, भोजन, कपड़े सभी की व्यवस्था शुगर स्टेट की होती थी। यही एग्रीमेंट शब्द बिना पढ़े लिखे भारतीय मजदूरों के सही उच्चारण नहीं कर पाने के कारण गिरमिटिया हो गया। इसी कारण इसके तहत गए भारतीय मजदूरों को गिरमिटिया कहा जाने लगा और अब उस देश को गिरमिटिया देश भी कहा जाता है। भारत से मजदूरों को ले जाने के लिए यहाँ कोई भाषा एवं जात–पात नहीं देखता था, उनको केवल मजदूर चाहिए थे। भारत के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों से गए मजदूरों की भाषा, धर्म, जाति सभी अलग–अलग थे। मगर भारत से कठिन समुद्री यात्रा के बाद गए मॉरीशस ये मजदूर अपनी जाति और धर्म को समुद्र में ही छोड़ दिया। मगर अपनी भाषा एवं संस्कृति को अपने में सँजोये रखा। कुछ समय बाद जब यहाँ से बहुत लोग आने–जाने लगे और भारत के संपर्क में आने लगे तो वहाँ भारतीय संस्कृति एवं भाषा आपसी रहन–सहन, खान–पान में दिखने लगी। यहाँ आर्य समाज की स्थापना के बाद सामाजिक रूप से बहुत बदलाव हुआ। आर्य समाज ने मॉरीशस के शहर–शहर, गाँव–गाँव में अपनी साखाएँ खोली और लोगों को जागरूक किया। इसके साथ–ही–साथ पढ़ाई के लिए पाठशालाएँ खुलवाया जहाँ सभी पढ़ सकें। लड़कियों के पढ़ाई के लिए अलग पाठशाला खुलवाएँ जिससे लड़कियाँ भी पढ़ सके।

प्रो. विष्णुदयाल का जीवन परिचय एवं शिक्षा : प्रो. विष्णुदयाल जी का जन्म 15 अप्रैल 1906 को मॉरीशस के दक्षिण प्रांत में हुआ था। इनके पिता का नाम लक्ष्मण और दादा का नाम गुददर सिंह था। अपने गाँव से रोजिल हिल में रहे, फिर पोर्ट लुई में सभी परिवार रहने लगा। विष्णुदयाल जी कि प्राथमिक पढ़ाई पोर्ट लुई के विल्येज रेनी सरकारी पाठशाला में हुई थी। उच्च शिक्षा के लिए इन्होंने लाहौर विश्वविद्यालय से बी. ए. की डिग्री प्राप्त किया। बचपन से ही विष्णुदयाल मेघावी छात्र थे। लाहौर विश्वविद्यालय में पाँच हजार छात्रों में छात्रवृत्ती के लिए दिये गए परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किए। मगर इस कठिन मेहनत से छात्रवृत्ती मिलने के बाद भी एक महिला के लिए छोड़ दिया था। जिसको इसकी ज्यादा जरूरत थी। इस प्रकार इन्होंने विद्वान, सामाजिक और देशभक्त होने का परिचय दिया था। लाहौर विश्वविद्यालय के बाद इन्होंने एम.ए. की डिग्री कोलकाता विश्वविद्यालय से प्राप्त किया। भारत में इन्होंने हिन्दी, अँग्रेजी और संस्कृत विषयों की पढ़ाई की। प्रो. वासुदेव का बचपन से ही देशभक्ति के प्रति झुकाव था। इसी प्रेरणा से वे कोलकाता जाने के विषय में सोचे क्योंकि वहीं से भारतीय आजादी की लड़ाई की शुरुआत किए थे। कोलकाता से ही अंग्रेज़ भारत में झूठे वादे करके (व्यापार करने) भारत को गुलाम बनाया था और कोलकाता से ही झूठे वादे करके भोले–भाले भारतीयों को मॉरीशस में अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए लाया था। जैसे अंग्रेजों ने कोलकाता के रास्ते ही भारत में अपनी सत्ता को स्थापित किया था, वैसे ही मॉरीशस में भोले–भाले भारतीयों को बहला–फुसलाकर कोलकाता से ही पहली बार गिरमिटिया प्रथा के द्वारा लाया था।

कोलकाता से देशभक्ति की भावना के साथ बड़े हुए और जब वे अपने देश वापस आए तो उनकी एक इच्छा थी कि मॉरीशस को भी आजाद कराना है। "भारत में लोग आजादी के लिए संघर्ष करते हैं, आजादी के लिए भारत के लोग कैसे अपनी जान की भी परवाह नहीं करते हैं।" इसी सोच से मॉरीशस को आजाद कराने के विषय में एक सफल प्रयास किए। इन्होंने लालमाटी गाँव के बैठका में कन्या पाठशाला की शुरुआत की। यही कार्य इन्होंने पूरे मॉरीशस के गाँव–गाँव में घूम–घूम कर प्रचार किया और कन्या पाठशाला की स्थापना कराये, जिससे लड़कियाँ भी घरों से निकल कर पाठशालाओं में पढ़ने लगीं। प्रो. विष्णुदयाल शिक्षा के महत्व

को समझते थे। वे बहुत सारी भाषाओं के विद्वान थे। इनका भारतीय भाषा हिन्दी, भोजपुरी के साथ–साथ अंग्रेजी, फ्रेंच, क्रियोल आदि भाषाओं पर अधिकार था। भारत में पढ़ाई करने के समय में ही इनके अंदर देश भक्ति की भावना कूट–कूट कर भर गयी थी। ये गांधी जी के सत्य और अहिंसा से प्रभावित होकर ही मॉरीशस में स्वतन्त्रता की लड़ाई में कूद पड़े जिसके परिणाम स्वरूप इनको कई बार जेल भी जाना पड़ा। इसके बाद भी उनका हौसला कम होने की वजाय और अधिक मजबूत होता गया। इनके इस प्रचार में उनके भाई सुखदेव ने बहुत ही साथ दिया था।

मॉरीशस में प्राथमिक स्कूल के अध्यापक को अंग्रेजी में मास्टर और फ्रेंच में प्रोफेसर कहने का रिवाज प्रचलित था। अतः वासुदेव जी को पहले मास्टर कहा जाता था और बाद में प्रोफेसर कहलाने लगे। वासुदेव जी का अन्य भाषाओं से ज्यादा हिंदी की पढ़ाई पर ध्यान रहता था। इन्होंने स्थानीय लोगों को शुद्ध हिंदी लिखना और पढ़ना सिखाया था। उनके सबसे बड़े योगदान में हिंदी के लिए सभी में झुकाव पैदा करना था। यहाँ तक कि जो लोग अंग्रेजी, फ्रेंच, पढ़ते और लिखते थे उन्हें भी हिंदी पढ़ने और सीखने के लिए प्रेरित किया।

प्रो. विष्णुदयाल लालमाटी के दक्षिण में स्थित सेह जुलिए गाँव के पाठशाला (देविदिन ऋतु स्कूल) में पढ़ाने आते थे। वहीं पर जहां वे रहते थे उसी जगह रात्रि पाठशाला खोली थी। पोर्ट लुई से वे सेह जूलिए के देवी दिन ऋतु स्कूल आते थे और रविवार को पोर्ट लुई जाते थे। ये पूरे हफ्ते इसी गाँव में रहते थे और सप्ताह के अंत में घर जाते थे। यहीं पर रात्रि पाठशाला में भारतीय मजदूरों एवं उनके बच्चों को हिंदी पढ़ाते लगे।

प्रो. विष्णुदयाल द्वारा मॉरीशस की स्वतंत्रता के लिए दिया गया नारा :पहले लालमाटी, बोन आकेय और ब्रिजे बीजीयर एक ही गाँव था। बोन आकेय एक फ्रेंच नाम है जिसका मतलब स्वागत होता है। प्रो. विष्णुदयाल कि सांस्कृतिक यात्रा की शुरुआत लालमाटी से होती है। सर्वप्रथम विष्णुदयाल जी वर्तमान स्वराज भवन की जगह जो पहले खाली मैदान था जुलूस (पद यात्रा) निकालते थे जिसमें लड़के, लड़कियां, महिलाएँ, बूढ़े, जवान सभी भाग लेते थे। इसी जुलूस में लड़कियों को मौका मिलता था बाहर निकलनें का। उनको दीपावली, होली के अलावा ज्यादातर बाहर निकलने का मौका नहीं मिलता था। लालमाटी गाँव के बुजुर्ग एवं विद्वानों का कहना है कि, "लालमाटी गाँव में यह जुलूस 15 अगस्त को निकलता था। इस 15 अगस्त के जुलूस से लोगों में आजादी व देश भक्ति की भावना भरते थे। इसमें उनके द्वारा लिखा हुआ राष्ट्रीय गीत, नारा, गाना आदि गाया जाता था।" लालमाटी गाँव के जुलूस में एवं भारतीय स्वतंत्रता के दिन गाया जाने वाला सबसे लोकप्रिय एक गीत इस प्रकार से था–

यह का झण्डा आता है,
सोने वालों जाग चलो।
यह सूरी वेद का चमका है,
यहाँ क्या काम तमका है।
अज्ञान घोर अंधेरे को,
कह दो भाग चलो।
यह ऊँ का झण्डा आता है,
सोने वालों जाग चलो.............(हीरालाल लीलाधर,लेखक एवं सेवानिवृत शिक्षक) से व्यक्तिगत साक्षात्कार पर आधारित)

चित्र : स्वयं द्वारा, लालमाटी गाँव

उपरोक्त झंडा मॉरीशस की आजादी के बाद का है। जब मॉरीशस आजाद हुआ तब से उसका अपने देश का एक अलग राजनीतिक झंडा है। इस झंडे में दोनों देशों को दर्शाया गया है जबकि मॉरीशस की आजादी के पहले भारत के झंडे के साथ लाल रंग के कपड़े पर ध लिखा झंडा हिंदू धर्म का धार्मिक झंडा होता था। भारतीय झंडे को लेकर चलने से अंग्रेज़ सरकार को लगता था की उसकी सरकार का विरोध है इसलिए वे मना करते थे। जबकि भारतीय झंडे के साथ ध का झंडा रखने से यह धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतिक का सूचक हो जाता था। इस प्रकार अंग्रेज़ प्रशासन इनपर कोई कारवाई नहीं करती थी। इस प्रकार मॉरीशस में राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान दोनों साथ–साथ हो रहा था। यह झंडा मॉरीशस के भारतवंशियों में जोश भर देता था और आपस में एक जुट होने में मदद करता था।

प्रो. विष्णुदयाल द्वारा मॉरीशस में स्वतंत्रता के लिए किया गया कार्य :

मॉरीशस के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक उत्थान में प्रो. विष्णुदयाल ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। प्रो. विष्णुदयाल भारत से सन् 1939 में पढ़ाई कर के लौटे थे। वे गांधीवादी थे और उन्होंने शुरू से ही मॉरीशस में हिंदी का प्रचार–प्रसार आरंभ किया। विष्णुदयाल मॉरीशस में घूम–घूम कर हिंदी में कथा–व्याख्यान देते थे। उन्होंने सन् 1940 के बाद 300 संध्याकालीन

पाठशालाएँ खुलवाई थी जो बैठका कहलाई जाती थी। उन्होंने मॉरीशस में 800 से भी अधिक युवकों की टोली तैयार की जो हिंदी पढ़ाने लगे थे। मॉरीशस में सन् 1947 से पहले आप्रवासी भारतीयों को वोट करने का अधिकार नहीं था। उसी वर्षा कानून बना की जो भी आप्रवासी किसी भी भारतीय भाषा में अपना नाम लिख और हस्ताक्षर कर लेगा उसे वोट करने का अधिकार प्राप्त होगा। विष्णुदयाल जी ने अपने हिंदी सेवकों को देश के कोने–कोने में रात–विरात को भेजकर अधिकतम लोगों को हिंदी में नाम लिखवाकर और हस्ताक्षर करवाने का कम करवाया। मॉरीशस में सन् 1948 में चुनाव से पहले 12000 मतदाता थे परंतु पंडित जी के हिंदी में हस्ताक्षर करने के अभियान से कुल 72000 मतदाता हो गए। इससे पहले चुनाव में 21 निर्वाचित सदस्यों में सिर्फ 7 भारतीय नेता निर्वाचित होकर आते थे पर हिंदी अभियान के बाद 21 में 11 सीटें आप्रवासी भारतीयों की थीं।(हीरामन, 2015)

प्रो. विष्णुदयाल एवं मॉरीशस का एक गाँव : मॉरीशस के फ्लाक जिले में स्थित लालमाटी गाँव और बोन आकेय दोनों गाँव को "तपबी पद बनसजनतम (बनसजनतंस ्वदम)" कहा जाता है, क्योंकि यहीं पर सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत ज्यादा होता था और प्रो. विष्णुदयाल जी का संबोधन होता था। प्रोफेसर जी शिक्षा और विशेषकर हिंदी शिक्षा पर अत्यधिक बल देते थे। उनका यह मानना था कि भारतीयों के मुक्ति का एक मात्र उपाय उनमें हिंदी शिक्षा का होना है। इसलिए वे हिंदी शिक्षा पर बल देते थे।

वैसे तो विष्णुदयाल जी ने मॉरीशस के उत्थान में बहुत से महत्वपूर्ण कार्य किए मगर लालमाटी गाँव के अध्ययन में मौखिक इतिहास द्वारा लिए गए साक्षात्कार में कुछ नए तथ्य प्राप्त हुए जिसका विश्लेषण किया गया है। लालमाटी गाँव के चारों तरफ के सभी गावों के नाम फ्रेंच नाम पर ही हैं। पूर्व में बेल वी है तो पश्चिम में कारओ ला लंग, उत्तर में बेल वेदेर और बोन आकेई है, तो दक्षिण में सेह जुलिए विलेज है। मॉरीशस में गाँव शुगर स्टेट के आस–पास ही बसे जहाँ बंजर, पत्थरीली जमीन थी। इन गावों के आस पास की जमीन फ्रेंच मालिक की थी इसीलिए इन गावों का नाम भी फ्रेंच नाम पर ही पड़ा है। अब प्रश्न यह उठता है कि लालमाटी गाँव का नाम भारतीय गाँव के नाम जैसा क्यों है? इसके विषय में यहाँ के लोगों का कहना है कि लालमाटी गाँव की लगभग सभी भूमि एक फ्रेंच कोठी मालिक की थी जिसका नाम लामालेची था। इसलिए उस व्यक्ति के नाम पर ही इस गाँव का नाम लामालेची पड़ा। लामालेची ने अपनी जमीन को टुकड़ों में करके गन्ने के खेतों में काम करने वाले मजदूरों को बेच दिया। उसने इस छोटे–छोटे टुकड़े का किस्त में पैसे लेता था। जब तय शुदा राशि उसे मिल जाती थी तब वह भूमि उस व्यक्ति के नाम हमेशा के लिए कर देता था। भारतीय मूल के मजदूर पढ़े–लिखे नहीं थे। इसलिए वह सभी लोग फ्रेंच शब्दों का सही उच्चारण नहीं कर पाते थे। सुनने मात्र से शब्दों को सही से नहीं समझ या बोल पाते थे। पढे–लिखे नहीं होने के कारण इस लामालेची नाम को लालमाची बोलने लगे। पहले के लोग इस गाँव को लालमाची ही बोला करते थे। पंडित विष्णुदयाल जी जैसे ज्ञानी एवं समाज सुधारक के संपर्क में आने से इस गाँव कि रूप–रेखा बदलने लगी। पंडित विष्णुदयाल जी का इस गाँव पर व्यापक प्रभाव पड़ा था, जिसे आज भी देखा जा सकता है। उन्होंने ही इस गाँव में ज्ञान कि ज्योति जलाने का काम किया। जिससे इस गाँव का नाम पूरे मॉरीशस में गूँजता है। आज भी यहाँ के प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में इनके लिए श्रद्धा भाव देखने को मिलती है। लालमाटी गाँव के आज के इस युग में पहुंचाने में जिन्न लोगों ने अपना सहयोग दिया है, लगभग सभी पर पंडित विष्णुदयाल जी का आशीर्वाद रहा है। पंडित विष्णुदयाल जी ने ग्रामवासियों को 'ची' की जगह 'टी' बोलने के लिए प्रेरित किया जिससे धीरे–धीरे भोजपुरी एवं हिंदी भाषा समझने एवं बोलने वाले लोगों ने 'ची' का उच्चारण 'टी' कर दिया। तभी से इस गाँव का नाम लालमाटी हो गया। यहाँ के हिंदी बोलने वाले एवं हिंदू लोग ज़्यादा जनसंख्या में हैं। यहाँ के लोगों को इस गाँव का नाम हिंदी नाम पड़ने से बहुत खुशी है। इसे एक प्रकार का आशीर्वाद ही समझते हैं। (रामसाहा, 2017:19)

15 अगस्त को मॉरीशस की स्वतन्त्रता (1968) से पहले लालमाटी गाँव के जुलूस में गाये जाने वाले गीत, जुलूस और उत्सव के नेता प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल जी होते थे। स्थानीय राष्ट्रीय स्वयं सेवक दल के लोग हजारों के इस जुलूस की देख–रेख करते थे और गीत गवाते थे। जुलूस उत्साहित एवं अनुशासित रहता था, इसमें भाग लेने वाले आनंद एवं गर्व की अनुभूति करते थे। लोग इस अवसर का बड़ी उत्सुकता से इंतजार किया करते थे। इस गीत के माध्यम से यह भी कहा जाता था कि एक दिन मॉरीशस में हिंदुओं का राज होगा यह जुलूस हिंदुओं के मन में स्वदेश प्रेम की चेतना भरता था।(लीलाधर, हीरालाल, व्यक्तिगत साक्षात्कार)

प्रो. विष्णुदयाल कई गाँव की फेरी करने के बाद लालमाटी गाँव में एक जगह सबको संबोधित करते थे जहाँ भारतीय महापुरुषों महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, रवीन्द्र नाथ टैगोर आदि के विषय में बताते थे। इसी जगह पर विष्णुदयाल जी के नेतृत्व में "स्वराज भवन" का निर्माण हुआ है। स्वराज भवन आज भी लालमाटी गाँव के मुख्य सड़क रॉयल रोड पर गाँव के बीच में स्थित है जो भारत और मॉरीशस दोनों की स्वतंत्रता की कहानी को ब्या करता है। इस स्वराज भवन की जगह से ही भारत और मॉरीशस दोनों की स्वतंत्रता की मांग

भारतवंशी लोग करते थे। जब भारत स्वतंत्र हुआ था तो लालमाटी गाँव में भी इस स्वतन्त्रता की खुशी मनायी गयी थी। यहाँ लोग भी तब अपने को भारत से जोड़कर देखते थे। भारत में जो भी स्वतंत्रता संबंधित घटनाएँ होती थीं यहाँ के लोगों पर भी इसका प्रभाव पड़ता था। लोग बैलगाड़ी, साइकिल, पैदल ही यात्रा किया करते थे। भारत की स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त सन् 1947 को लालमाटी गाँव के लोगों ने अपने–अपने बैलगाड़ीयों को सजाकर भव्य जुलूस निकाला था। जिसमें बड़े, बूढ़े, बच्चे, लड़के, लड़कियाँ, औरतों ने बहुत ही धूम–धाम से भाग लिया था। हजारों की संख्या में लोगों ने इस जुलूस में भाग लिया था। यह जुलूस लालमाटी, मिशन क्रास रोड, ब्रांच रोड, बोनाकेई और वेलवेदर गाँव तक निकाला गया था। (साक्षात्कार, 15 अगस्त, 2018, लालमाटी गाँव) इस जुलूस में लोगों ने शांति से कतारों में क्रमबद्ध तरीके से फेरे लगाये थे। जिससे किसी को भी किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई थी।

चित्र : स्वयं द्वारा, लालमाटी गाँव में स्थित स्वराज भवन

प्रो. विष्णुदयाल जी ने देविदिन ऋतु स्कूल से त्यागपत्र देकर अपना पूरा जीवन हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति और मॉरीशस देश को आजाद कराने में लगा दिया। लालमाटी गाँव के एक सेवानिवृत शिक्षक के अनुसार "प्रो. विष्णुदयाल ने 12 दिसंबर 1943 को पोर्ट लुईस में सबसे बड़ा जुटाव किया था। जिसमें बैलगाड़ी, पैदल, ट्रेन, साईकिल से लगभग पचास हजार से भी ज़्यादा लोगों को इकठ्ठा किया। उस समय जब पूरा देश जंगल था, उस जंगल में जंगल के साथ–साथ गन्ने के खेत भी थे, पगडंडी वाले रास्ते थे, जो ऊबड़–खाबड़ थे और बैलगाड़ी के ही रास्ते थे। इस जुटाव को देखने के बाद अंग्रेज़ डर गए। इतनी बड़ी जुलूस होने के बाद भी यह सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ। उनके स्वयं सेवक संघ के लोगों में सुंदर ढंग से इतने बड़े तादात को विधिवत संभाला था। मॉरीशस में ऐसे भारतीयों को इकठ्ठा होते देख अंग्रेजों को यह आभास हो गया कि जिनके पास जुटाने का बल है एवं उसे सुचारु रूप से नियंत्रित करने की नीति है उसे रोकना आसान नहीं है। अब ये देश बगैर आजाद कराये नहीं मानेंगे।"

प्रो. विष्णुदयाल एवं महात्मा गांधी : महात्मा गांधी एवं मॉरीशस के प्रो. विष्णुदयाल की तुलना इनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए किया जाता है। महात्मा गांधी ने मॉरीशस में भारतीयों को आपस में एक जुट रहने की सलाह दी थी। इस सलाह का असर पूरे भारतवंशी समुदाय पर पड़ा था। भारत में जो कार्य महात्मा गांधी जी ने किया वही कार्य प्रो. विष्णुदयाल जी ने मॉरीशस को आजाद कराने में किया। जैसे गांधी जी भारत में बिना कोई राजनीतिक लाभ लिए देश की सेवा में अपने जीवन का बलिदान किया वैसे ही विष्णुदयाल ने मॉरीशस के लिए किया। प्रो. विष्णुदयाल जी की तुलना मॉरीशस में किए गए उनके कार्यों के लिए गांधी जी से की जाती है। कुछ लोग प्रो. विष्णु दयाल को मॉरीशस का गांधी भी कहते हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्रो. विष्णुदयाल मॉरीशस के एक महापुरुष थे। इन्होंने अपनी शिक्षा भारत से पूरी किया था। इन्होंने इस गाँव के माध्यम से गाँव एवं मॉरीशस में आजादी कि चेतना जगाई थी। इनका मॉरीशस में केंद्र बिन्दु लालमाटी गाँव था। लालमाटी गाँव को लालमाटी गाँव बनाने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका प्रो. विष्णुदयाल जी का है। आज भी लालमाटी गाँव के लोगों कि जुबां पर इनका नाम रहता है और इनके द्वारा किए गए कार्यों कि चर्चा सभी जगह होती रहती है क्योंकि इनका केंद्र बिंदु यही गाँव रहा है। । इनकी प्रसिद्धि पूरे मॉरीशस में है। मॉरीशस के बहुत से लोग इनको मॉरीशस के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान के लिए किए गए कार्यों के लिए मॉरीशस का गांधी कहते हैं। जैसे भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी जी का स्थान है उसी तरह मॉरीशस की स्वतंत्रता में प्रो. विष्णुदयाल का है। इन्होंने बिना कोई राजनैतिक पद लिए देश की सेवा एक सांस्कृतिक धर्म गुरु के रूप में किया।

संदर्भ

Chetty] D- V-¼2017½-History and Geography Standard V Part 1& 2-Mauritius-Government Printing Office-

Beedassy]Vinah-] Human Resources] Teritary Education and Scientific Rsearch -¼2017½-ELP Resource Atlas of Mauritius and Rodrigues- Vacoas% Mauritius-

Reetoo] Mnnoranjan-¼2009½-The 150 Years Reetoo Family in Mauritius-Chennai% Jayagraphics offset Printers-

विश्वनाथ, पंडित आत्माराम. (संम.) (1998). मोरिशस का इतिहास. दिल्लीः आत्माराम एण्ड संस.

जोशी, रामशरण., राय, राजीव रंजन., चंद्रायन, प्रकाश., खत्री, प्रशांत. (संपा.) (2014). भारतीय डायस्पोराः विविध आयाम. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन.

सिंह, के. हजारी. (1976). मॉरीशस में भारतीयों का इतिहास. नई दिल्लीः दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड.

रामसाहा, सेवक राजमन. (2017). लालमाटी के पूजनीय. नई दिल्लीः स्टार पब्लिकेशंस प्रा. लि.

हीरामन, राज.(2015). मॉरीशस हिन्दी का और एक देश. नई दिल्लीः स्टार पब्लिकेशंस प्रा. लि.

यदुवंशी, डॉ. ब्रजेश. कुमार. (संम.) (2016). मॉरिशस के हिंदीसेवी प्रहलाद रामशरण. नई दिल्लीः इंडिका इन्फोमीडिया.

लाल बी,वी., रीव्स पी., और राय आर (संम. 2007). द इन साइकलोपीडिया ऑफ द इंडियन डायस्पोरा.आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली.

कुमार, अनिल., गुप्ता, डॉ. मुन्नलाल. (2020). मॉरीशस के लालमाटी गाँव के सांस्कृतिक विकास में सामाजिक संगठन बैठका की भूमिका.आभ्यंतर,अक्टूबर–दिसंबर,अंक17(02), 31–35.

कुमार, डॉ. अनिल. (2022). मॉरीशस में भारतवंशी गाँव लालमाटी के निर्माण में आर्य समाज का योगदान. गर्भनाल पत्रिका, दिसम्बर, अंक–10, 42–44. भोपाल.

मॉरीशस के गावों में लिए गए व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं अवलोकन पर आधारित आलेख.

कोरोना वाला रक्षाबंधन

उषा गुप्ता, इंदौर

माँ –माँ, देखो मैं आई
चिल्लाते हुए खुशी से
जोर से डोर बेल बजाई
दरवाजा पापा ने खोला
थोड़ा मुस्कुराए फिर बोला
वह देखो बाल्टी–मग बाहर रखा है
साबुन से हाथ पैर धो लो
मैं चकराई,पूछा 'माँ कहां गई'
मेरे स्वागत में आरती–थाल न लाई
कोई बात नहीं, मैंने सोचा
हाथ–पैर धो कर अंदर कदम रखा
भाई सामने से आता दिखा
प्यारे भाई, मैं दौड़ी, पर
उसने अपना हाथ दिखा मुझे टोका
ओ मेरी प्यारी बहना
क्यों आ गई ? ये है कोरोना
क्या हो जाता यदि मैं इस बार
ऑनलाइन राखी बंधवा लेता
चेहरे पर मेरे गुस्सा आया
ना गले मिलना
न हाल–चाल पूछना
ना मुस्कुराना
बस दूर दूर से दिखावा करना
तभी कमरे का दरवाजा खुला
कमर पर हाथ धरे
भाभी रानी को देख
चेहरा मेरा फूल सा खिला
पर उधर से भी टका सा जवाब आया नंदरानी, इस साल ना आती तो
कौन सा पहाड़ टूट पड़ता
हमारा नहीं तो अपने
भतीजे–भतीजी का ही
ख्याल कर लिया होता
दिल मेरा गले–गले तक आ गया
कुछ बोलूँ तब तक रसोई से
माँ का स्वर सुना गया
सुनो बिटिया,
पीछे के आंगन का कमरा
तुम्हारे लिए खाली कर दिया है
अब चौदह दिनों के लिए
उसमें आइसोलेट हो जाओ
सामाजिक दूरी को पूरा निभाओ
उसके बाद हम–तुम मिलेंगे
इतनी बेइज्जती और बेरुखी
कमबख्त कोरोना की ऐसी की तैसी
दरवाजे की तरफ भागी
तभी साबुन से पैर फिसला
और मैं गिरी धड़ाम
आँख खुली और पाया खुद को
पलंग से नीचे, हाथ पैर सब जाम
ओ भगवान, अच्छा हुआ
जो यह सब निकला एक सपना
कोरोना वाला रक्षाबंधन
अब तो दे दिया पर इसके बाद
ओ रब्बा, कभी मत देना
भाई–बहन का प्यार
कभी कम मत होने देना
तभी मोबाइल पर घंटी बजी
उधर से माँ की आवाज आई
बेटा, आ रही हो ना।।

♦♦ लघुकथा ♦♦

स्वतंत्रता दिवस

सुमन तनेजा

आप यह क्या टीवी लगा के बैठ जाती हो

सुबह सुबह ! क्या हो जाएगा आपके भाषण सुनने से, उधर से बिटिया की भी आवाज़ सुनायी पड़ी

सोने दीजिए न मम्मी इतनी मुश्किल से मिलती है छुट्टी

आप की देशभक्ति !

यह देश है वीर जवानों का अलबेलों का मस्तानों का, इस देश का यारों क्या कहना ! बज रहा था

विजय ने आक़र टीवी को म्यूट किया

आभा सोने दो न उन्हें बच्चों को वक़्त ही कहाँ मिलता है, आभा उत्साह से बना रही थी तिरंगा हलवा छोले पालक की हरी गाजरचुकंदर की नारंगी लाल पूरी काआटा तीन रंगों की पूरियाँ स्वतंत्रता दिवस उत्सव का नाश्ता !

उसके रग रग में गूंज रहा था वन्दे मातरम् सुजलाम सुफ्लाम् कितनी ऊँची आलाप है इस गीत की !यह सब क्यूँ उत्साहित नहीं होते स्वतंत्रता दिवस पर ! शायद जानते नहीं महत्व स्वतंत्रता का

सोचने का वक्त ही नहीं इनके पासइतिहास इनके लिए केवल एक विषय था पढ़ने को ,देश प्रेम की भावना इनकी मानसिकता में है ही नहीं क्या,इनको पैसा कमाना है और पार्टी करनी है बस वीकेंडपर अपने देश में या विदेश में और अपने अपने देश की समस्याओं का मज़ाक़ बनाना, ख़ूब बनाया जाता, अव्यवस्था की ख़ूब चर्चाहोती और विदेशों की चकाचौंध से ख़ूब तुलना और निंदा! उसका मन उदास हो जाता इन्हें कितनी बचपन से उसने बोस गांधी जी भगत सिंह, आज़ाद झाँसी की रानी की कहानियाँ सुनायीं, २६ जनवरी की परेड भी दिखायी वो सब भूल कैसे जाते हैं, कि शहीदों को याद करना उन्हें श्रधांजलि देना कितना महान कार्य है !

आज़ादी का पर्व उसके तो मन मस्तिष्क को झँझोरता एक एक बलिदानी के प्रति नतमस्तक होनाचाहता ! जंगे आज़ादी कितनी कठिनाइयों के पश्चात हासिल हुई थी हमें ! बँटवारा भी हुआ कितनीमार काट ! आज भी स्मरण करो तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं ! इन आज की पीढ़ी को नहीं करना पड़ा कोईसंघर्ष तो उसकी क़ीमत क्या ज़ानेगें !

लाल क़िले के प्राचीर से प्रधानमंत्री का भाषण सुनना उसे सदैव जोश से भर देता,जय हिंद का नारा उनके साथ बोलना हमेशा से प्रिय था उसे ! जैसे वो तो साकार अनुभव करती यह रोमांच ! चाय बना दीजिए मम्मी !विकास की आवाज़ आयी !नाश्ता बनाओ भाई पति की भी पुकार हुई

जी बस यह सुन के बनाती हूँ

तिरंगी बच्चों की पोशाकें, लहराता तिरंगा

और प्रधान मंत्री जी की पगड़ी की चमक उसका मन मोह रही थी !

माननिय अतिथियों की भवभंगिमाए आकर्षित करतीं उसे!

खड़े हो पूरा राष्ट्र गीत गा सुन कर ही जाऊँगी रसोई में !

भारत माता की जय का नारा लगाते बनी चाय

और

ए मेरे वतन के लोगों को सुनते सिकती रहीं पूरियाँ !

कठिनाई और कितनी तपस्या व आंदोलन के बाद मिली स्वतंत्रता का सम्मान और सेलीब्रेशन तोबनता है !

मुस्कुराती हुई आभा गोरवांन्वित हो रही थी अपने देश को मिलते अनतरष्ट्रिय सम्मान और प्रधानमंत्रीजी द्वारा बताए प्रगति के नवीन आयामों को स्मरण क़र!

दिन में फ़िर से बताऊँगी बच्चों को कि भारत अबविश्व गुरु बनने की ऊँचाइयोंको छू रहा है !!

जानते तो हैं यह सब फ़िर भी दोहराते रहना चाहिए !

चलूँ टीवी पर शायद शहीद भगत सिंह या पूरब पश्चिम फ़िल्म आ रही हो तो बढ़िया बीत जाएगा दिन!

♦♦ लघुकथा ♦♦

ऋषि

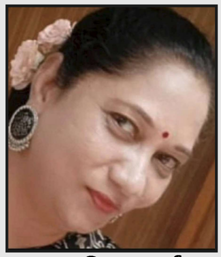

यति शर्मा

मंदिर के अहाते से जितने भी फूल और पत्तियां निकला करती वह सभी पुजारी बाहर फेंक दिया करता था। ऋषि नाम का लड़का नाम से ही ऋषि नहीं था वह कर्मों से भी ऋषि है।

दिन रात बाहर मंदिर के बाहर रखे वह जूतों की सेवा करता था और फिर पुजारी द्वारा फेंके गए फूल और पत्तियां वह से उठा कर दूर एक स्थान पर, ढोकर एक जगह इकट्ठा कर दिया करता।

पुजारी और आने जाने वाले लोग अक्सर उस पर हंसा करते , लेकिन वह विचलित ना होता। उस उपहास की वह जरा भी चिंता ना करता था।

उसे लगता कि उनका उपहास उड़ाना मतलब उसको अपने स्थान पर अडिग रहने के लिए और विश्वास और प्रेरणा देता है।

कहते हैं मन चंगा तो कठौती में गंगा, बस यही एक वचन उसकी मां का दिया हुआ था। जिस पर वह चलता रहता था।

मंदिर में जूतों की सेवा करने के बाद पुजारी द्वारा फेंकी गई फूल की मालाएं पत्नियां सभी वह इकट्ठा करके बोरी में भरता और अपनी रेडी में डालकर एक जगह इकट्ठा करता रहता।

आज वह उस स्थान उन सभी चीजों से भर गया था।

उसने तुरंत वहां एक गहरा गड्ढा किया उसे उस गहरे गड्ढे में भरने का उपक्रम करने लगा। उसे उस काम में कम से कम तीन दिन लग गए।

उन तीन दिनों में इस गहरे गड्ढे में उसने सभी फूल मालाएं पत्तियां डालकर ऊपर मिट्टी डालकर उसे दबा दिया।

यह क्रम उसने दो–तीन गड्ढे खोदकर भी पूरा किया था। आज इस बात को पंद्रह दिन हो गए थे।

पुजारी जी ने आज क्रोध में आकर ढेर सारी फूल मालाएं उसके सामने दे मारी और कहा, निकम्मा कहीं का, कुछ नहीं तो यह काम तो बहुत अच्छे से कर लेते हो। उठाकर ले जाओ। ना मालूम इनका यह क्या करता है? पगला कहीं का, ...कुछ और काम धाम क्यों नहीं करता,' लेकिन वह पुजारी की किसी बात का बुरा ना मनाता।

मन का बहुत सीधा और सरल था।

आज वह मन में ठान कर मंदिर से निकला था कि आज वह उस गड्ढों को खोलेगा।

लोग भी हैरान थे कि आखिर ऋषि चाहता क्या है ? आज ऋषि उन गड्ढों को खोलता है।

अब वह फूल पत्तियां और दूसरी मालाएं खाद बन चुकी है।

वह खुशी से फूला ना समाया। उसने सारी खाद को फिर इकट्ठा किया और जाकर नर्सरी में बेच आया। आज माली भी हैरान था उसने हर्षित हो कर ऋषी से पूछा, '....कि जो खाद तुम देकर जाते हो, देखो हमारे पौधों की शक्ल और इनका स्वास्थ्य, कितना खूबसूरत हो गया है। कहां से लाते हो यह खाद ? लेकिन ऋषि ने कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप पैसे लेकर वापस लौट आया।

घर आकर उसने मां को पैसे पकड़ा दिए। मां ने बेटे को आशीर्वाद दिया और कहा कि कोई भी वस्तु बेकार नहीं होती, उसका मोल क्या है ये कोई नहीं जानता, ऋषि ! लोग क्या कहते हैं क्या नहीं, इस पर ध्यान मत दो। सिर्फ अपने कर्मों पर ध्यान दो।

आज ऋषि जिस पर लोग उपहास उड़ाया करते थे उसकी आज एक दुकान है और उस दुकान के अंदर लोग खाद खरीदने आते हैं। जिसका कभी लोग मजाक उड़ाया करते थे आज उसकी पूजा करते हैं। ऋषि ऋषि ना होकर सब की आंख का तारा बन चुका था।

ऋषि ने खुद का ही नहीं देश का नाम भी रौशन किया है। जय हिन्द

♦♦ लघुकथा ♦♦

वे चार दिन

सरिता गुप्ता
दिल्ली

कॉलेज से लड़कियों का ग्रुप अपनी मस्ती में बतियाते हुए चल रहा था। तभी काजल बोली– "आज मौसम भी सीटी बजा रहा है चलो शाम की मूवी प्लान करें"...। सारी सहेलियों ने सहज स्वीकृति दे दी कि कल तो रविवार की छुट्टी है। सब शाम को पिक्चर देखने चलते हैं"। शालिनी की कोई प्रतिक्रिया न पाकर सब ने एक साथ कहा– "शालिनी तुम चुप क्यों हो"? शालिनी बोली– "मुझे शाम को कहीं जरुरी काम से जाना है इसलिए मैं मूवी नहीं जा सकूँगी"। परी ने टोकते हुए कहा–" ऐसा कौन सा काम है जो... शालिनी ने परी की बात को बीच में काटते हुए कहा– देखो! तुम सब जानती हो लड़कियों के लिए महीने के चार–पांच दिन कितने कठिन होते हैं। हम सब अच्छे परिवार से हैं इसलिए हम इन दिनों होने वाली परेशानियों से अछूते हैं। मैं एक संस्था से जुड़ी हूँ जिसके बारे में मैंने कभी तुम्हारे सामने जिक्र नहीं किया। मैं उस संस्था के सदस्यों के साथ हर रविवार ऐसे इलाकों में जाती हूँ जहाँ स्त्रियों को महीने के दिनों में रक्त स्राव को रोकने के लिए साफ कपड़े भी नहीं मिलते। बड़ी बड़ी इमारतों को बनाने में जो महिलाएं घर से दूर आकर काम करती हैं वे इन दिनों में प्लास्टिक की थैली में रेत भर कर मात्र एक पतला सा कपड़ा उस पर रखकर अपने इन दिनों को कैसे बिताती हैं सुनकर भी रूह कांप जाती है। हमारी संस्था ने ऐसी महिलाओं के लिए घरों से साफ पुराने कपड़े बाँटने की एक मुहिम चलाई है। हम सब अपने घरों के साथ साथ अपने अड़ोस पड़ोस और मिलने जुलने वालों से भी पुराने कपड़े इक्टठा करते हैं। हर रविवार झुग्गी झोपड़ियों में जाकर इनका वितरण करते हैं। सच कहूँ तो जो खुशी जरुरत मंदों की सहायता करके उनके चेहरे की मुस्कान को देखकर मिलती है वह खुशी पिक्चर देखकर नहीं ...। सारी सहेलियों ने एक साथ कहा– "मूवी कैंसिल.... कल हम सब भी शालिनी के साथ चलेंगे। जल्दी जल्दी घर चलते हैं। घर जाकर पुराने कपड़े भी तो निकालने हैं। तभी निधि बोली–" मेरी मम्मी के क्लीनिक में केयर फ्री के बहुत सारे पैकेट रखे हुए हैं जो सैम्पल के लिए आते ही रहते हैं। जिन्हें आने जाने वाली गरीब महिलाओं को मम्मी अक्सर देती हैं। अब वे सारे पैकेट मम्मी से लेकर मैं भी झुग्गियों में वितरण करने के लिए शाम को तुम्हारे साथ चलूंगी"। सबकी बात सुनकर शालिनी ने सबको थैंक्यू कहा और हवा में हाथ हिलाकर शाम को हनुमान चौक पर मिलने का वादा करते हुए स्कूटी से आगे निकल गयी।

♦♦ लघुकथा ♦♦

पसलियाँ

इन्दुकांत आंगिरस

लाल बत्ती चौराहे पर उस नर–कंकाल को देख कर मैं लगभग जड़ हो गया। उसकी ख़ाली कुर्सी वही पड़ी थी लेकिन औरत ने उसे पकड़ कर खड़ा कर रखा था और उसके दोनों हाथ भीख माँगने के लिए फैला रखे थे। मैं गुस्से में तमतमाते हुए उस औरत पर बरस पड़ा–

"तुम्हे शर्म नहीं आती। इस पिंजर को अस्पताल में होना चाहिए और तुम चौराहे पर इसकी नुमाइश कर रही हो।"

वह सकपका कर बोली– "बाबू जी, इसको पकडे रखने में मेरी भी पसलियाँ दुखती हैं लेकिन क्या करूँ मजबूरी है। अगर यह कुर्सी पर बैठ जाता है तो लोगो की नज़र इस पर नहीं पड़ती और इसके खड़े रहने से इसकी एक एक पसली भी दिखाई देती हैं। लोग यह जान कर कि ये मरने वाला है इसके कफ़न के लिए पैसे दे जाते हैं।बच्चें तीन दिन से भूखे हैं तो मैंने सोचा कि खुद को बेचने से पहले इसकी नुमाइश ही कर दूँ।

उसकी दलील सुन कर मैंने अपनी नज़रें झुकाई और आगे बढ़ गया।

♦♦ लघुकथा ♦♦

सीता के बुंदे

शशि महाजन
(नाइजीरिया)– लेखिका

आचार्य आदिनाथ के गुरूकुल में वसंतोत्सव मनाया जा रहा था। राम, सीता तथा लक्ष्मण सादर निमंत्रित थे। एक बहुत प्रसिद्ध नाटक मंडली जंगल के इस ओर यात्रा करते हुए आ पहुँची थी, गुरू आदिनाथ चाहते थे कि वे तीनों इस दल की कला प्रदर्शन का आनंद उठाने हेतु अवश्य पधारें।

सूरज पश्चिम की ओर बढ़ रहा था, नाटक के लिए कोई विशेष मंच नहीं था। आरंभ में दर्शकों का स्वागत करते हुए भरत मुनि के नव रस की महिमा में वाद्य यंत्रों के साथ एक गीत प्रस्तुत किया गया। मुख्य प्रस्तुति का विषय था शिव – पार्वती की घरेलू नौंक झोंक। दोनों कलाकार नृत्य निपुण थे, देखते ही देखते ऐसा रस बंधा कि दर्शक भाव विभोर हो गए। श्रृंगार से शांत रस की यात्रा में सभी के ह्रदय तृप्त हो गए। मन की सारी तुच्छता धुल गई, जो शेष रहा, वह था निर्मल आनंद।

वे तीनों अभी उसी भाव में ही थे, कि शिव पार्वती बने कलाकार उसी वेशभूषा में उनके समक्ष आ खड़े हुए।

"राम कैसा लगा हमारा प्रयास?"शिव बने युवक ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

"अद्भुत! क्या नाम हैं आपके ?" राम ने मुस्करा कर कहा।

"जी, मैं रोहित और यह मेरी पत्नी भानुमति हैं।" शिव का रूप धारण किए युवक ने कहा।

"इस तरह आपके समक्ष आने के लिए क्षमा चाहते हैं, परन्तु हम जाने से पहले आपका आशीर्वाद लेना चाहते थे।" भानुमति ने कहा।

राम ने सीता को देखा। सीता ने अपने कान के बुंदे निकाल कर उनकी ओर बढ़ा दिये।

"नहीं, आशीर्वाद से हमारा अभिप्राय आपकी शुभेच्छा से था, आचार्य ने हमें हमारा पारिश्रमिक दे दिया है।" भानुमति ने कहा।

"कलाकार को पारिश्रमिक नहीं दिया जा सकता, वह हमारा चैतन्य है, वह अनमोल है, इसे हमारा स्नेह और आभार समझ कर स्वीकार कर लो।

सीता ने भानुमति की हथेली में बुंदे रख उसे बंद करते हुए कहा।

भानुमति ने हिचकिचाते हुए आदर पूर्वक उसे स्वीकार कर लिया।

उनके जाने के बाद राम ने गुरू से कहा,"गुरूवार मुझे लगता है, शिव भारतीय चिंतन और भावनाओं का सबसे सुंदर रूप है। उनमें ध्वंसक और सर्जक, योगी और ग्रहस्थ, सरल और कठिन, कलाकार और प्राकृतिक सब मिल गए हैं। वे हिमालय की चोटी पर हों या किसी महल में, वे सब जगह सहज हैं। इससे परे, इससे सुंदर कुछ भी तो नहीं।"

"ठीक कहा राम, परन्तु सोचकर दुख होता है कि आज इस महान चिंतन के उत्तराधिकारी अपनी जीविका के लिए दर्शकों के स्तर के अनुसार स्वयं को ढालते फिरते हैं, जो समय साधना में जाना चाहिए, वह मेलजोल बढ़ाने में चला जाता है।"

राम गंभीर हो उठे,"यह कठिन प्रश्न है। उपभोग की वस्तु को नापा तोला जा सकता है। मन और बुद्धि सूक्ष्म हैं, उनका रस भी अमूर्त है, उसे भौतिक वस्तुओं के साथ कैसे तोला जाये, यदि कलाकार साधक नहीं तो उसकी कला भी सम्माननीय नहीं।"राम ने जैसे सोचते हुए कहा।

"तो क्या राम के युग में कलाकार निर्धन रहेगा ?"गुरू ने उत्तेजना से कहा ?"

"नहीं। मैं जानता हूँ जिस प्रकार किसान बीज बोता है और सारा समाज उससे पोषण पाता है, उसी प्रकार कलाकार, और दार्शनिक समाज को मानसिक संतुलन देते हैं। मैं उनके लिए जितना भी कर पाऊँ कम है, परन्तु आज, अभी इस प्रश्न का उतर मेरे पास नहीं है।"

राम, सीता, लक्ष्मण कुटिया पहुँचे तो देखा रोहित और भानुमति सादे वेष में उनकी प्रतीक्षा में बाहर खड़े हैं।

उनके आते ही भानुमति ने सीता के चरण स्पर्श कर कहा,"यह बुंदे आप रख लीजिए, कलाकार यदि आवश्यकता से अधिक लेगा, तो ईश्वर प्रदत्त इस प्रतिभा का अपमान होगा। समाज यदि हमारा पोषण करता है तो स्वयं के जीवन को और संवारना हमारा नैतिक कर्तव्य हो जाता है।"

"तुम्हारी बातें तो तुम्हारी कला से भी अधिक मोहक है। सीता ने मुस्करा कर कहा।

"मैं इन्हें ले लेती हूँ, तुम्हारे जीवन मूल्य मेरे इन बुंदों से बहुत बड़े हैं।"

रोहित और भानुमति प्रणाम कर लौट गए। वे तीनों बहुत देर तक शांत बाहर आसमान देखते हुए बैठे रहे, जैसे मन के सौंदर्य ने किसी बीज की तरह शब्दों को स्वयं में धारण कर लिया हो।

अंत में राम ने कहा,"जब तक मेरे देश का कलाकार सच्चा है, तब तक मेरा देश स्वतंत्र है, चिंतन प्रखर है, और आत्मविश्वास दृढ़ है।"

सीता ने कहा,"इन पर बहुत गर्व हो रहा है।"

लक्ष्मण ने खड़े होकर अंगड़ाई लेते हुए कहा, पहली बार अनुभव कर रहा हूँ,"सच्चा सुख क्या है !"

राम, सीता भी भीतर जाने के लिए मुस्करा कर खड़े हो गए।

⧫⧫ लघुकथा ⧫⧫

जया आर्या

हिफाज़त

रेहाना अब्बास ने अभी देहरादून के नेशनल नेशनल डिफेंस अकेडमी में पासिंग आउट परेड में फौजीवर्दी में राष्ट्र ध्वज को सलामी दी, और सर्वश्रेष्ठ कैडेट का पदक प्राप्त किया। फिर 'पिपिंग सेरेमनी' मेंलेफ्टिनेंट का रैंक प्राप्त कर जल पान के समय अपनी अम्मी शमीम अब्बास और अब्बू अफिज़ अलीअब्बास के पास आकर सेल्यूट किया। अम्मी ने माता चूम लिया और अब्बू ने सिर पर हाथ फेरकरकहा," हमारी बेटी खुदा के बताए रास्ते पर चलेगी और देश की हिफाज़त करेगी। इंसानीयत को ज़िंदारखेगी। अब हम चैन से हज पर जा सकेंगे।"

स्कूल के दिनों से जब रेहाना सुनती थी कि मुसलमान आतंकवादी है, ISI एक संगठन बना रहा है, कश्मीर की हालत– तो तिलमिला जाती थी और अपने अब्बू से कहती थी "सारी समस्याएं तोहम खत्म नही कर सकते पर हम देश के लिए लड़ेंगे ज़रूर। मैं आर्मी में जाऊँगी मेरे बाद और भीआएंगे। मैं इन्फेंट्री में ही जाऊंगी"।

"बेटा बहुत कम लड़कियां इन्फेंट्री लेती है। हमेशा परिवार से दूर रहना पड़ेगा फील्ड की परेशानियांअलग हैं। पर वह अडिग रही।"

"ठीक है, तुम अपने दिल की सुनो, अपने जुनून को देखो, सबके लिए मिसाल बनो, ज़िंदगी एक जंग हैहर कदम उसका मुकाबला करो अपने जड़ो की हिफाज़त करो।"

मैं और मेरी आत्मा

विभा राज "वैभवी"
नई दिल्ली

मेश की बहू ओ रमेश की बहू सुनती ना हो, इतनो गलो फाड़ रही हूँ शान्ता अपने कमरे से चिल्लाती हुई बाहर आई। पर कोई जवाब नहीं आया। आता भी तो कैसे? शादी के 20 वर्षों के बाद शान्ता ने अपनी बहू को रमेश की बहू कहकर बुलाया था, क्योंकि शान्ता तो उसे कुलटा कहकर ही बुलाती थीद्य क्यों बुलाती थी कुलटा सिर्फ इसलिए कि राधा शान्ता की नहीं रमेश के बाबूजी की पसंद थी और उसरात जब रमेश के छोटे भाई के सिर में दर्द हो रहा था तब वह भागता हुआ अपनी भाभी के पास आयाथा, स्नेह वश राधा की गोद में लेटा था और मातृत्व के साथ राधा उसका सिर दबा रही थी बस इसीबात का शान्ता ने बतंगड़ बना दिया थाद्यलेकिन राधा की 20 वर्षों की सेवा और स्नेह के कारण अबअचानक रमेश की बहू कहकर बुलाया तो, राधा को लगा जैसे किसी और को बुला रही हैद्य राधा भी चुप–चाप बिना कुछ कहे दिन रात अपने आप को कुलटा कहलवाती रहती थी.....

पर क्यों???? इसका जवाब तो राधा के पास ही थाद्य एक दिन मुझसे रहा नहीं गया और मैंनेपूछ ही लिया कि क्यों अपनी सास की मनमानी सहती हो क्यों कुछ कहती नहीं? उसने पता है क्याकहा?? उसने कहा कि मेरी सास को मुझे गाली देने में आनंद मिलता है और मैं उन्हें इस आनंद से दूरनहीं रखना चाहती और वैसे भी अब तो वर्षों से आदत हो चुकी है सुनने कीद्य यदि तुम नहीं होती मेरे पासतो,मैं अपना दुःखड़ा किसे सुनाती? और मैं कौन हूँ?हा हा हा हा हा......

मैं तो स्वयं राधा ही हूँ जो अक्सर शीशे के सामने आ कर खुद से खुद की बातें कियाकरती है और अपने मन को हल्का करती रहती है। जिसे अपनी आँखों के आँसुओं को छुपाने में महारतहासिल है।

♦♦ शोध आलेख ♦♦

उत्तिष्ठ भारत: मां भारती पुकारती सात्विक चेतना के दायित्वबोध द्वारा जिम्मेदारी और जवाबदेही का क्रियान्वयन

डॉ. अजय शुक्ल (व्यवहार वैज्ञानिक)
देवास–455221, मध्य प्रदेश
दूरभाष : 9131099097 / 9826449385
Mail : drajaybehaviourscientist@gmail.com

"संपूर्ण विश्व के नवनिर्माण में – 'विश्व गुरु की महानतम' भूमिका का निर्वहन – 'भारत भाग्य विधाता...' की महान कल्पनाशीलता, सृजनात्मक परंपरा एवं नवाचारी दृष्टिकोण द्वारा ही पूर्णरूपेण संभावित एवं सुनिश्चित है जिसमें–सर्व मानव आत्माओं के उत्कर्ष में ' नैसर्गिक जागृति से उन्नतशील–'परिवर्तित, परिमार्जित, परिवर्धित और परिष्कृत' स्वरूप की व्यावहारिकता में परिणित होकर ही– 'हम भारत के भाग्यशाली लोग...' राष्ट्र उत्थान के परिदृश्य एवं परिवेश में – 'राष्ट्रहित के लिए सर्वस्व न्योछावर...' अर्थात स्वयं को आत्मार्पित करते हैं। "

उज्ज्वल चरित्र की व्यावहारिक पक्षधरता : भारतीय जनतंत्र का अंतःकरण सुप्रभात की मंगल बेला में अभिप्रेरणात्मक शक्ति संचार की अनुभूति के साथ–उत्तिष्ट भारत के रहस्य को अपनी मनःस्थितियों से स्वीकार कर चुका है क्योंकि मां भारती की पुकार उसके जीवन तक पहुंच गई है और श्रेष्ठ नागरिक बोध ने अपनी सामर्थ्य शक्ति को समर्पण के मार्ग तक ले जाने का निश्चय कर लिया है क्योंकि यदि अब नहीं जागे तो राष्ट्र का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा और जब हमारी स्वतंत्रता का सबल पक्ष ही धराशाई हो जाएगा तो हम उसके पश्चात जीवन जीकर भी क्या करेंगे? जागृति का व्यावहारिक पक्ष कहीं ना कहीं से हमें कर्तव्यनिष्ठा की ओर ले जाता है जिसमें कर्म के प्रति संचेतना जागृत होना स्वाभाविक है परंतु मानवीय चिंतन का चैतन्य सकारात्मक पहलू, सदा साथ निभाते रहे इसके लिए आवश्यक है कि हम पूर्णतः कर्मनिष्ठ बन जाएं।

राष्ट्र प्रेम के प्रति उद्दाम चरित्र की अभिव्यक्ति हमारे कृत्य द्वारा ही संपादित हो सकती है जिसे भावनात्मक पक्ष के सहारे उकेरना संभव प्रतीत नहीं होता क्योंकि भावनाओं के सानिध्य में सैद्धांतिक परिवेश का निर्माण तो किया जा सकता है लेकिन उसका क्रियान्वयन तो हमारे उज्जवल चरित्र का व्यवहार पक्ष ही मुखरित कर सकता है।

अखंड राष्ट्र की रक्षा में स्वयं का उत्सर्ग : मातृत्व की उदारता ने जब हमारे पालन–पोषण में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया तो उसकी पुकार को कैसे अनसुना किया जा सकता है ? क्योंकि भारत मां की पुकार में संपूर्ण अस्तित्व ही समाहित है और उत्सर्ग का सौभाग्य किसी भी कीमत पर छोड़ा नहीं जा सकता। राष्ट्र ने हमें सब कुछ दिया है जिसकी अनुभूति के परिणाम को अंतरमन से हृदय में संजो लेना हम चाहते हैं जिससे कि यह बोध पूर्णतः स्पष्ट हो जाए कि– मैंने राष्ट्र को संपूर्ण जीवन काल में क्या दिया है ? सुनिश्चित जागृति के पश्चात ही भोर की परिकल्पनाओं को साकार किया जा सकता है जिसमें सौभाग्य का सम्मिश्रण पूर्णतः उस समय सुनिश्चित हो जाता है जबकि मानव द्वारा गतिशीलता को पूरे मन से आत्मसात कर लिया गया हो।

संकल्पित हृदय से जब यह स्वीकार कर लिया जाएगा कि दृ मुझे राष्ट्र की रक्षा में स्वयं का उत्सर्ग करना है तो कोई कारण नहीं कि हम अपने योगदान को निरूपित ना कर पायें। जागृति के लोकतांत्रिक दावों को झुठलाने का प्रयास नहीं किया जाना चाहिए लेकिन पंचों के मुख से परमेश्वर बोलने के यथार्थ को तो स्वीकार करना ही होगा जहां से कुछ ऐसे तथ्य एवं सत्य ऊभरकर सर्व मानव आत्माओ के सम्मुख प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रकट हो जाते हैं जिनके प्रति विकास के तमाम दावों के पश्चात भी कोई फर्क नहीं पड़ने वाली स्थिति आज भी बनी हुई है।

राष्ट्रीय चेतना का संपूर्ण चैतन्य स्वरूप : कर्तव्यनिष्ठा का आत्म संतोष हमारे लिए गौरव की बात बन जाए तब कहीं जाकर राष्ट्र के विकासात्मक परिप्रेक्ष्य में अपनी सहभागिता की सुनिश्चितता संपूर्ण रूप से निर्धारित की जा सकती है । हमारे आत्म तत्व को केवल भारत मां की पुकार ही राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप में झंकृत कर सकती है जिसकी अनुभूति न केवल आंतरिक रूप में बल्कि बाह्य क्रियाकलापों में भी सहज ही परिलक्षित होती रहती है। अब प्रश्न उठता है कि राष्ट्र के लिए हमारे समर्पण का स्वरूप क्या हो ? हमें कौन सा पक्ष विशेष रूप से अभिप्रेरित करता है ? क्या हम सोचते हैं कि एक बार में जो है वैसे ही न्योछावर हो जाएं ? समर्पण के प्रति हमारी स्वीकृतियां किस सीमा तक जा सकती हैं ? क्या अधिकार एवं कर्तव्य के प्रति हमारी सजगता समान रूप से भाव और विचार जगत को प्रस्तुत कर पाती है ? कर्म प्रधान विश्व रचि राखा...; की गरिमा आज मानव – बोध का प्रश्न

आखिर क्यों बन गया है ?

राष्ट्र के प्रति जागृत भाव किसी एकांत स्थिति का द्योतक नहीं है बल्कि वह तो जीवन के गुणात्मक स्वरूप को उद्दीप्त करने वाला सफल पक्ष है जो अंतःकरण की परिशुद्धता को मानव ह्रदय में बसाए रखने का सात्विक साधन बनकर, साध्य के प्रति कल्याणकारी दृष्टिकोण बनाए रखने में मददगार साबित होता है। उत्सर्ग के लिए आतुर ह्रदय कुछ भी समझने को तैयार नहीं है क्योंकि मातृत्व की उदारता ने हमारे निर्माण में सर्वस्व ही न्योछावर कर दिया जिसमें तथाकथित प्रश्नों की बौछार नहीं थी और आज जब मेरी बारी आई तो मैं प्रश्न वाचक चिन्ह की ओट में कैसे छिपकर बैठ जाऊं ? जननी के प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण विश्वास का प्रकटीकरण निश्चित ही हमें शक्ति संपन्न बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा केवल राष्ट्र– रक्षा के यज्ञ में स्वयं की समिधा को श्रद्धापूर्वक अर्पित करने की आवश्यकता है।

दायित्वबोध द्वारा जिम्मेदारी एवं जवाबदेही : राष्ट्रीय परिपेक्ष में – 'मातृभाषा, राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा...' की उपयोगिता और अनिवार्यता, दीर्घकालीन बोधगम्यता का अनुभूतिगत व्यावहारिक पृष्ठभूमि की पक्षधरता द्वारा–राष्ट्र की संप्रभुता संपन्न, एकता एवं अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु– 'राष्ट्रभाषा हिंदी' के माध्यम से ही सुरक्षित और संरक्षित किया जा सकता है जिसमें आत्म परिष्कार तथा राष्ट्र गौरव की– 'उपलब्धिपूर्ण प्रामाणिक पहचान' को विश्व समुदाय के मध्य पुरजोर रूप से पुनर्स्थापित करने के लिए– 'यही समय है, सही समय है अर्थात समग्रता का अमृत काल है'।

भारत विश्व गुरु की महानता के अंतर्गत– 'अतीत, आगत एवं अनंत तीनों ही स्वरूप में – 'था भी, है भी और सदा रहेगा भी' इसलिए संपूर्ण भारतीयता की मनोभूमि में प्रत्येक जिम्मेदार नागरिक स्वयं की– 'सात्विक चेतना के दायित्वबोध' द्वारा जिम्मेदारी और जवाबदेही का क्रियान्वयन– 'राष्ट्रहित और आत्म कल्याण' हेतु ईमानदारीपूर्ण व्यवहार से ही शेष जीवन में– 'संपूर्ण रीति–नीति से सफलता पूर्वक आत्म जगत के माध्यम से संपन्न किया जाएगा, यह संकल्पबद्धता जीवात्मा से आज हम सभी देशवासी श्रेष्ठ नागरिक के रूप में राष्ट्र की शपथ के साथ जीवन में अंगीकार करते हैं।

राष्ट्र की आराधना का पवित्रतम आह्वान : ' राष्ट्रभाषा हिंदी की गौरवशाली 'समृद्ध परंपरा को – 'भारत के स्वतंत्रता दिवस की 75 वीं वर्षगांठ' अर्थात – 'भारत की आजादी का अमृत महोत्सव' के महान अवसर पर संपूर्ण – भारतीय जनमानस अंतर्मन से सदा के लिए स्वीकार करते हैं क्योंकि राष्ट्र के मुखिया द्वारा संप्रेषित – 'मन की बात' को अंतःकरण से स्वीकारते हुए अमृतकाल में समस्त भारतीयता की राष्ट्रीय अवधारणा के माध्यम से – 'मन, बुद्धि एवं संस्कार' के साथ निज भाषा की गौरव गाथा – 'राष्ट्रभाषा हिंदी' को मानव जीवन में संपूर्ण – 'व्यक्तित्व विकास' की प्राथमिक अनिवार्यता के रूप में अंतर्मन से – 'आदर एवं सम्मान' पूर्वक आत्मसात करते हुए विकसित राष्ट्र की श्रेणी में स्वयं को रूपांतरित करते हैं।

हम – 'करें राष्ट्र आराधन...' के पवित्र आह्वान को भारत माता के सच्चे सपूत बनकर – 'संपूर्ण सत्व को अर्पित' करने का सबूत देने में समर्पित श्रेष्ठता जब – 'उत्तिष्ठ भारतः मां भारती पुकारती' की मंगलकारी ध्वनि की जीवंतता को क्रियान्वित करने में – 'राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए अमर बलि उईदानी' महान भारतीय सपूतों को – 'शत शत नमन... वंदन. ..एवं अभिनंदन... के साथ सादर प्रणाम... और भावभीनी... श्रद्धांजलि...' अर्पित करते हैं तथा निष्ठापूर्ण रूप से अमर शहीदों की गरिमामयी – 'राष्ट्रभक्ति, श्रद्धा एवं आस्था' को आत्म जगत से राष्ट्र – 'धर्म, कर्म एवं मर्म' के उज्जवल स्वरूप में सन्निहित – 'उच्चतम मानदंड' को शेष जीवनकाल में अनुकरण और अनुसरण करने हेतु दृढ़ संकल्प करते हैं।

संवेदनशील मानवता की गौरवशाली परंपरा : कर्म की गतिशीलता जब प्रबलता से अभिमुखित होती है तो उसमें जोश के साथ होश का समावेश केवल इतना संकेत देता है कि आमजन की सूझ–बूझ पर अभी कोई भी प्रश्न चिन्ह नहीं लगा है और वह अपने व्यक्तित्व एवम कृतित्व के सुदृण स्वरूप को भली दृ भांति समझता है। हमारे कर्मों में पारदर्शिता की परिणिति ही राष्ट्र के अखंड स्वरूप की रक्षा में अपना योगदान निरूपित कर सकती है। राष्ट्रीयता के बोध का आकलन हम अपनी कर्मगत भूमिकाओं से आसानी से लगा सकते हैं जब हमारे ही द्वारा अपनी सात्विक प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने का दुष्कर्म किया जाता है और हम उस वक्त उफ तक नहीं करते? अहम की टकराहट से जुड़ी मानसिक उद्विग्नता में जब हमसे यह कहलवा देती है कि देश ने मुझे क्या दिया.....? तो हमारी मानसिकता का दिवालियापन सिर चढ़कर बोलने का अभिनय करने लगता है। जीवन की परिवर्तनशीलता के लिए हमारे व्यवहार का बोझिल पक्ष उस समय समाप्त हो जाएगा जब हम दोषारोपण के अभिशाप से मुक्त होने का संकल्प कर लेंगे।

राष्ट्रीयता के बोध से भरे हुए हम सभी जन क्या...? स्वतंत्रता दिवस के महान अवसर पर भारत की अखंडता को बनाए रखने के लिए अंतःकरण से इस भाव , विचार एवं आत्म जगत को अभिव्यक्त कर पाएंगे ..? जिससे हमारी स्मृतियों में सदैव यह झंकृत स्वरूप में बना रहे कि– आखिर मैंने राष्ट्र को क्या दिया...? भारतीय आत्मा की विश्व स्तरीय गौरवशाली समग्रता से समृद्ध बौद्धिक संपदा से परिपूर्ण, संवेदनशील मानवता की ओर से – 'श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर एवं श्रेष्ठतम' के सानिध्य में सदा अग्रसर रहते हुए देश की – 'आन, बान और शान' को अखंड बनाये रखने में आत्मगत चेतना से समर्पित संपूर्ण देशवासियों को – 'भारत के स्वतंत्रता दिवस की 75 वीं वर्षगांठ' भारत की आजादी का अमृत महोत्सव, के पावन अवसर पर – ' विजयी विश्व तिरंगा प्यारा..., सदा झंडा ऊंचा रहे हमारा...' की शुभ भावना से समर्पित स्वरूप में – 'श्रेष्ठ , शुभ एवं पवित्र' आचार–विचार से ओतप्रोत, आशा और विश्वास की शक्ति से भरपूर, अनेकानेक...शुभकामनाएं...एवं हार्दिक.. आत्मिक... बधाई...जय हिंद...

⧫⧫ उपन्यास ⧫⧫

उपन्यास

तलाश अस्तित्व की भाग-2

अजय शर्मा

ट्रेन ट्रेन ट्रेन ट्रेन...

मोबाइल फोन की मधुर ध्वनि बहुत देर से लगातार बजे ही जा रही थी। आखिरकार मन मारकर यश को फोन उठाना ही पड़ा। "क्या अजीब मुसीबत है, छुट्टी के दिन भी चैन नहीं है।" सोचते हुए यश ने जैसे ही वनप्लस मोबाइल की स्क्रीन पर नजर डाली, तो उसने पाया कि उसके प्यारे दोस्त आकाश का फोन है। "क्या बात है यार, क्यों छुट्टी के दिन परेशान कर रहा है?" यश ने झुंझलाकर कहा। "सॉरी यार, क्या करूं, खबर ही ऐसी है।" आकाश ने गंभीर स्वर में कहा। यश का दिल धड़क उठा, "क्या बात है यार, पहेलियां मत बुझा, साफ–साफ बता, अपने ऑफिस में तो सब ठीक है ना? कहीं आज कोई इमरजेंसी मीटिंग तो कॉल नहीं कर ली?" "नहीं यार, ऐसी बात नहीं है। एक दुखद समाचार है। कल रात को अपने ऑफिस के राम बाबू जी के पिताजी का स्वर्गवास हो गया है। बुजुर्ग आदमी थे ।काफी समय से बीमार भी चल रहे थे। अब हम स्टाफ साथियों को उनकी शव यात्रा में जाना होगा। तू और मैं ही यहां सबसे पास में रहते हैं, बाकी तो काफी सब सवदह–कपेजंदबम पर हैं। हम कोई बहाना नहीं बना सकते और वैसे भी इंसानियत का तकाजा है। तो तैयार हो जा, मैं आधे घंटे में आकर तुझे पिक करता हूं। फिर दोनों रामबाबू के घर चलेंगे। "कह कर आकाश ने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया। यश जानता था कि आकाश काफी संवेदनशील और जज्बाती इंसान है। एक दूसरे के सुख दुख को समझने वाला, हमेशा सबकी मदद करने को तैयार रहने वाला। यश फ्रेश होकर जल्दी ही तैयार हो गया। सभी उसे बाहर आवाज आई और आकाश की गाड़ी का हॉर्न सुनाई दिया। अपने वन बीएचके फ्लैट को लॉक करके लिफ्ट से उतर कर तत्काल नीचे आया जहां आकाश उसका इंतजार कर रहा था। पूरे रास्ते भर दोनों में कोई बातचीत नहीं हुई। आकाश का चेहरा गंभीर था। मानो अंदर ही अंदर किसी ग़म को पी रहा हो। रामबाबू के घर का दृश्य बड़ा मार्मिक था। रोने पीटने की आवाजें आ रही थीं। शव यात्रा ले जाने की आवश्यक तैयारियां हो चुकी थीं। सभी पुरुष राम नाम लेते हुए शव यात्रा में शामिल होकर चलने लगे। श्मशान घाट पर मुखाग्नि देते समय रामबाबू का विलाप दिल को चीर रहा था। लेकिन क्या करें ,जो चले गए, वह किसी भी हाल में वापस नहीं आते। यश की आंखों के सामने अपने बीमार और लाचार बूढ़े मां–बाप का चेहरा आ रहा था। किसी दिन वे भी उसे छोड़कर ऐसे ही अनंत यात्रा पर चले जाएंगे। और वह रह जाएगा इस संसार में अकेला ,अपनी प्यारी बहन मेधा के साथ। जो कि अभी बहुत छोटी है और इस संसार में सुख–दुख के मायने ही नहीं समझती है।बस अपनी ही बनाई दुनिया में मगन रहती है। सच में बचपन कितना निश्छल और भोला होता है ना। उसकी आंखों में से दो बूंद आंसू चुपचाप ढुलक गए। आकाश ने उसके कंधे पर हाथ रखा ।उसकी आंखें भी भीगी हुई थीं। दोनों दोस्त अपने घर परिवार से दूर पापी पेट की जरूरतों को पूरा करने के लिए उस अनजान महानगर में चले आए थे। वे अपनी सोच में डूबे हुए थे कि अचानक कुछ आवाजें आईं, लोगों ने लौटना शुरू कर दिया था। रह गया था तो केवल जलता हुआ वह मृत शरीर, जो अपने मूलभूत अवयवी पंचतत्वों में विलीन होता जा रहा था।तथा जिस में बसी जीवात्मा उसे छोड़कर जाने किस अज्ञात व अनंत सफर पर चली गई थी।

शव यात्रा से वापस राम बाबू के मकान की तरफ लौटते हुए दोनों दोस्त चुपचाप व गंभीर थे। सारा रास्ता सुनसान और एक अजीब भयावह सी नीरवता को समेटे हुए था। रास्ते में एक बहुत पुराना बरगद का विशालकाय पेड़ था। इस वर्ष को लोगों ने हमेशा से इसी तरह की स्थिति में देखा था। जैसे ही आकाश और यश उसके पास से निकले, वैसे ही यश को एक अजीब सी अनुभूति हुई। उसे लगा जैसे कोई हल्का वजन उसकी पीठ पर सवार हो गया है। उसने देखा कि कहीं आकाश ने तो अपना हाथ उसके कंधे पर नहीं रख दिया है। लेकिन नहीं, आकाश उससे कुछ दूरी पर चल रहा था, किसी से बातचीत करते हुए। तो फिर यह अज्ञात और अदृश्य बोझ कैसा? यश का पूरा बदन पसीने से नहा गया। समझ नहीं आया कि क्या हुआ? आसपास काफी लोग निर्लिप्त और निर्विकार भाव से चले जा रहे थे। किंतु यश का समूचा अस्तित्व एक अलग ही अनुभूति का साक्षी बन गया था। उसे पता नहीं था कि इसी पल उसके जीवन में एक अद्भुत और रहस्यमई सत्ता का प्रवेश हो चुका है।और अब ना चाहते हुए भी उसे उस अज्ञात और अदृश्य सत्ता के द्वारा खींची गई लकीरों पर चलकर अपने जीवन के रहस्यों की तलाश करने का अवसर मिलने वाला है।उसने अपने कंधों को झटकना चाहा। दोनों हाथों से कपड़ों पर लगी धूल को झाड़ा, मानो वह

उस रहस्यमई सत्ता को अपने से अलग कर देना चाहता हो। किंतु कंधों का वह बोझ तो अचानक हटने के बजाय धीरे–धीरे बढ़ता ही चला गया। यश को लग रहा था, मानो वह कोई पर्वतारोहण अभियान पर निकलने वाला यात्री हो और उसकी पीठ पर शेरपाओं की तरह बोझा लदा हो। किंतु जब बोझ असहनीय होने लगा तो अचानक उसके होठों से असफुट स्वर में निकला, "सारी, माफ़ कर दो।" आश्चर्य, तत्काल ही बोझ कम होने लगा तथा केवल सांकेतिक ही रह गया। रामबाबू का घर आ गया था कुछ देर वहां रुक कर, सांत्वना देकर और दो औपचारिक शब्द बोलकर दोनों दोस्त घर की तरफ चल दिए। यश को उसकी सोसायटी के गेट पर छोड़कर आकाश अपनी राह चला गया, कल मिलने और सॉफ्ट ड्रिंक कैंपेन पर गंभीरतापूर्वक सोचने की ताकीद करके।

तीसरा अंक आरंभ...

♦♦ कविताएँ ♦♦

शब्दकोष

डॉ. दिव्या माथुर यूके

शब्दकोष वह अदभुत था, 'युद्ध' शब्द उसमें न था
'शत्रु' का था न अता–पता, 'बारूद' बेचारा क्या करता

'घृणा' न थी न 'द्वेष' वहाँ, 'आहें' थीं न 'बीमारी'
न 'आँसू' थे न 'शोक' वहाँ, न 'मृत्यु' न 'गोलाबारी'

बंजर' शब्द का अर्थ वहाँ था, 'सरसों के जैसा पीला'
'पतझड़' था 'बसंत' वहाँ और 'मरुस्थल' था 'नीला'

'झूठ' वहाँ था 'जिज्ञासा', 'आलस्य' वहाँ था 'फुर्तीला'
था 'रोना' मुस्कान वहाँ और 'बेसुर' था 'एक गीत सुरीला

'विनम्र, परिष्कृत, सदय' तो थे, किंतु न थे 'नैराश्य, हताशा'
थे 'रामराज्य शुभ मंगलमय, सम्मान स्नेह, गौरव, मर्यादा'

शब्दकोष सीने पर रख, मीठे सपनों में व्यर्थ बही
सुबह आज जब मैं जगती काश कि रहते अर्थ वही!

वंदेमातरम

डॉ. नीलम वर्मा

मातृभूमि वंदन, पुण्यभूमि वंदन
वेदभूमि वंदन, देवभूमि वंदन
भरतभूमि वंदन, वीर भूमि वंदन
सुन्दर सजीला रूप है चंदन सा शीतल है
पवन माटी है संजीवन
पुलकित रुपहली रात है, स्नेह छलकाते नयन, महकते उपवन
मुस्कुराती खिलखिलाती, सुखदायनी चितवन वरद् अभिनंदन
शस्य श्यामलम
माँ भारती अनुपम
शत्–शत् नमन, शत–शत नमन
वंदेमातरम
अपने स्वतंत्र भारत में भर दें,
मिलकर हम सब ऐसे रंग
यहीं जन्म पाने की फिर से ,
मन में उठती रहे उमंग !

हिमगिरि पर शूरवीर सैनानी
खड़े थाम कर अग्नि–ज्वाल
प्राणों में उनके अनुबंधित
भारत माँ का रूप विशाल !
युवा परिश्रम प्रतिभा से जब,
आएगा घर घर उजियारा
संघर्ष सफल जब होगा सबका
,तब होगा प्रण पूर्ण हमारा !
आजाद हिन्द का शीश मुकुट
तिरंगा अम्बर में फहराएँ ,
आत्मनिर्भर हो राष्ट्र हमारा
वंदेमातरम सस्वर गाएँ !

♦♦ कविताएँ ♦♦

मेरा देश

सुनीता अग्रवाल

मेरा देश..भारत जिसका नाम है,
जहां, वेदों के मंत्रों से गुंजित स्वर, गूंजते हैं,
जहां, गीता गायकों के निस्पृह स्वर, गूंजते हैं,

जहां, आध्यात्मिकता से सिंचित, शुचि रूप धरती है,
जहां, संस्कृति..शुभ्र व अति उदात्त आदर्शों की निधियों से धनवान है,

जहां की तपोभूमि में,कर्म और निष्ठा की शांत नदी बहती है,
जहां, दर्शन की दिव्य आभा से ही जन जन का विहान है,

जहां, योग और भोग के मध्य, संतुलन का विज्ञान है,
जहां, नीति शास्त्र सम्मत, गुणवत्ता ही महान है,

जहां, बुद्धि के वर्चस्व से हर मानस अक्लांत है,
जहां, मनु, अज्ञेय, पतंजलि, सूर, कबीर, रहमान की सौगात है,

जहां गंगा, यमुना, सरस्वती के संगम से पवित्र धाम हैं,
जहां, दक्षिण में चरणों को पखारता, सागर सा सम्राट है,

इस ऋषि, मुनियों से लदी धरा को, श्रध्दानवरत प्रणाम है,

मेरे अन्तस् से प्रणाम है।
मेरा देश, भारत जिसका नाम है।

मां-टीका नज़र का

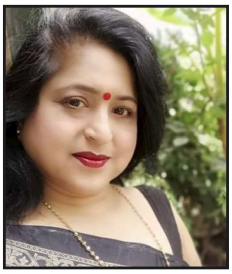

डॉ पूनम माटिया

टूटती जब हर इक आस है
माँ ही होती मेरे पास है
प्यार से मुझको सहलाती वो
मेरा हर लेती संत्रास है।

जब भी सपनो में आती है माँ
मुझको ढाढस बंधा जाती है
मेरी चिंता, सभी दुःख मेरे
साथ अपने वो ले जाती है।

मेरे बचपन की थाती है वो
मेरे जीवन की बाती वही
मुझको मानव बनाकर गयी
संस्कारों की देकर बही।

दोस्त बन जाती थी वो मेरी
संग घंटो वो बतियाती थी
अपने दुःख, सारी तकलीफ़ वो
भूलकर, गाती–मुस्काती थी।

आज भी मेरे मन में बसी
प्यार–ममता की मूरत है वो
सब बलाओं से रखती बचा
जैसे टीका नज़र का है वो।

♦♦ कविताएँ ♦♦

मेरा भारत देश

प्रशांत अवस्थी प्रखर

मेरा भारत देश महान ,मेरा भारत देश महान
राम,कृष्ण, गौतम की धरती ,
सब इसकी संतान
मेरा भारत देश महान, मेरा भारत देश महान

उत्तर में है हिमगिरी पर्वत
बहतीं जिसमें नदियां अविरत और दिशाओं से घेरे हैं
जल ही जल रत्नाकर शाश्वत सबसे प्यारी यह भूमि है,
हमको सकल जहान
मेरा भारत देश महान मेरा भारत देश महान
वेद पुराण भागवत गीता
गुरुवाणी है परम पुनीता
रामचरित मानस रामायण
करते जीवन सुखी सुभीता
इनके पढ़ने से होती है,
संस्कृति की पहचान मेरा भारत देश महान, मेरा भारत
देश महान दिव्य महात्मा ऋषि मुनि ज्ञानी संतज्योतिषी
और विज्ञानी तेजस्विनी विदुषियाँ जन्मीं
जन्मे ध्यानी त्यागी दानी
जप तप व्रत संग इस धरा पर, हुए हैं अनुसंधान
मेरा भारत देश महान, मेरा भारत देश महान
शौर्य पराक्रम की गाथाएं
इसके कड़ कड़ हमें सुनायें
वीर प्रताप पुरुषों की क्या
हैं वीरानी भी बालाएं
इन वीरों के बलिदानो पर,
हमको है अभिमान
मेरा भारत देश महान, मेरा भारत देश महान
मानव धर्म सिखाता भारत
सबको गले लगाता भारत
सर्वे भवंतु सुखिनः वाला
अनुपम पाठ पढ़ाता भारत
सकल विश्व को गले लगा कर, सबका करें सम्मान
मेरा भारत देश महान, मेरा भारत देश महान

अहसास

डॉ विजय पंडित

बहुत बार
इक्क्ठा किया मैंने
ओस के
असंख्य मोतियों को
सहेज कर रखता रहा हूँ
हथेलियों में
लकीरों की तरह
बिखेर दूंगा
धरा के आंचल में
फिर एक बार
प्यासा होगा
सावन जब
बेबसी में देखेगा
बादलों की ओर
झूम उठेगा सावन
खिलेगा धरा का
तन मन उपवन
शीतल हवा
घर के पर्दे हिला
करा जायेगी
पूर्णतया अनछुए
अहसास
चुपके से
लौट आयेंगे
फिर
एक बार
असंख्य मोती ओस के
करा जायेंगे
फिर अपनी
उपस्तिथि का
कोमल अहसास

♦♦ कविताएँ ♦♦

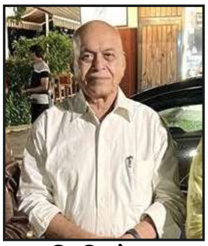

मरने का ग़म नही !

कर्नल डा गिरिजेश सक्सेना
भोपाल

मुझे मेरे मरने का ग़म नहीं, पर काश देख सकता मै,
असल क्या है दुनिया,असल क्या हैं ये रिश्ते, ये नाते।

किसके हैं सूखे आंसू, ग़मे तपिश मे ,रोया है कौन आंसू बहाके।
किसने बजायी है ताली, कौन हंसा जोर से है लगाकर ठहाके।

किसका है मन ज़ार ज़ार रोया,कौन रोया बेआँसू जग को दिखा के।
किसने लिया ग़म दिल पर है अपने,किसने जताया जग को सुना के।

हुआ अनाथ कौन सच मे, कौन अनाथ हुआ सिर्फ सर को मुण्डाके।
कोई चिता तक गया साथ मेरे, कोई खिसका सिर्फ कंधा लगाके।

मेरा मरना सिर्फ मरना नहीं है,मैं मरा आइना दिखा,लिटमस लगाके।
आप भी आइये मैय्यत मे मेरी ,कैफ़ियत तो देखूं मैं तुमको बुला के।

मरघट पे लगा जमघट ख़ूब भारी,थे बैठे व्यापारी सभी कंधा लगाके।
नहीं गम किसी को कौन मरा किसका मरा अपना क्या अपनी बलासे

इंसानी रिश्ते तो यूँ ही मरे थे,जो बचे थे मरे कोरोना पे इल्ज़ाम ढाके।
कोरोना कोरोना भी कैसा है रोना ,बेटा भी निकला है कंधा बचा के।

अलख जगाया था रिश्तों का मैंने,.जगा ना सका पर इंसानी रिश्ते वो नाते।
इंसानी रिश्ते ही आखरी आरज़ू है,पता चला है आज मर कर के मुझको,

सोचता हूँ और एक अलख जगाऊं,एक बार फिर से दुनिया मे आके।
हकीकत रिश्तों कि मरने पे जानी,इसलिए दोस्तों विदा दो हँसते हंसाते।

स्वाधीनता का पावन पर्व मनाएँ

अरुण भगत

तिरंगे की हम शान बढ़ाएँ,
चरित्र को अपने सबल बनाएँ,
लक्ष्य हों ऊँचे, साधन नेक,
आगे बढ़ें हम होकर एक,
आज़ादी के बनें रखवाले,
देश की गरिमा के मतवाले,
इस पुण्य धरा को शीश नवायें,
विश्व को शांति का पाठ पढ़ाएँ,
सबका साथ, सबका विकास,
सबके जीवन में घुले मिठास,
सबका हो सम्मिलित प्रयास,
राष्ट्र रचे एक नया इतिहास,
गौरवमयी इतिहास दोहराएँ,
अद्वितीय संस्कृति का ध्वज फहरायें,
अदम्य साहस, ज्वलंत ललाट,
सौभाग्य के खुल जाएँ पाट,
'स्व' अमृत का करें रसपान,
नए शिखर हों, नव सोपान ,
स्वाधीनता का पावन पर्व मनाएँ,
भारत को विश्वगुरु बनाएँ ,
जिससे विश्व का हो कल्याण,
जगत बने सुंदर उद्यान!
पुण्य भारत भूमि को स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर सादर और सप्रेम समर्पित

कविताएँ

कलयुग का छलयुग

माधुरी भट्ट

ये कहाँ आगए हम विकास की राह चलते–चलते,
आधुनिकता के नशे की अंधी दौड़ में बहते–बहते।

न जाने कब–कहाँ खो दी हमने सुसंस्कारों की इबादतें,
भटकते–भटकते हाथ लगी कुसंस्कारों भरी शरारतें।

जिन संस्कारों से पोषित हो बना था देश विश्वगुरु कभी,
उन्हीं संस्कारों की बलि चढ़ा बन गए कंगाल हम सभी।

अति जब कभी भी किसी चीज़ की हो जाती है,
सृष्टि कुपित हो अपना भयावह रूप दिखातीहै।

पाश्चात्य संस्कृति की देखा देखी भेजा मातपिताको वृद्धाश्रम ,
देख–देख उनकी व्यथा शर्मसार हुआ भारत माँ का आँचल।

अब आ गया समय कि टटोलें हम सभी स्वयं को,
अंधी दौड़ के पीछे न भाग करें पोषित अपनी संस्कृति को।

हर मर्ज़ की दवा है समाहित अपनी सभ्यता–संस्कृति में,
बस है ज़रूरत इतनी झाँके हमसब अपने– अपने दामन में।

हमारी समृद्ध सभ्यता–संस्कृति ही हमें बर्बादी से बचाएगी,
आओ करें संवर्धन प्रकृति का कि वह पुनः विश्व गुरु बन जाएगी।

बनकर

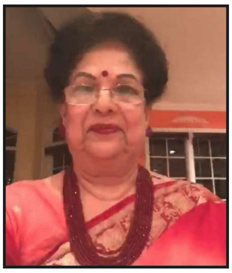

अनुराधा चन्दर यू एस

प्रेम की लगन में
जब जब भीगा मन मेरा
करना बारिश तुम प्रेम की !
राधा के कृष्ण बनकर !

जग में मच रहा जब हाहा कार
और चारो और फैला अत्याचार हो
तब तुम करना रक्षा जनमानस की
मथुरा के देवकीनंदन बनकर !

जब परीवार में ही घुल रहा ज़हर
और जंग अपनो के ही बीच हो
तब तुम बन जाना सारथी
अर्जुन के वासुदेव बनकर !

जब ज़िंदगी में अंधेरा ही अंधेरा हो
और ना ही कोई सहारा
तब तुम आ गले लगाना
सुदामा के कृष्ण बनकर !

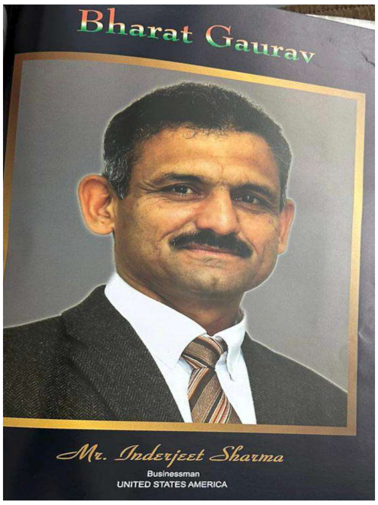

♦♦ कविताएँ ♦♦

15 अगस्त : स्वतंत्रता दिवस

रश्मि सिन्हा

बनावटी नफरत,
बनावटी लड़ाई,
ऊपर ऊपर क्रोध,
अंदर तो मोहब्बत है भाई

देश एक परिवार है,
परिवार में गर कलह है,
तो बेशुमार प्यार है-----
चीन हो या पाकिस्तान,
निभा कर देखे तो दुश्मनी

तब न कोई,
हिन्दू सिख,ईसाई
या मुसलमान है,सिर्फ एक नारा
जय जवान, जय किसान है

जान देने को आतुर फौजी
रक्तदान की लगी कतार है,
कल का विभाजित दिखता देश,
अनूठी एकता,
अनोखे जोश के साथ तैयार है

जाति न सम्प्रदाय,
ऊंच न नीच-----
बस इंसान ही इंसान,
और इंसानियत
15 अगस्त के स्वागत को,
बच्चा बच्चा तैयार है
ये है अखंड भारत,
जहाँ चप्पे चप्पे में प्यार है

15 अगस्त : स्वतंत्रता दिवस

सीमा वर्णिका, कानपुर

पंद्रह अगस्त सैंतालिस, लाल किले की थी प्राचीर।
भारत के प्रधानमंत्री ने, फहरा झण्डा बन नासीर।।
किया ध्वज को सलाम जग ने, राष्ट्र गान गूँजा चहुँओर।
खुशी प्रजा में आजादी की, हुई सुखद सुन्दर सी भोर।।

मुक्ति ब्रिटिश शासन से पायी, हुआ स्वतंत्र अपना देश।
पर्व राष्ट्रीय यह कहलाया, हुआ तिरंगामय परिवेश।।
देशभक्ति की बहती धारा, गूँज रहा है चहुँ दिश गीत।
मना रही उत्सव सब जनता, घुली हवा में मधुमय प्रीत।।

राजनीति के तनाव चलते, हुआ विभाजित भारत पाक।
धर्म निरपेक्ष हम कहलाए, पाक जमाए मुस्लिम धाक।।
लाँघ रेखा सीमा की आए, धर्म अनुसार अपने भाग।
झेल स्थानांतरण भटके थे, दिखें आज भी अंकित दाग।।

प्रतिवर्ष आयोजन होता, झण्डा फहराते दे मान।
सांस्कृतिक पारंपरिक झाँकी, अस्त्र शस्त्र की दिखती शान।।
दिखे राज पथ भारत गौरव,जल थल नौसेना अभिमान।
हार सुमन श्रद्धा के अर्पित, करें शहीदों का सम्मान।।

♦♦ कविताएँ ♦♦

आज़ादी

ज्योति जुल्का

आज़ादी
स्वाधीन विचारों की
हर घर लगते नारों की,
एकजुट हुए हुंकारों की,
नफरत पर प्रेम फुहारों की,
इस आज़ादी की कीमत थी,
वो लाशें वतन के प्यारों की।

इस आज़ादी के नाम पे ही,
अब फूंक दिए जाते हैं घर,
कहीं लुटती है अस्मत और,
धड़ से अलग होते हैं सर।

पावन नदियों की पुण्य धरा
और संत सनातन कर्मभूमि,
शिवा–प्रताप और लक्ष्मी बाई
महावीरों की यह जन्मभूमि,

मोल समझ आजादी का,
इसको व्यर्थ न जाने दो,
भारत मां के गर्वित सर को
बस यूं ही न झुक जाने दो।

हम चांद पर जाकर पहुंचे हैं,
मंगल तक यान उड़ाया है,
हम गरज कर जब भी निकले हैं,
दिल दुश्मन का दहलाया है।

हम आज़ादी के रखवाले,
हम देश नहीं झुकने देंगे,
अब धर्म, जाति या बोली पर,
हम देश नहीं बंटने देंगे।

आजादी

'डॉ रामचन्द्र स्वामी
अध्यापक बीकानेर राजस्थान'

अनेक वीरों ने कुर्बानी दी तब भारत देश आजाद हुआ।
आजादी का नार गूंजा स्वतंत्र देश का भारत में राज हुआ।

इस मिट्टी की खूशबु खातिर अनेक वीरों ने जान गंवाई।
हंसते हंसते फांसी पर चढ़ गये तब देश की आजादी पाई।

फिरंगियों ने जब देश छोड़ा देश को दो टुकड़ों में तोड़ा।
सरहद की सीमा बनाकर हिन्दुस्तान –पाकिस्तान नाम से जोड़ा।

न जाने कितनी मांये रोई,कितने बच्चे भूखे सोये थे।
न जाने कितनी मांगों का सिंदुर उजड़ा,अनगिनत वीरसपूत खोये थे।

आज जो तिरंगा लहरा रहा आजादी का अपनी पूरी शान से।
ये गौरवमई आजादी मिली अनेकों वीरों के बलिदान से।

आज गूंज रहा है गगन राष्ट्रभक्त वीरों के यशगान से ।
हमने आजादी का गौरव पाया सत्य –अहिंसा के स्वाभिमान से।

विश्वशांति का करता आह्वान ये प्यारा हिंदुस्तान।
अब मांग रहा है देश का युवा वसुदेव कुटुंबकम् का वरदान।।

♦♦ कविताएँ ♦♦

आज़ादी

कविता गुप्ता
शिक्षक, बेसिक शिक्षा
विभाग, उत्तर प्रदेश

निकली थी कृपाण यहां से साहस की यही रवानी थी
इस देश के दुश्मन को अब फिर से मुंह की खानी थी।

जिसने किया वार देश पर गर्दन कट कर ही जानी थी
वीरों के खातिर देश को फिर लिखनी नई कहानी थी।

मां का था जो लाडला जिस मां ने उसको खोया था
वीर जवानों की धरती पर यह देश भी घुटघुट रोया था।

आंगन में अग्नि देहकी थी नफरत की लाठी बरसी थी
गांधीवादी सांसो की धड़कन हर एक गली में सिसकी थी।

सड़कों पर खून की लहरें कल कल करके बिलख रही थी
मन में संयम की ढेरों बूंदे आशा में आंखें चमक रही थी।

हिंदू मुस्लिम बंधुत्व की गाथा गीतों की धुन में टपक रही थी
अमन चैन वाली बातें सब दुश्मन खेमे को खटक रही थी।

वर्षों तक संघर्ष चला आजादी की ऐसी व्यथा लिखी
जनता ने जान गंवाई थी हर ओर लाश ही लाश दिखी।

संघर्ष की बेला खत्म हुई आजादी का स्वाद चखा कण–कण
में खुशियां बिखरी नव भारत का निर्माण हुआ।

चंदन सी लगती है

सरिता वाजपेयी "साक्षी"
शाहजहांपुर

देश भक्ति की गाथाअभिनन्दन लगती है,
ये हमको "वतन की धूल चन्दन" लगती है।।

राम, कृष्ण ,गौतम गांधी के पावन स्वर गाती,
ध्रुव प्रहलाद की भक्ति के हमको भजन सुनाती,

तुलसी के मस्तक की रोली–बंदन लगती है।
ये हमको वतन की धूल चन्दन लगती है।।

बिस्मिल,रोशन अश्फ़ाक,भगत ने देश का मान बढ़ाया।
फांसी के फंदे को चूम कर अपना शीश चढ़ाया।

आज़ादी संग पड़ी भाँवरें बंधन लगती है।
ये हमको वतन की धूल चन्दन लगती है।।

महिलाएं दहलीज लांघती नहीं मनाती घर मातम।
बैरी के सम्मुख मिलकर के गा उट्ठी वन्दे मातरम।

शंखनाद का स्वर आज़ादी क्रन्दन लगती है।
ये हमको वतन की धूल चन्दन लगती है।।

तरुणाई सूली पर चढ़ के देख रही उत्थान–पतन,
हुंकार बगावत कर बैठी हिल गया ब्रिटिश का सिंहासन,

यहाँ एकता की खुशबू उपवन लगती है।
ये हमको वतन की धूल चन्दन लगती है।

♦♦ कविताएँ ♦♦

मेरा देश

—मनीषा जोशी मनी

वतन मेरा है मैं क्यों न करूं इसको नमन झुककर
संभाला है मुझे इसने हमेशा बाँह में भरकर..
मुझे देता है संबल ये तिरंगा तीन रंगों से
मिले कठिनाइयों के हल सदा इसकी उमंगों से
नहीं ये सिर्फ एक झंड़ा ये वीरों की कहानी है
शहीदों ने बहाया जो लहू उसकी निशानी है
इसी की शक्ति से ही तो रहा दुश्मन सदा डरकर
संभाला है मुझे इसने हमेशा बांह में भरकर .
बसे हैं इसके कण—कण में प्रभु ये इतनी पावन है
धरा अपनी जो है ये देवताओं का दिया धन है
बहुत सीधे सरल सुंदर समर्पित से यहां जन है
सजे हैं राम हर आंगन जहां ऐसे यहां मन है
सहारा सबको देते हैं सदा ये प्रेम से बढ़कर
संभाला है मुझे इसने हमेशा बाँह में भर कर .
छलकती हैं यहाँ नदियाँ ;खुशी के गीत गाती है
चमकती है किरण उनमें सभी को वो लुभाती है
नहीं ये जानती अपना पराया न बड़ा छोटा
बुझाती प्यास ये सबकी, है इनका जल बहुत मीठा ..
करे ये प्रेम से स्वागत सदा बाहों को फैलाकर..
संभाला है मुझे इसने हमेशा बाँह में भर कर ...

हिंदी का हक़

—अ कीर्ति वर्द्धन

कब तलक भीख माँगे, हक़ मिले,
छीन कर हासिल करो, हक़ मिले।
पहले बदल खुद को, हिंदी में लिखो,
बात में व्यवहार में हिंदी, हक़ मिले।

पढ़ रहे बच्चे अंग्रेज़ी स्कूल में जिनके,
दोहरे मापदंड देखिए जीवन में उनके,
बात करते शान से अंग्रेज़ी में घर बाहर,
मातृभाषा का नहीं सम्मान घर में इनके।

मोदी ने विश्व पटल हिन्दी को सम्मान दिलाया,
संयुक्त राष्ट्र तक हिन्दी का परचम फहराया।
हिन्दी बोलो हिन्दी जीयो, हिन्दी में बात करो,
हिन्दी ही है हिन्द की भाषा, संकल्प दोहराया।

नेहरू को संविधान ने कब चाचा बोला,
गाँधी को राष्ट्र पिता संविधान ने बोला?
विश्व जानता भारत की भाषा हिन्दी है,
अंग्रेज़ी से मोह, हिन्दी को टा टा बोला?

♦♦ लघुकथा ♦♦

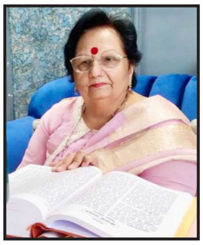

समय रहते चेत जाइए

कंचन सागर
पानीपत

आज रमन बहुत उदास था। वह अभी–अभी अपने पिता का अंतिम संस्कार कर के घर आया था। उस की आंखों से अविरल धारा बहती ही जा रही थी। उस के दोस्त उसके कंधे पर हाथ रखकर सांत्वना दे रहे थे, पर वह जानता था कि ये आंसू दरअसल उसके मन में चल रहे प्रायश्चित के आंसू भी हैं।

उसे रह–रहकर अपने आप पर क्रोध और अफ़सोस हो रहा था कि उसने अपने माता–पिता का कहना क्यों नहीं माना? क्यों उसने वह सब किया जिनसे माता–पिता हमेशा दूर रहने के लिए कहते थे?

बेचैन मन लिए वह जैसे–तैसे थके कदमों से घर के लॉन में टहलने लगा,पर अब उसे कोई कुछ बोलने वाला नहीं था। कोई उसे प्यार और निःस्वार्थ भाव से समझाने वाला नहीं था। वह एकांत में जाकर फिर फूट–फूटकर रोने लगा। उसे लग रहा था कि हो न हो, उसका विजातीय विवाह ही पिता की मृत्यु का कारण बना है।

अभी पिछले महीने ही तो उसने अपने माता–पिता को बताए बिना अपनी मर्ज़ी से मंदिर में शादी की थी।एक बार भी उसने पलटकर पिताजी का आशीर्वाद लेना उचित नहीं समझा और दूसरे शहर जा कर बस गया। बिना यह सोचे कि उसके बगैर मां–पिताजी का क्या हाल होगा? कैसा डर था यह, कैसी संवादहीनता पसरी थी पिता–पुत्र के बीच जिसने कि उसे अपने पिता का सामना भी नहीं करने दिया। काश! वह एक बार तो अपने मन की बात पिता से कहता। पिताजी तो उससे कितना प्यार करते थे... और मां,मां से ही बता देता। शायद, नहीं... नहीं... पक्के से पिताजी उसकी शादी माधुरी से ही करा देते। वह तो जात–पात मानते ही नहीं थे। क्या वह अपने इकलौते पुत्र की भी बात नहीं मानते? ज़रूर मानते। उसने ही गलती की थी

जिसकी इतनी बड़ी सज़ा उसे मिली है। अब वह माफ़ी मांगे भी तो किससे मांगे? क्या समय लौटकर आ सकता है?

तभी माधुरी की मार्मिक आवाज़ से रमन अन्दर आया।वह कह रही थी कि अपने को संभालो और मांजी की ओर देखो।"उनका रो–रोकर बुरा हाल हो रहा है। बार–बार अचेत हो रही हैं। मैंने डॉक्टर अंकल को फोन कर दिया है। वह आते ही होंगे।"

फिर कहने लगी,"अब चलो भी।कब तक मां का सामना नहीं करोगे? मां ने हमें माफ कर दिया है। मुझे 'बेटी' कहकर गले लगाया है।अब से मैं ही उनकी देखभाल करूंगी।आप ज़रा भी चिंता न करें और मां से मिल लें।"

माधुरी की बातों से रमन को थोड़ा बल मिला। खुद को संयत कर वह मां के कमरे में उनसे लिपटकर रोने लगा। तीसरे दिन रमन ने जब पिताजी की अलमारी खोली तो उसमें उसे एक खत और कुछ डाक्टर की फ़ाइलें मिलीं। फ़ाइलों में एक पर पिता जी के गुर्दे बेचने की स्लिप थी जब वह केवल दसवीं की परीक्षा देने वाला था। उसे याद आया कि तब घर के हालात ठीक नहीं थे। ओह! पिता जी ने मेरी फ़ीस भरने के लिए अपने गुर्दे को बेच दिया था। रमन को बिलकुल भनक नहीं लगने दी थी। उसे तो केवल पढ़ने के लिए ही प्रेरित करते रहते थे। अब उस ने ख़त खोला और पढना प्रारम्भ किया जिसके ऊपर लिखा था–

प्रिय बेटे रमन के लिए।

उस के हाथ काँप रहे थे।"बेटा,तुम इतने बड़े कब से हो गए कि अपने जीवन का निर्णय खुद लेने लगे। मुझे एक बार बताया भी नहीं। एक बार मुझसे या अपनी मां से कहकर तो देखते। कितनी धूमधाम से करते हम तुम्हारी शादी। बचपन से आज तक तुम्हारी खुशियां ही तो देखी हैं। जानता हूं, तुम जिद्दी स्वभाव के रहे हो लेकिन यह नहीं जानता था कि तुम मुझसे इतना डरते हो। नहीं जानता कि तुमने बिना बताए शादी मेरे डर के वजह से की या कोई और कारण था। यदि हर बेटा ऐसा करेगा तो माता–पिता का तो अपने बच्चों पर से विश्वास ही उठ जाएगा।मैंने हर सम्भव प्रयास किया है तुम्हें प्रसन्न रखनें का,पर शायद मैं ही अच्छा पिता साबित नहीं हो पाया।"

रमन ने एक आह भरी और फिर पत्र पढ़ने लगा।

"खैर, जो हुआ सो हुआ।अब भी घर लौट आओ। परन्तु बेटा,इस विश्वास से लौटना कि यह घर अब भी तुम्हारी राह देख रहा है, हम तुम्हारे हैं।"

अंत में लिखा था– काश! तुम मेरे रहते लौट आओ।मैंने किसी को नहीं बताया है कि मेरे दूसरे गुर्दे ने काम करना बन्द कर दिया है।डायलिसिस करवाते करवाते थक गया हूँ। तुम्हारे लौटने से पहले ही मैं दुनिया छोड़ दूं तो तुम मन में यह बोझ लेकर नहीं जीना कि मेरी मृत्यु तुम्हारे कारण हुई है।बहू को मेरा आशीष।अपनी मां का ख्याल रखोगे,इतना विश्वास है मुझे।"

ग्लानी के मारे उसका गला रूँध गया, प्रायश्चित के आँसू जैसे बाँध तोड़ कर बह निकले,

माँ की गोद में हिचकियाँ ले कर रोने लगा, बार बार एक ही बात दिमाग़ में आ रही थी कि

काश ! मैं समय रहते चेत जाता

काश! मैं समय रहते चेत जाता!

♦♦ कविताएँ ♦♦

डॉ. पंकज वासिनी

सर्वपल्ली राधाकृष्णन

हे माँ भारती के अमर सपूत , नाम सर्वपल्ली राधाकृष्णन !
नेहरू के प्रस्थान के पश्चात् , द्वितीय राष्ट्रपति गए आप बन।।

पर आया न अहंकार तनिक भी , इच्छा न की जग राष्ट्रपति जाने !
राष्ट्रपति से बड़ा गुरु पद माने, चाहे बस जग शिक्षक पहचाने!!

अंधकार की कारा से निकाल , प्रकाश पथ पर शिष्य को ले चले !
सदा किए प्रयत्न उज्ज्वल पावन , मर्यादा– राह सभी छात्र ढलें !!

चालीस वर्ष किये तप गुरु रूप , नित ज्ञान की दिव्य ज्योत जलाए!
शिक्षा की पुण्य पताका फहरा , देश के भारतरत्न कहलाए !

सादा जीवन उच्च विचार भरे, दिव्य चरित का फैला प्रकाश जग!
नमन राष्ट्र का तुम्हें पुण्यात्मा! तव पथ पर चले संसार का पग !!

भारत - माँ

मनीष श्रीवास्तव
अमेरिका

तुम हो तो हम हैं
तुम्हारी ही परछाई
हमारी पहचान
तुम्हारे अतीत से
हमारा आज
तुम्हारे संघर्ष से
हमारा सुख
तुम्हारी ताक़त
हमारी प्रेरणा
तुम्हारी खुशबु
हमारी साँसों में
तुम्हारे आंसू
हमारी आहों में
तुम्हारा अक्स
हमारा भगवान
तुम्हारी ही परछाई
हमारी पहचान
तुम हो तो हम हैं, माँ ....

अप्रवासी

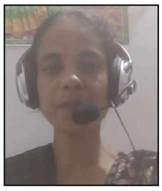

डॉ. अम्बे कुमारी
सहायक प्राचार्या, हिंदी विभाग
मगध विश्वविद्यालय बोधगया, बिहार

हमें याद आती है
अपनी माटी की सोंधी गंध
जिसकी छाया तले रहे थे
होके हम निर्द्वन्द्व,
आज उसी माटी की यादें
हमें रुलाती हैं,
स्नेहमयी दादी–नानी की
गोदें याद दिलाती हैं,
वह रिमझिम बरसता सावन
हमको याद आ जाता है,
यादों की कड़ी जुड़ती है तो
सावन–भादो लग जाता है,
इस परदेश में आता है
याद वह अपना देश सुहाना,
मंदिरों की घंटियां और
यादों का मधुकोष सुहाना,
वह माटी जहाँ बचपन बीता
जहाँ करते थे हम शोखी,
अब तो वह माटी भी रह गई
इन आँखों से अनदेखी,
याद आती अमिया की डाली
वह आम तोड़–तोड़ खाना,
और पीछे भगा–भगाकर
माली को खूब छकाना,
वह मित्रों की गलबाहीं
वह टूटी नीम की डाली,
वह सुख भला कहां पायेगी
पराये देश की प्याली,
सोने और चांदी की थाली से
भली थी वहीं की टूटी प्याली,
रेशम के गद्दों से बढ़कर था
वह पुआल का घास बिछौना,
ट्यूब लाइट में कहां वो दम है
जो था लालटेन जलाकर पढ़ना,
हम तो अप्रवासी अब
अपर वासी हो गये हैं,
अपना हीं देश हुआ बेगाना
दो टूक कलेजे हो गये हैं।
पोंछती है जो आंसू की बूंद (काव्य–संग्रह से)

♦♦ गीत ♦♦

भारत देश हमारा

डॉ. रामवृक्ष सिंह, भारत

चमक रहा जो विश्व–पटल पर सबसे उज्ज्वल एक सितारा।
और नहीं कोई मित्रो वह, है वह भारत देश हमारा।।

आर्य द्रविड़ शक हूण मंगोली नस्ल जहाँ आकर मिल जाती।
मानवता के महाकुंभ में भारत बन इतिहास रचाती।
सबके सुख के लिए जिया जो, सभी निरामय हों यह चाहा।
वसुधा सारी है कुटुम्बत, यह कहकर जो है हुंकारा।
और नहीं कोई मित्रो वह, है वह भारत देश हमारा।।

कभी न हमला किया किसी पर, भूमि किसी की नहीं दबाई।
विश्व–बंधुता की जिसने बस हर हालत में अलख जगाई।
किया आक्रमण अगर किसी ने उसे हराकर छोड़ दिया बस
ऋषि दधीचि की परंपरा में परहित अपना सब कुछ वारा।
और नहीं कोई मित्रो वह, है वह भारत देश हमारा।।

हम सहिष्णु, हम धर्मनिष्ठ, हम आत्मतत्व के अनुपम ज्ञाता।
गणित वास्तु ज्योतिष खगोल के कला–काव्य–रस के व्याख्याता।
किन्तु कुटिलता–रहित रहे हम, दस सदियों तक अंधकार में
पौन सदी पहले ही पाया आजादी का यह उजियारा।
और नहीं कोई मित्रो वह, है वह भारत देश हमारा।।

बहुत किया संघर्ष सभी ने, दुसह दुःख है सबने झेला।
तब जाकर पाई है हमने यह मधु–सुखमय अमृत वेला।
आओ इस अमृत वेला में पुनः सभी संकल्प उठाएँ।
अपना देश हो सबसे आगे, सबसे सुन्दर, सबसे प्यारा।
और नहीं कोई मित्रो वह, हो बस भारत देश हमारा।।

राह कठिन, बाधाएँ अनगिन किन्तु दूर जाना है हमको।
देखा देश ने जो भी सपना सच कर दिखलाना है हमको।
रखना है हर क़दम फूंककर, हर पौड़ी पर हमें संभलना।
किन्तु पहुँचना वहाँ जहाँ पर हो बस भारत का जयकारा।
और नहीं कोई मित्रो वह, हो बस भारत देश हमारा।।

यादों के सावन

सुरेश पांडेय
स्वीडन

तेरी यादों ने
सावन सारे
रीत गये हैं
मौसम सारे
बीत गए हैं
कोई ऐसी
साँस न आई
कोई ऐसी
आस न आई।
तेरी मुस्कानों
का हमने
रोज़ यहाँ पर
झरना देखा
फूल खिले जिस
भी बगिया मैं
उसमें तेरा
खिलना देखा।
लेकिन तेरी
धड़कन हमको
देती रहती
रोज़ सुनाई।
देखा हमने
प्रतिविंबों को
तालाबों के
जल दर्पण में
एक सुबह की
लाली में बस
तेरा आकर
घुलना देखा।
देखी हमने
किस–किस में फिर
तेरी रसभीनी
तरुणाई।
इतना सुरभित
रूप सुहाना
कैसे कोई
भूल सकेगा
इस जीवन में
तेरा आना
कैसे कोई
भूल सकेगा।
जिसमें तेरी
यादों ने भी
अपनी डोली
नहीं सजाई।

◆◆ यात्रा वृत्तांत ◆◆

कुल्लू मनाली की खूबसूरती और संस्कृति

दीप धनंजय

कुल्लू का उद्योग— हथकरघा बुनाई कुल्लू का सबसे महत्वपूर्ण उद्योग है। जिसके अंतर्गत कुल्लू में टोपी, रुमाल फुल वाले पट्टू, साधारण पट्टू जुराबे (ऊनी), और गुलबंद का निर्माण होता है। निर्माण होने के बाद इसे अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय बाजार तक बेचा जाता है।

कुल्लू की मुख्य फसलें— यह एक कृषि व्यापार केंद्र है।फल, सब्जियां, गेहूं, जौ और अन्य कई प्रकार की फसलें आसपास के क्षेत्र में उगाई जाती है। इसका अधिकांश हिस्सा दियार और चील के पेड़ों से हरा भरा हुआ है। अगर हम फलों की बात करें तो सेब यहां का प्रमुख फल है जिसका अधिकांश उत्पादन होता है।

कुल्लू के मुख्य त्यौहार— कुछ एक विशेष त्योहारों का आयोजन यहां पर स्थानीय लोग बड़े धूमधाम से मनाते हैं। उनके हाथों में यहां की संस्कृति और परंपरा दिखाई देती है। दशहरा उत्सव यहां पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होता है। दिवाली, होली, मकर सक्रांति, शिवरात्रि, पीपल जातर, सरनाउली, काहिका, निरमंड की बूढ़ी दीवाली, डूंगरी मेला, बिरशु हो या बंजार मेला सभी में यहां की सभ्यता और संस्कृति देखी जा सकती है।

पिछड़ी सोच और भेदभाव के कारण यहां पर सभी लोग मिल जुलकर नहीं रहते हैं। अस्पृश्यता और जात—पात को खत्म होने में अभी कई दशकों की जरूरत है, हालांकि यह शहर की अपेक्षा गांव में अधिक फैली हुई है।

जिला कुल्लू में कुल्लवी बोली का प्रयोग किया जाता है। यह यहां की स्थानीय बोली है घाटियों के बंटवारे के अनुसार थोड़े—बहुत बोली के शब्दों में बदलाव है। कुल्लू का समाज देवी—देवताओं के आशीर्वाद से फल—फूल रहे हैं। यहां पर ज्यादा गर्मी महसूस नहीं होती है इसलिए देश—विदेश से लोग यहां पर घूमने के लिए आते हैं। यहां के खूबसूरत प्राकृतिक दृश्यों के अलावा मनाली में हाइकिंग, पैराग्लाइडिंग, राफ्टिंग और ट्रैकिंग जैसे खेलों का भी आनंद उठा सकते हैं। यहां के जंगली फूलों और सेब के बगीचों से छनकर आती सुगंधित हवाएं दिल और दिमाग को ताजगी से भर देती है।

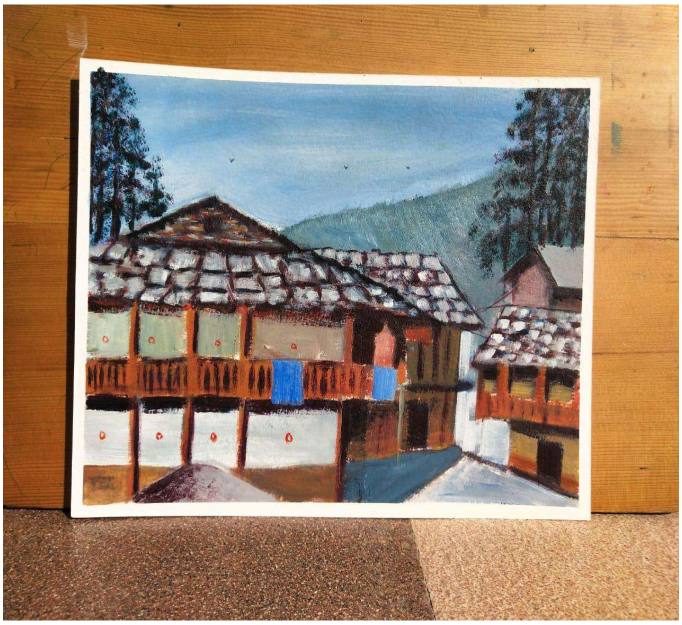

♦♦ स्वास्थ्य लेख ♦♦

जादू की छड़ी

सुनीता चाँदला
मिनीसोटा, USA

जी हाँ, एक अदभुत जादू की छड़ी—आप सोच रहे होंगे की इसका स्वास्थपत्रिका से क्या लेना देना। और सच में यदि आपके यह हाथ लग भी जाये, तो जल्दी से बताइए आप कैसे प्रयोग करेंगे, इसे?

पिछले अंक में मैंने पूर्ण स्वास्थ्य की चर्चा की, जिसमें शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक सेहत की महत्ता शामिल थी। अच्छे खानपीन के साथ एक स्वस्थ मन भी ज़रुरी है— यह जानकारी होते हुए भी हम बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। कारण कई हो सकते हैं, खाद्य उत्पादन में प्रयोग की गयीं कीटाणु नाशक रसायनों की अधिक मात्रा, या मसालों में मिलावट आदि। इसके फलस्वरूप हम चिकित्सकों के उपचारों में व्यस्त ग्रस्त हो जाते हैं। दवाईयों के भी अपने ही गुण और अवगुण हैं। यह सब एक जाल सा बन जाता है जिससे बाहर निकलना कठिन और कभी नामुमकिन।

मेरी मानिए यह जादूई छड़ी आपके पास ही है। अदृश्य होने के कारण आपको नज़र नहीं आ रही। यह ठीक उसी भावनाओं सी है जो आपके मन में है— जैसे प्यार, डर, जोश लेकिन बाहर कोई सबूत नहीं जब तक आप इससे इस्तेमाल कर के इसका प्रभाव लोगों को या खुद को न दिखाएँ।

यह जादू रूपी छड़ी हमारे मस्तिष्क में हमेशा मौजूद रहती है!

मस्तिष्क के दो हिस्से होते हैं । चेतन व अवचेतन मन— कौंशस और सबकौंशंस माइंड। (conscious and subconscious mind)

चेतन मन, तर्क से काम करता है। सवाल—जवाब, हिसाब—किताब इत्यादि। दो जमा दो चार ही कहेगा, इसे पाँच कैसे बना सकते हैं, इसमें यह क्रियाशीलता भी हो सकती है।

लेकिन अवचेतन मन वह है जो सपने देखता है। यादों को संजोय कर रखता है।

यह हमारे शरीर का बहुमूल्य हिस्सा है। बहुत ही प्यारा सहयोगी है जो बिना तर्क वितर्क किये हमारा सब काम करता रहता है एक रोबोट की तरह। ईश्वर ने हमे यह वरदान दिया है। यह वो सभी कार्य कर लेता जो इसे दिये जाएँ। ठीक उस उपजाऊ मिट्टी वाली ज़मीन की भाँति जिसमे जो बो दोगे बस फलित वैसा होगा ही। यह खुद निर्णय लेने की क्षमता नहीं रखता— क्या अच्छा क्या बुरा है, बस आज्ञा का पालन करता है।

विज्ञान ने भी इस तथ्य को स्वीकारा है। आज के विज्ञान का अनुमान है कि हमारे मस्तिष्क की 95 प्रतिशत गतिविधि अचेतन है, जिसका अर्थ है कि हम जो निर्णय लेते हैं, जो कार्य हम करते हैं, हमारी भावनाएं और व्यवहार, मस्तिष्क की 95 प्रतिशत गतिविधि पर निर्भर करते हैं जो सचेत जागरूकता से परे है।

क्रिया और प्रतिक्रिया का नियम शाश्वत है। आपका विचार क्रिया है और उस विचार पर आपका अवचेतन मन स्वतः ही प्रतिक्रिया करता है। अपने वाकविचार पर नज़र रखें।

विश्वास या इच्छा शक्ति से उपचार के अनेक प्रमाण हैं जो किताबों में लिखे जा चुके हैं। आँखों की रोशनी या कैन्सर जैसे रोगों से निजात भी सम्भव है।

प्लेसिबो इफ़ेक्ट भी इसका प्रमाण है जो कई डॉक्टर भी प्रयोग करतें हैं।

सोने से पहले आप अपने अवचेतन मन को कोई विशिष्ट आग्रह करें या कोई समस्या का समाधान पूछें और इसकी चमत्कारीशक्ति देखें !

याद रखें आप अपने अवचेतन मन पर जो भी छाप छोड़ते हैं वह अनुभवों, परिस्थितियों और घटनाओं के रूप में व्यक्त होतीं हैं। इसलिए चेतन मन में मौजूद विचारों के बारे में सतर्क रहें ।सारी कुंठा अधूरी इच्छाओं के कारण पैदा होतीं हैं। अगर आप नकारात्मकता के कारण कठिनाइयों, विलम्ब या बाधाओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे तो आपका अवचेतनमन उसी स्वरूप प्रतिक्रिया करेगा अतः आप अपनी ही भलाई को रोक देंगें।

ध्यान दें :

१. अपने चेतन मन से हमेशा सर्वश्रेष्ठ की उम्मीद करतें रहें, आपका अवचेतन मन निष्ठा से आपके आदतन विचारों को साकार कर देगा ।
2. अपनी समस्या के सुखद अंत या समाधान की कल्पना करें!
3. उपलब्धि के रोमांच को भी महसूस करें , आप जो भी कल्पना करेंगे या महसूस करेंगे , आपका अवचेतन मन (जादू की छड़ी) उसे स्वीकार कर परिणाम में बदल देगा।

♦♦ लेख ♦♦

नीदरलैंड और भारतीय संस्कृति

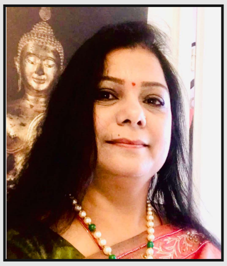

डॉ. ऋतु शर्मा (नंनन पांडे)
नीदरलैंड

नीदरलैंड देश में भारतीय संस्कृति न हिन्दी भाषा की तेज़ी से पनपती बेल को जानने के लिए हमें थोड़ी सी पहचान नीदरलैंड या हॉलैंड से भी करनी होगी। नीदरलैंड यूरोप महाद्वीप का एक प्रमुख व धनी देशों में से एक है। नीदरलैंड दो शब्दों के मेल से बना है। नीदर=नीचा+लैंड=सतह, ज़मीन अथार्थ वह देश जो समुद्र तल से एक मीटर नीचे स्थापित हैं। अंग्रेज़ी भाषा में इसका ही अनुवाद कर इसे हॉलैंड का नाम दे दिया गया है। नीदरलैंड में डच भाषा बोली जाती है। यहाँ राजा–रानी की अनुमति से शासन चलता है किन्तु महत्वपूर्ण फ़ैसले लेने का अधिकार प्रधानमंत्री व संसद के हाथों में ही है।

नीदरलैंड में दो तरह के भारतीय प्रवासी प्रवास करते हैं। पहले वह जो डच सरकार और ब्रिटिश सरकार के आपसी समझौते से पानी के जहाज़ द्वारा "श्री राम" के गाँव में काम करने के नाम पर दक्षिण अमेरिका के देश सूरीनाम ले जाये गये। 1975 में डच सरकार से स्वतंत्र होने के बाद उज्ज्वल भविष्य की कामना ले नीदरलैंड प्रवास कर गये। दूसरे वह प्रवासी भारतीय हैं जो रोज़गार उच्च शिक्षा या अन्य कारणों से हवाई जहाज़ में बैठ कर नीदरलैंड आएँ। जिन्हें यहाँ अपने को स्थापित करने के लिए ज़्यादा मेहनत करनी पड़ी। अपने प्रथम प्रवास के समय यह प्रवासी अपने साथ भारत से रामायण, गीता, महाभारत, सूरदास, कबीर की पुस्तकों के साथ लोक परंपराएँ, बोली, लोकगीत, कुछ वाद्ययंत्र अपने साथ ले गए थे। इन्हीं संस्कारों व संस्कृति ने अजनबी देश की भाषा, व मुश्किल व असहाय परिस्थितियों में इन्हें इनकी मूल जड़ो से जोड़े रखने में सहायता की।

सूरीनाम से आने वाले अधिकांश भारतीयों ने देनहॉग, ऐम्सटर्डम उत्रेखत और रॉतरदाम को अपना आवास का स्थान बनाया। क्योंकि नीदरलैंड डच भाषा संस्कृति का देश था इसलिए भारतीयों को यहाँ अपनी भाषा व संस्कृति को स्थापित करने में फिर से एक बार बहुत मेहनत करनी पड़ी। इन सूरीनामी प्रवासी भारतीयों ने स्वयं का एक सांस्कृतिक संगठन बनाया और अपनी मातृभाषा हिन्दी,भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए यहाँ सनातन व आर्य समाज मंदिरों की स्थापना की। आज नीदरलैंड में लगभग पचास सनातन व आर्य समाज मंदिर हैं। पाँच गुरुद्वारे हैं। जितने भी मंदिर या धार्मिक संस्थाएँ हैं वह सब सूरीनामी भारतीयों द्वारा स्थापित है। यह समुदाय भारत के सारे रीति रिवाज व परंपराओं का पालन करते है। भारतीय त्यौहार भी यहाँ बहुत धूमधाम से मनाएँ जाते हैं।

"नीदरलैंड हिन्दी परिषद" नाम की सूरीनाम भारतीयों द्वारा एक ऐसी संस्था है जो यहाँ पैंतालीस वर्षो से हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में संलग्न है। इसी संस्था का प्रयास है कि यहाँ पाँच सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में हिन्दी भाषा व संस्कृत भाषा पढ़ाई जाती है। मंदिरों में हर सप्ताह हिन्दी कक्षाएँ, भजन, संगीत की कक्षाएँ होती है। आज नीदरलैंड में भारतीयों ने अपनी क्षेत्र चाहे वह राजनीति, अर्थिक, सामाजिक या कंप्यूटर क्षेत्र हो सभी में अपनी पहचान बनाई है। भारत सरकार द्वारा ओ सी आई कार्ड की सुविधा ने भारत और नीदरलैंड को और पास ला दिया है। सच कहें तो हम प्रवासी भारतीय अपने भारत की संस्कृति, भाषा व साहित्य की विजय पताका फहरा रहे हैं।

◆◆ लेख ◆◆

भारतीय संस्कृति की अस्मिता की पहचान है हिन्दी

आकांक्षा यादव
वाराणसी

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त करते हैं और इसके लिये हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा मनुष्य के व्यवहार, विचार एवं जीवन जीने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। भाषा आभ्यन्तर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आभ्यन्तर के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है। विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से प्रमुख 'हिन्दी' भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को एकता के सूत्र में पिरोती है। हिंदी हमारी आत्मा में बसती है, हिंदी हमारे संस्कारों में बसती है, हिंदी हमारी संस्कृति में बसती है और हिंदी ही हमारी पहचान की बुनियाद है।

हिन्दी जिसके मानकीकृत रूप को मानक हिन्दी कहा जाता है, विश्व की एक प्रमुख भाषा है और भारत की एक राजभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में सह–आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। यह हिन्दुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबीदृफ़ारसी शब्द कम हैं। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया है। एथनोलॉग के अनुसार हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, वहीं विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है।

हिन्दी भारतीय संस्कृति की अस्मिता की पहचान है। हिन्दी शब्द का संबंध संस्कृत शब्द सिंधु से माना जाता है। 'सिंधु' सिंध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस–पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिंधु शब्द ईरानी में जाकर 'हिंदू', हिंदी और फिर 'हिंद' हो गया। वस्तुतः ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता में 'स' ध्वनि नहीं बोली जाती थी। 'स' को 'ह' रूप में बोला जाता था। अफ़ग़ानिस्तान के बाद सिंधु नदी के इस पार हिंदुस्तान के पूरे इलाके को प्राचीन फ़ारसी साहित्य में भी 'हिंद', 'हिंदुश' के नामों से पुकारा गया है तथा यहाँ की किसी भी वस्तु, भाषा, विचार को विशेषण के रूप में 'हिन्दीक' कहा गया है जिसका मतलब है 'हिन्द का'। यही 'हिन्दीक' शब्द अरबी से होता हुआ ग्रीक में 'इन्दिके', 'इन्दिका', लैटिन में 'इन्दिया' तथा अंग्रेज़ी में 'इण्डिया' बन गया। अरबी एवं फ़ारसी साहित्य में भारत (हिंद) में बोली जाने वाली भाषाओं के लिए 'ज़बान–ए–हिन्दी', पद का उपयोग हुआ है। भारत आने के बाद अरबी–फारसी बोलने वालों ने 'ज़बान–ए–हिंदी', 'हिंदी ज़बान' अथवा 'हिंदी' का प्रयोग दिल्ली–आगरा के चारों ओर बोली जाने वाली भाषा के अर्थ में किया। भारत के गैर–मुस्लिम लोग तो इस क्षेत्र में बोले जाने वाले भाषा–रूप को 'भाखा' नाम से पुकारते थे, 'हिंदी' नाम से नहीं। 'देशी', 'भाखा' (भाषा), 'देशना वचन' (विद्यापति), 'हिन्दवी', 'दक्खिनी', 'रेखता', 'आर्यभाषा' (दयानन्द सरस्वती), 'हिन्दुस्तानी', 'खड़ी बोली', 'भारती' आदि हिन्दी के अन्य नाम हैं जो विभिन्न ऐतिहासिक कालखण्डों में एवं विभिन्न सन्दर्भों में प्रयुक्त हुए हैं। हिन्दी, यूरोपीय भाषा–परिवार के अन्दर आती है। ये हिन्द ईरानी शाखा की हिन्द आर्य उपशाखा के अन्तर्गत वर्गीकृत है।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी भाषा हुई। कबीर की निर्गुण भक्ति एवम् भक्ति काल के सूफ़ी–संतों ने हिन्दी को काफी समृद्ध किया। कालांतर में मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत और गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की अवधी में रचना कर हिन्दी को और भी जनप्रिय बनाया। अमीर खुसरो ने इसे 'हिंदवी' गाया तो हैदराबाद के मुस्लिम शासक कुली कुतुबशाह ने इसे 'जबाने हिन्दी' बताया। स्वतंत्रता तक हिन्दी ने कई पड़ावों को पार किया व दिनों–ब–दिन और भी समृद्ध होती गई। आज संसार भर में लगभग 5000 भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। उनमें से लगभग 1652 भाषाएँ व बोलियाँ भारत में सूचीबद्ध की गई हैं जिनमें 63 भाषाएँ अभारतीय हैं। चूँकि इन 1652 भाषाओं को बोलने वाले समान अनुपात में नहीं हैं अतः संविधान की आठवीं अनुसूची में 18 भाषाओं को शामिल किया गया जिन्हें देश की कुल जनसंख्या के 91 प्रतिशत लोग प्रयोग करते हैं। इनमें भी सर्वाधिक 46 प्रतिशत लोग हिन्दी का प्रयोग करते हैं अतः हिन्दी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में राजभाषा को रूप में वरीयता दी गयी। हिन्दी और उर्दू दोनों को मिलाकर हिन्दुस्तानी भाषा कहा जाता है। हिन्दुस्तानी मानकीकृत हिन्दी और मानकीकृत उर्दू के बोलचाल की भाषा है। इसमें शुद्ध संस्कृत और शुद्ध फ़ारसी–अरबी दोनों के शब्द कम होते हैं और तद्भव शब्द अधिक। जिस हिन्दी में अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी के शब्द लगभग पूरी तरह से हटा कर तत्सम शब्दों को ही प्रयोग में लाया जाता है, उसे "शुद्ध हिन्दी" या "मानकीकृत हिन्दी" कहते हैं।

शेष अगले अंक में...

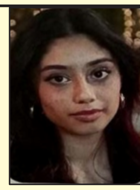

मायरा सोनी
आयु – 16 वर्ष
वेस्टमिनिस्टर

इंद्रा बसनेट
आयु – 16 वर्ष
कक्षा– 9
स्कूल– न्यू म्यांमार एजुकेशनल स्कूल, म्यांमार

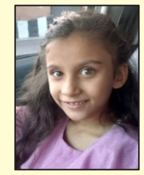

सुरलीन कौर
कक्षा–2
माता गुजरी पब्लिक स्कूल, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली

सुरवीन कौर
कक्षा –2
माता गुजरी पब्लिक स्कूल
ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली

जागृति श्रीवास्तव
आयु – 16 वर्ष
तोहुको विश्वविद्यालय, जापान

अनायशा रूस्तगी
कक्षा– 3
स्कूल– कुलाची हंसराज माडल स्कूल
अशोक विहार, दिल्ली

जूही शर्मा
कक्षा– 12
आयु–16 वर्ष
स्कूल–अलिंग्वा पब्लिक स्कूल, बुलंद शहर

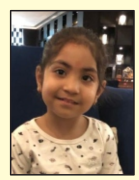

आशिया इस्सर
कक्षा –4
स्कूल– होली चाइल्ड पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली

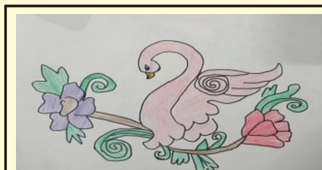

जैस्मिन कौर
कक्षा– 8
स्कूल–न्यू कॉन्वेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल
नई दिल्ली

अनन्या राव
कक्षा – 2
स्कूल– एल पी एस ग्लोबल स्कूल
नोएडा

नीना चाँदला
आयु 8 वर्ष
अमेरिका

प्रिशा सेंदो
कक्षा–3
जापान दोहा स्कूल
क़तार

शार्विल सेंदो
आयु 3 वर्ष
एलडर ट्री नर्सरी स्कूल, क़तार

कवर पृष्ठ
धानी गुप्ता
कक्षा–9
स्कूल– यूनाइटिड वर्ल्ड कॉलेज ऑफ साऊथ इस्ट एशिया (UWCSEA)
इस अंक की विजेता

साहित्य संबंधी

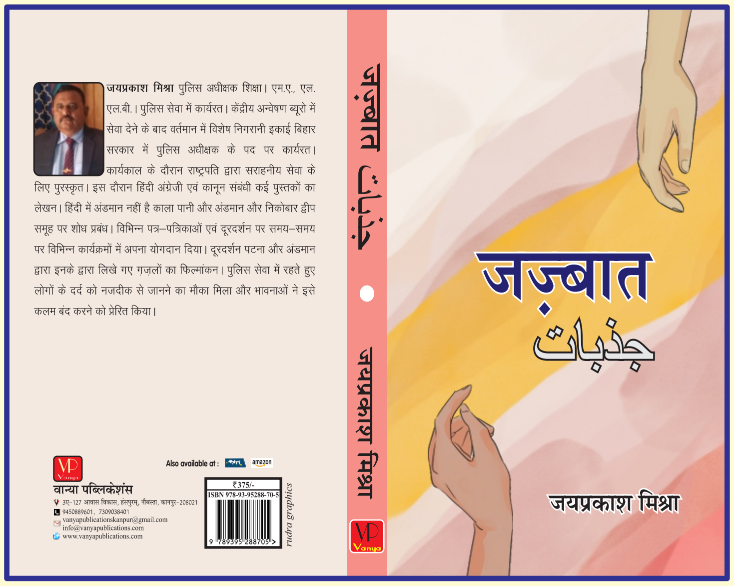
जज़्बात
جذبات
जयप्रकाश मिश्रा
वान्या पब्लिकेशंस

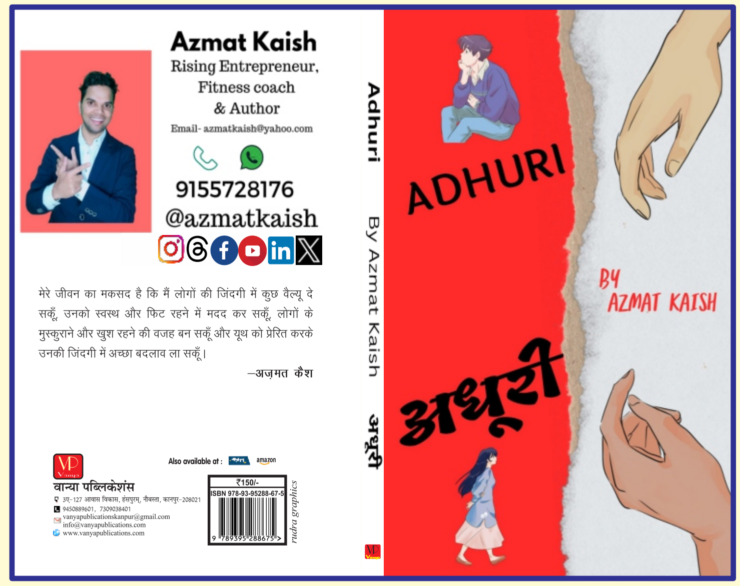
Azmat Kaish
Rising Entrepreneur,
Fitness coach
& Author
9155728176
@azmatkaish
ADHURI
BY AZMAT KAISH
अधूरी
वान्या पब्लिकेशंस

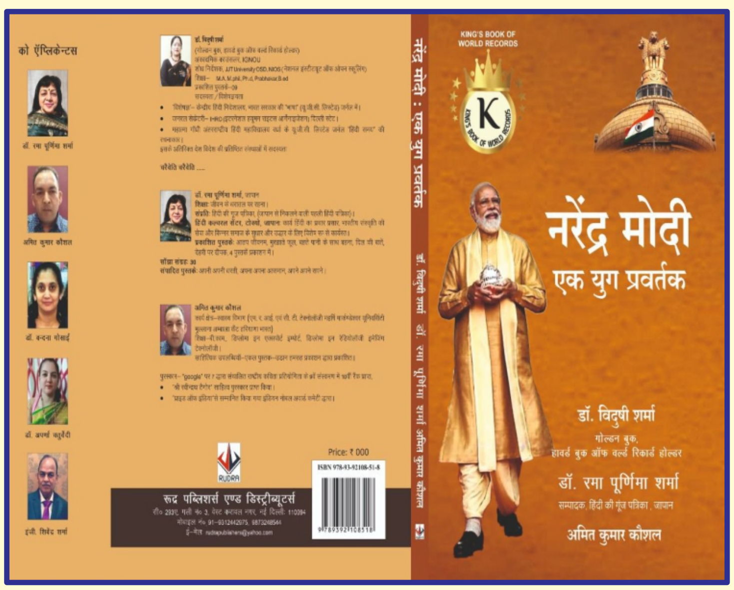
नरेंद्र मोदी
एक युग प्रवर्तक
डॉ. विदुषी शर्मा
डॉ. रमा पूर्णिमा शर्मा
अमित कुमार कौशल
रुद्र पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

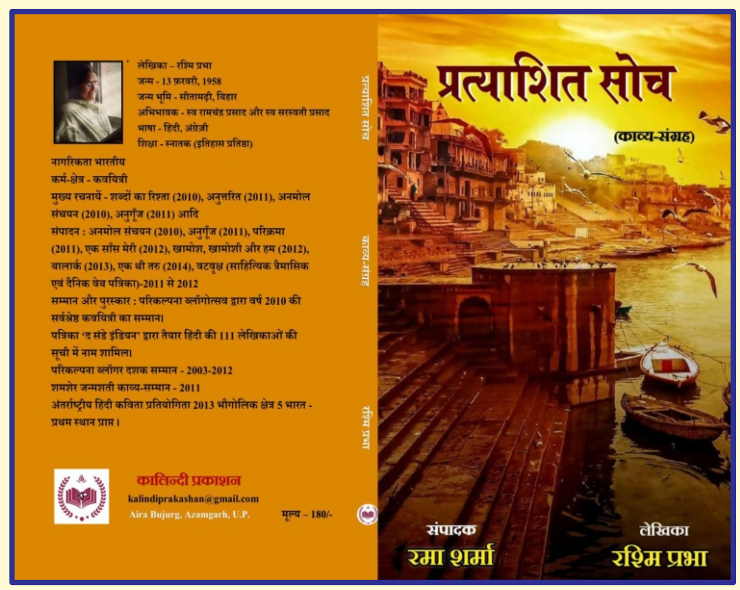
प्रत्याशित सोच
(काव्य-संग्रह)
संपादक
रमा शर्मा
लेखिका
रश्मि प्रभा
कालिन्दी प्रकाशन

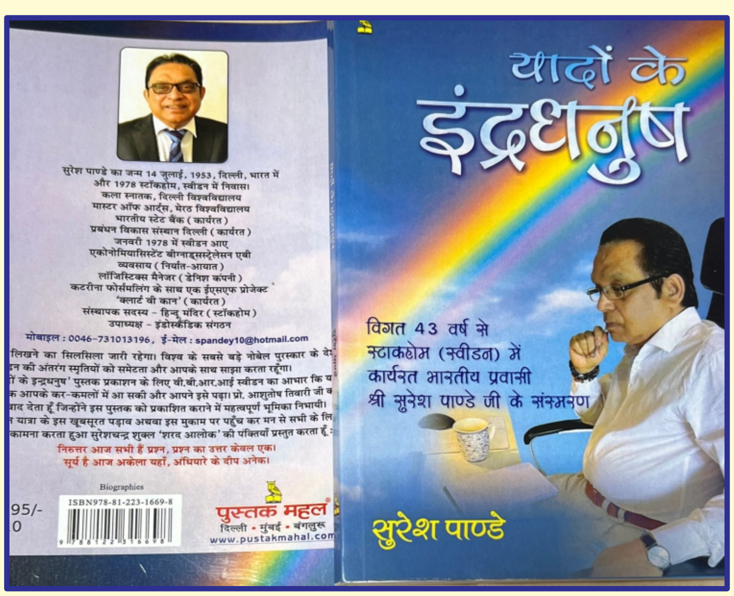
यादों के
इंद्रधनुष
विगत 43 वर्ष से
स्टाकहोम (स्वीडन) में
कार्यरत भारतीय प्रवासी
श्री सुरेश पाण्डे जी के संस्मरण
सुरेश पाण्डे
पुस्तक महल

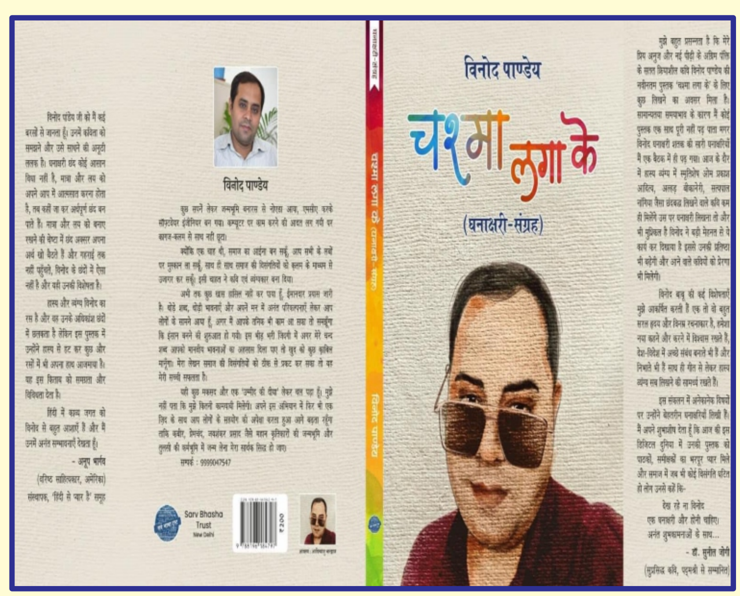
विनोद पाण्डेय
चश्मा लगा के
(घनाक्षरी-संग्रह)